YouTube kanwhizztimes
@kanwhizztimes
@kanwhizztimes
www.kanwhizztimes.com

कैनविज टाइम्स
सिर्फ सच

❐ वर्ष-14 ❐ अंक-123 ❐ बुधवार, 04 जून 2025 ❐ नगर संस्करण ❐ लखनऊ से प्रकाशित एवं दिल्ली, पंजाब और उत्तराखंड में प्रसारित ❐ मूल्य- ₹ 3.00 ❐ पृष्ठ-12

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में भारत की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति का केंद्र एक 'समग्र स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली' विकसित करना है, जो न केवल स्वास्थ्य देखभाल में उपचारात्मक भाग पर ध्यान केंद्रित करती है, उपचार, पुनर्वास, वृद्धावस्था और संवर्धनात्मक स्वास्थ्य देखभाल पर भी जोर देती है। **जगत प्रकाश नड्डा**

मोदी छह जून को कटरा-श्रीनगर रेल लिंक का उद्घाटन करेंगे 11

10 अधिकारी निलंबित विजिलेंस करेगी जांच 12

भारत को 48 घंटे में घुटनों पर लाने की हसरत पाले बैठा था पाक, 8 घंटे में हुआ चित : सीडीएस

एजेंसी

नई दिल्ली। चीफ ऑफ डिफेंस स्टाफ (सीडीएस) जनरल अनिल चौहान ने पुणे विश्वविद्यालय में 'भविष्य के युद्ध और युद्धकला' विषय पर अपने संबोधन में ऑपरेशन सिंदूर पर महत्वपूर्ण बातें बताईं। उन्होंने कहा कि भारत ने 48 घंटे की लड़ाई 8 घंटे में ही पूरी कर ली, और इसी दौरान पाकिस्तान ने बातचीत का प्रस्ताव पेश किया। उन्होंने बताया कि यह ऑपरेशन दर्शाता है कि युद्ध केवल स्ट्राइक नहीं, बल्कि राजनीति का भी हिस्सा होता है।

सीडीएस ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर में जहां युद्ध और राजनीति एक साथ चल रहे थे, वहीं हमें बेहतर काउंटर ड्रोन सिस्टम होने का फायदा मिला। सीडीएस ने कहा कि 10 मई की रात 1 बजे पाकिस्तान युद्ध हार गया था। 48 घंटो की लड़ाई हमने 8 घंटे में खतम कर ली, फिर उन्होंने फोन उठाया और कहा कि वे बात करना चाहते हैं।

सीडीएस अनिल चौहान ने कहा, हम प्रोफ़ेशनल फोर्सेस के रूप में नुकसान और झटकों से प्रभावित नहीं होते। हमें अपनी गलतियों को समझकर सुधारना चाहिए और पीछे नहीं मुड़ना चाहिए।'' उन्होंने स्पष्ट किया कि युद्ध में नुकसान से ज्यादा नतीजा मायने रखता है। उन्होंने बताया कि ऑपरेशन सिंदूर एक ऐसी युद्ध नीति का उदाहरण था जिसमें काइनेटिक और नॉन-काइनेटिक दोनों तरह के युद्ध कौशल इस्तेमाल हुए। सीडीएस चौहान ने साथ ही पाकिस्तान को आतंकवाद पर लगाम लगाने के लिए स्पष्ट चेतावनी दी और कहा, ''पाकिस्तान आतंकवाद पर लगाम लगाए।'' इसके साथ ही, सीडीएस ने जोर देकर कहा कि भारत को किसी भी तरह की धमकी बिलकुल बर्दाश्त नहीं है और भारत की ड्रोन क्षमता पाकिस्तान की तुलना में कहीं अधिक बेहतर है। सीडीएस ने कहा कि आज का युद्ध सिर्फ पारंपरिक बल प्रयोग तक ही ● शेष पेज 11 पर

आरसीबी पहली बार बनी आईपीएल चैम्पियन

एजेंसी

अहमदाबाद। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 'ई साला कप नामदे' का सपना सच कर दिखाया है, जिसका मतलब है 'इस साल कप हमारा है'। आरसीबी को 18 साल बाद खिताबी खुशी मिली है। रजत पाटीदार की कप्तानी वाली आईपीएल 2025 की चैंपियन बन गई है। बेंगलुरु ने मंगलवार को 18वें सीजन के फाइनल में पंजाब किंग्स को 6 रनों से मात दी। आरसीबी ने 191 का टारगेट रखा, जिसके जवाब में पीबीकेएस सात विकेट गंवाकर 184 रन ही बना सकी। आरसीबी जब पहली आईपीएल ट्रॉफी जीतने की ओर बढ़ रही थी तो स्टार बल्लेबाज विराट कोहली के खुशी के आंसू छलक आए। वह 2008 में आईपीएल की शुरुआत से आरसीबी का हिस्सा हैं।

18 साल बाद आरसीबी को मिली खिताबी खुशी

191 रन चेज कर रहा पंजाब 6 रन से हारा

लक्ष्य का पीछा करते हुए पंजाब ने अच्छा आगाज किया। प्रियांश आर्य (19 गेंदों में 24) और प्रभसिमरन सिंह (22 गेंदों में 26) ने पहले विकेट के लिए 43 रन जोड़े। इसके बाद, पीबीकेएस ने नियमित अंतराल पर विकेट खोए। कप्तान श्रेयस अय्यर (1) का बल्ला नहीं चला। जोश इंग्लिस (23 गेंदों में 39) ने अच्छी पारी खेली लेकिन दूसरे छोर से कुछ खास साथ नहीं मिला। अजमतुल्लाह उमरजई (1) मार्कस स्टोइनिस (6), नेहल वढेरा (15) सस्ते में आउट हुए। शशांक सिंह ने अंत तक डटकर मुकाबलि किया। उन्होंने 30 गेंदों में नाबाद 61 रन बनाए, जिसमें तीन चौके और 6 सिक्स शामिल हैं। पंजाब को आखिरी ओवर में जीत के लिए 30 रनों की जरूरत थी। आरसीबी के स्टार पेसर ने 20वें ओवर में 22 रन दिए। हेजलुवड, यश दयाल और रोमारियो शेफर्ड ने फाइनल में एक-एक विकेट लिया। भुवनेश्वर कुमार और क्रुणाल पांड्या ने दो-दो शिकार किए।

इससे पहले, आरसीबी ने निर्धारित 20 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 190 रन जुटाए। आरसीबी के लिए सबसे ज्यादा रन विराट कोहली ने बनाए। उन्होंने बतौर ओपनर आने बाद 35 गेंदों में 43 रनों की पारी खेली, जिसमें तीन चौके शामिल हैं। टॉस गंवाकर बैटिंग करने उतरी आरसीबी की शुरुआत अच्छी नहीं रही। फिल साल्ट (9 गेंदों में 16) सस्ते में अपना विकेट गंवा बैठे। इसके बाद, विराट कोहली ने मयंक अग्रवाल (18 गेंदों में 24) के साथ दूसरे विकेट के लिए 38 रनों की साझेदारी की। कप्तान रजत पाटीदार (16 गेंदों में 26) बड़ी पारी नहीं खेल सके। उन्होंने कोहली के संग 40 रनों की पार्टनरशिप की। कोहली को अजमतुल्लाह उमरजई ने 15वें ओवर में कॉट एंड बोल्ड किया। उन्होंने लियाम लिविंगस्टोन (15 गेंदों में 25, दो छक्के) के साथ चौथे विकेट के लिए 35 रन जोड़े।

संक्षेप

प्रो.प्रतिभा गोयल ने कुलपति पद से दिया इस्तीफा, राज्यपाल ने स्वीकारा

लखनऊ। अयोध्या के डॉ. राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. प्रतिभा गोयल ने बिना कारण बताएं इस्तीफा दे दिया। जिसे उत्तर प्रदेश की राज्यपाल आनंदीबेन पटेल ने सहज स्वीकार भी कर लिया। इसके बाद राज्यपाल ने आचार्य नरेंद्रदेव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. विजेंद्र सिंह को डॉ. राम मनोहर लोहिया विश्वविद्यालय के कुलपति का चार्ज दे दिया है। डॉ.विजेन्द्र सिंह को छह महीने या कुलपति पद के लिए अग्रिम आदेश आने तक के लिए कुलपति का कार्यभार सौंपा गया है।

सब इंस्पेक्टर पर भर्ती के लिए उम्र में तीन साल की छूट

लखनऊ। उत्तर प्रदेश लोक सेवा नियमावली के तहत 4543 सब इंस्पेक्टर व इसके समकक्ष पदों पर भर्ती के लिए अभ्यर्थियों को अधिकतम आयु सीमा में तीन साल की छूट दी गई है। इसके लिए विशेष सचिव राकेश कुमार मालपाणी की ओर से आदेश जारी कर दिया गया है। इस आदेश का पत्र डीजीपी को भी भेजा जा चुका है। विशेष सचिव के पत्र के मुताबिक चयन वर्ष 2020-2021 से चयन वर्ष 2024-2025 तक उपनिरीक्षक नागरिक पुलिस व इसके समकक्ष पदों पर 4543 रिक्तियों के सापेक्ष सीधी भर्ती में सभी वर्गों के लिए यह छूट दी गई है। पत्र में यह भी लिखा गया है कि ऐसा सिर्फ इन रिक्तियों के लिए किया जा रहा है। यह सुविधा हर बार नहीं मिलेगी। सब इंस्पेक्टर भर्ती के लिए न्यूनतम उम्र 21 वर्ष और अधिकतम 28 वर्ष होनी चाहिए। इसमें ही तीन साल की छूट दी जाएगी। वर्ष 2023 में 60244 पदों पर सिपाही भर्ती के लिए हुई परीक्षा में भी तीन साल उम्र में छूट दी गई थी। इसी तर्ज पर उप निरीक्षक भर्ती पदों में यह छूट देने का निर्णय लिया गया है। विभागीय सूत्रों के मुताबिक सब इंस्पेक्टर के 4543 पदों पर भर्ती के लिए विज्ञापन जल्दी ही प्रकाशित होगा।

कृषि परिवर्तन के लिए उत्कृष्टता केंद्र आरंभ

नयी दिल्ली। अंतर्राष्ट्रीय अर्द्ध शुष्क उष्णकटिबंधीय फसल अनुसंधान संस्थान ने विकासशील देशों में कृषि अनुसंधान और सूचना के आपसी सहयोग के लिए मंगलवार को राष्ट्रीय राजधानी में उत्कृष्टता केंद्र आरंभ किया। संस्थान के यहां आयोजित सम्मेलन 'दक्षिण विश्व और त्रिकोणीय सहयोग: उभरते पहलू' में कृषि में उत्कृष्टता केंद्र का उद्घाटन किया गया। इसका उद्देश्य दक्षिण विश्व में कृषि नवाचार और सहयोग को है। गति देना संस्थान के महानिदेशक डॉ. हिमांशु पाठक ने कहा कि दक्षिण विश्व के पास नवाचार, स्थानीय विशेषज्ञता और सिद्ध समाधानों का समृद्ध आधार है, लेकिन उनकी पूरी क्षमता का प्रयोग करने के लिए अधिक समन्वित कार्रवाई, निवेश और साझेदारी की आवश्यकता है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक डॉ. मांगी लाल जाट भी मौजूद रहे।

पूर्व अग्निवीरों को 20% आरक्षण

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

- ❐ मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में आयोजित कैबिनेट बैठक में 10 प्रस्तावों को मिली स्वीकृति
- ❐ अग्निवीरों का पहला बैच 2026 में रिटायर होगा, मिलेगा क्षैतिज आरक्षण
- ❐ चार कैटेगरी की भर्ती में होगा लाभ पुलिस आरक्षी, पीएसी, घुड़सवार आरक्षी एवं फायरमैन की सीधी भर्ती में लागू होगा आरक्षण
- ❐ अग्निवीरों को 20 फीसदी आरक्षण की व्यवस्था देने वाला देश का पहला राज्य बना उत्तर प्रदेश, पर्यटन विभाग की 'बेड एंड ब्रेकफास्ट व होमस्टे नीति-2025' का अनुमोदन

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की अध्यक्षता में मंगलवार को हुई कैबिनेट बैठक में पूर्व अग्निवीरों को पुलिस आरक्षी, पीएसी, आरक्षी घुड़सवार एवं फायरमैन की सीधी भर्ती में आरक्षण देने की मंजूरी दे दी है। इसके अलावा उत्तर प्रदेश बेड एंड ब्रेकफास्ट (बीएंडबी) एवं होम स्टे नीति-2025 को भी मंजूरी दे दी गई।

लोकभवन के सभागार में आयोजित कैबिनेट बैठक में कुल 11 प्रस्ताव अनुमोदन के लिए रखे गए, जिसमें 10 प्रस्तावों को स्वीकृति दी है।योगी कैबिनेट ने उत्तर प्रदेश पुलिस आरक्षी, पीएसी, आरक्षी घुड़सवार एवं फायरमैन की सीधी भर्ती में पूर्व अग्रिवीरों को (4 साल की सेवा के पश्चात) 20 प्रतिशत पदों को आरक्षित रखते हुए क्षैतिज आरक्षण दिए जाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी है। भूतपूर्व सैनिक की तरह अग्निवीर के रूप में की गयी सेवा अवधि को घटाते हुए अधिकतम आयु सीमा में 03 वर्ष की छूट प्रदान की जायेगी। वित्त मंत्री ने बताया कि भारत सरकार द्वारा अग्निपथ योजना शुरू की गई है, जो देशभक्त और प्रेरित युवाओं को सशस्त्र बलों (भारतीय सेना, भारतीय नौसेना और भारतीय वायु सेना) में सेवा करने का अवसर देती है। इसके तहत अग्निवीरों का पहला बैच 2026 में सेवा से बाहर आएगा। उत्तर प्रदेश के पूर्व अग्निवीरों को प्रदेश सरकार के इस निर्णय का लाभ मिलेगा।

उत्तर प्रदेश सरकार ने उत्तर प्रदेश बेड एंड ब्रेकफास्ट (बीएंडबी) एवं होम स्टे नीति-2025 को भी मंजूरी दे दी गई। इस नई नीति का उद्देश्य राज्य के धार्मिक और पर्यटन स्थलों पर आने वाले श्रद्धालुओं और पर्यटकों को ठहरने की बेहतर और सुलभ सुविधा उपलब्ध करना है। पर्यटन विभाग के इस प्रस्ताव से प्रमुख धार्मिक या पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों के आवास की समस्या का समाधान होगा। बीएंडबी एवं होमस्टे नीति-2025 के अनुसार धार्मिक और पर्यटन स्थलों में कोई भी व्यक्ति अपने 1 से 6 कमरों तक की इकाई को होमस्टे के रूप में रजिस्टर करा सकता है। इसके तहत, अधिकतम 12 बेड की अनुमति होगी। कोई भी पर्यटक लगातार 7 दिन तक इस सुविधा का लाभ उठाते हुए यहां ठहर सकता है। इससे अधिक ठहरने की स्थिति में रिन्यूअल की भी व्यवस्था होगी। अनुमति की प्रक्रिया जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक की अगुवाई वाली कमेटी के माध्यम से पूरी की जाएगी। आसान होगा पंजीकरणकैबिनेट फैसल की जानकारी देते हुए वित्त एवं संसदीय कार्य मंत्री सुरेश खन्ना ने बताया कि ग्रामीण क्षेत्रों में होमस्टे इकाइयों के लिए 500 रुपये से 750 रुपये तक का नाममात्र शुल्क लिया जाएगा। वहीं, शहरी या सिल्वर श्रेणी के होमस्टे के लिए दो हजार रुपये का आवेदन शुल्क निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश की जीवंत सांस्कृतिक विरासत और ऐतिहासिक महत्व वाले स्थलों के कारण यह राज्य विदेशी और घरेलू पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र है। राज्य में पहले ऐसी कोई नीति न होने के कारण होमस्टे संचालकों को केंद्र सरकार के निधि प्लस पोर्टल पर पंजीकरण कराना पड़ता था। अब राज्य सरकार की इस नई नीति के तहत वे स्थानीय निकायों की अनापत्ति लेकर सरल प्रक्रिया से पंजीकरण कर सकेंगे। पर्यटन और रोजगार को मिलेगा बढ़ावासुरेश खन्ना ने बताया कि इसके अतिरिक्त, इस नीति में वित्तीय प्रोत्साहन ● शेष पेज 11 पर

विशेष सत्र बुलाने का आग्रह

विपक्ष के 16 दलों का प्रधानमंत्री को पत्र

एजेंसी

नयी दिल्ली। विपक्षी 'इंडिया' गठबंधन के 16 घटक दलों ने मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को पत्र लिखकर आग्रह किया कि पहलगाम आतंकी हमले और 'ऑपरेशन सिंदूर' से संबंधित हालात पर पर चर्चा के लिए संसद का विशेष सत्र बुलाया जाए।

कांग्रेस, समाजवादी पार्टी (सपा), तृणमूल कांग्रेस, शिवसेना (उबाठा) और राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के नेताओं ने यहां बैठक के बाद इस बारे में जानकारी दी। कांग्रेस, सपा, तृणमूल कांग्रेस, द्रमुक, शिवसेना (उबाठा) राजद, नेशनल कांफ्रेंस, माकपा, आईयूएमएल, भाकपा, आरएसपी, झामुमो, भाकपा (माले) लिबरेशन) और कुछ अन्य दलों के नेताओं ने इस पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं। बैठक के बाद कांग्रेस सांसद दीपेंद्र हुड्डा ने संवाददाताओं से कहा, ''इंडिया गठबंधन के 16 राजनीतिक दलों ने पीएम मोदी को पत्र लिखा है कि संसद का विशेष सत्र बुलाया जाना चाहिए। पहलगाम आतंकवादी ● शेष पेज 11 पर

संसद के विशेष सत्र बुलाये जाने की संभावना नहीं

नयी दिल्ली। ऑपरेशन सिन्दूर या आपातकाल के 50 साल पूरे होने के मौके पर संसद का विशेष सत्र बुलाये जाने की कोई संभावना नहीं है, अलबत्ता अगले माह शुरू होने वाले मानसून सत्र में इन दोनों विषयों पर किसी स्वरूप में चर्चा हो सकती है। सरकारी सूत्रों के अनुसार संसद का मानसून सत्र, आगामी आठ या 10 जुलाई से शुरू हो कर अगस्त मध्य तक चलने की संभावना है। चूंकि मानसून सत्र में करीब एक माह का समय रह गया है। इसलिए ऑपरेशन सिन्दूर हो या आपातकाल के 50 वर्ष, दोनों ही विषयों पर अलग से सत्र बुलाने की कोई आवश्यकता नहीं है।

पीठासीन अधिकारियों को अब मतदान खत्म होते ही केंद्र पर से डाटा अपडेट करना होगा: आयोग

एजेंसी

नयी दिल्ली। चुनाव आयोग मतदान के आंकड़े अद्यतन करने की एक नयी व्यवस्था करने जा रहा है जिसमें प्रत्येक मतदान केंद्र का पीठासीन अधिकारी (पीआरओ) को मतदान बंद होने के बाद तुरंत, मतदान केंद्र छोड़ने से पहले मतदान के आंकड़े आयोग के एकीकृत डिजिटल ऐप 'ईसीआईएनईटी' में दर्ज करना होगा, ताकि क्षेत्र-वार मतदान प्रतिशत की सूचना में विलम्ब कम से कम हो। यह व्यवस्था बिहार विधान सभा चुनाव के साथ शुरू की जायेगी।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेद्र कुमार के नेतृत्व में आयोग द्वारा चुनाव प्रक्रिया को अधिक चाक-चौबंद, मतदाताओं और हितधारकों के अनुकूल बनाने के लिए निरंतर की जा रही पहलों के बीच आयोग का यह निर्णय आखिरी दो घंटों के मतदान प्रतिशत को जारी होने में विलम्ब को लेकर पार्टियों और प्रत्याशियों द्वारा प्रायः उठाये जाने वाले सवालों के मद्देनजर एक महत्वपूर्ण फैसला ● शेष पेज 11 पर

आर्मी अफसरों की प्राइवेसी पर सरकार की एडवाइजरी

एजेंसी

नयी दिल्ली। रक्षा मंत्रालय ने मंगलवार को मीडिया को आगाह किया कि वरिष्ठ सशस्त्र बल कर्मियों और उनके परिवारों की जरुरत से ज्यादा मीडिया कवरेज से उनकी सुरक्षा को जोखिम हो सकता है इसलिए उनकी गोपनीयता बनाए रखना जरूरी है।

रक्षा मंत्रालय ने आज यहां एक बयान में कहा कि मंत्रालय भारतीय सशस्त्र बलों - सेना, नौसेना और वायु सेना की गतिविधियों, उपलब्धियों और बलिदानों को कवर करने में मीडिया की निरंतर रुचि और समर्थन की सराहना करता है। मीडिया की भागीदारी जनता को सूचित करने और

- ❐ सशस्त्र बल कर्मियों की मीडिया कवरेज में गोपनीयता बनाये रखने रक्षा मंत्रालय ने किया आगाह

राष्ट्रीय सुरक्षा मामलों की बेहतर समझ को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऑपरेशन सिंदूर जैसे चल रहे अभियानों के संदर्भ में, सशस्त्र बलों के वरिष्ठ अधिकारी अपनी नेतृत्वकारी भूमिकाओं के कारण सही मायने में लोगों की नज़रों में आए हैं। बयान में कहा गया कि मंत्रालय के ध्यान में आया है कि यह बढ़ा हुआ ध्यान पेशेवर कवरेज से आगे बढ़कर अधिकारियों और उनके परिवारों के निजी जीवन तक पहुँच गया है। मीडिया

रक्षा मंत्रालय
MINISTRY OF DEFENCE
सत्यमेव जयते

कर्मियों ने कथित तौर पर उनके निवास पर संपर्क किया, परिवार के सदस्यों से संपर्क करने का प्रयास किया और उनके आधिकारिक कर्तव्यों से असंबंधित व्यक्तिगत कवरेज का प्रयास किया। इस तरह की हरकतें बेहद अनुचित हैं और अधिकारियों और उनके परिवारों की गरिमा, गोपनीयता और सुरक्षा के लिए संभावित रूप से समझौता करने वाली हैं। जबकि वरिष्ठ अधिकारी प्रमुख सार्वजनिक भूमिकाओं में काम कर सकते हैं, उनके परिवार निजी नागरिक बने रहते हैं और उनके साथ उचित सम्मान और संवेदनशीलता के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। रक्षा मंत्रालय ने कहा कि तदनुसार, सभी मीडिया संगठनों को सलाह दी जाती है कि वे व्यक्तिगत कहानियों या साक्षात्कारों के लिए सेवारत या सेवानिवृत्त सशस्त्र बलों के कर्मियों के निजी आवासों या परिवारों से संपर्क करने या उनसे संपर्क करने का प्रयास करने से बचें, जब तक कि आधिकारिक चैनलों के माध्यम से स्पष्ट रूप से आमंत्रित या मंजूरी न दी गई हो। उनके आवासीय पते, परिवार के सदस्यों की तस्वीरें या ● शेष पेज 11 पर

11 साल में भारत की विरासत से विकास की बेहतरीन यात्रा: योगी

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

मोदी सरकार के 11 वर्ष पूरे होने पर आयोजित हुई कार्यशाला, मुख्यमंत्री ने कार्यकर्ताओं को बताई जनजागरण की रणनीति

लखनऊ। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को आह्वान किया कि वे केन्द्र सरकार की उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करें। मोदी सरकार की 11 साल उपलब्धियां जन-जन तक पहुंचाना हम सब की जिम्मेदारी भी है।

मुख्यमंत्री योगी केन्द्र में मोदी सरकार के 11 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में लखनऊ में आयोजित प्रदेश स्तरीय कार्यशाला में भारतीय जनता पार्टी के कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। 'सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के 11 वर्ष' थीम पर इस कार्यशाला की शुरुआत पंडित दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिमा पर पुष्पांजलि से हुई। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि आजादी के अमृत काल में देश को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के रूप में प्रभावशाली नेतृत्व प्राप्त होना हम सभी का सौभाग्य है। मोदी सरकार की 11 साल उपलब्धियां जन-जन तक पहुंचाना हम सब की जिम्मेदारी है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से हर वर्ग और संगठन को इस अभियान से जोड़ने और लाभार्थियों के अनुभव साझा करने की अपील की।

मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि अमृत काल में विकसित भारत की परिकल्पना को साकार करने के लिए मोदी सरकार की 11 वर्षों की उपलब्धियां गर्व का विषय हैं। इन उपलब्धियों को प्रदेश, जनपद, मंडल और शक्ति केंद्र स्तर पर जनता तक पहुंचाने के लिए कार्यकर्ताओं को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। उन्होंने प्रदेश संगठन महामंत्री धर्मपाल सिंह और राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम की

रूपरेखा का उल्लेख करते हुए कहा कि कार्यकर्ताओं ने पहले भी उत्तर प्रदेश सरकार की आठ वर्षों की उपलब्धियों को हर बूथ तक पहुंचाया था। अब केंद्र सरकार की 11 वर्षों की उपलब्धियों को अखिल भारतीय स्तर पर प्रचारित करने का समय है, जिसमें राज्य और राष्ट्रीय स्तर की उपलब्धियां शामिल होंगी। मुख्यमंत्री योगी ने कार्यकर्ताओं से कहा कि वे केवल पार्टी कार्यकर्ताओं तक सीमित न रहें, बल्कि आम जन, पेशेवर समूहों, और लाभार्थियों को भी अभियान से जोड़ें। उन्होंने हाल के विधानसभा उपचुनाव का उदाहरण देते हुए कहा कि संगठन, मोर्चा, और प्रकोष्ठों की संयुक्त बैठकें प्रभावी रही हैं। भाजपा के छह मोर्चे और 22-23 प्रकोष्ठ समाज के हर वर्ग जैसे अधिवक्ता, चिकित्सक, शिक्षक, छात्र, और लाभार्थी को समाहित करते हैं। इन समूहों के साथ गोष्ठियां आयोजित कर उनके बीच से वक्ताओं को चुनकर योजनाओं का प्रभावी प्रचार किया जा सकता है। मुख्यमंत्री ने आयुष्मान भारत योजना की सफलता का उल्लेख करते हुए कहा कि पहले किसी परिवार में बीमारी संकट बन जाती थी, लेकिन आज देश के 50 करोड़ और उत्तर प्रदेश के 10 करोड़ लोग इस योजना से लाभान्वित हो रहे हैं। आयुष्मान भारत वय वंदन योजना के तहत 70 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों को बिना किसी भेदभाव के 5 लाख रुपये तक की मुफ्त स्वास्थ्य सुविधा मिल रही है। उन्होंने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी ने छह एम्स स्थापित किए और मोदी सरकार ने 22 नए एम्स बनाए, जिनमें उत्तर प्रदेश में दो एम्स शामिल हैं। 'एक जिला, एक मेडिकल कॉलेज' की परिकल्पना ने सुदूर क्षेत्रों जैसे महाराजगंज, लखीमपुर खीरी, और मिर्ज़ापुर में मेडिकल कॉलेज स्थापित किए, जो रोजगार और स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करा रहे हैं। उन्होंने कार्यकर्ताओं से इन उपलब्धियों को गर्व के साथ प्रचारित करने को कहा, ताकि विरोधियों के दुष्प्रचार का जवाब दिया जा सके। भाजपा पदाधिकारियों ने कार्यकर्ताओं में भरा जोशमोदी सरकार की योजनाओं को जन जन तक पहुंचाने के लिए भाजपा पदाधिकारियों ने प्रदेशभर से आए कार्यकर्ताओं में जोश भरा। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष भूपेन्द्र चौधरी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी की जनहित की योजनाओं से ही आज देश को गरीबी से बाहर निकलने में मील का पत्थर साबित हो रही है। देश को ● शेष पेज 11 पर

नाबालिग के अपहरण से हड़कंप, 6 दिन बाद भी नहीं मिला सुराग

घर के छत पर सो रही थी किशोरी, उठा ले गया गांव का युवक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

उन्नाव। ज़िले से एक सनसनीखेज मामला सामने आया है। यहां सदर कोतवाली क्षेत्र के करोवन गांव में 28 मई की रात एक नाबालिग किशोरी को गांव का ही 32 वर्षीय युवक बहला फुसलाकर घर की छत से भगा ले गया। किशोरी अपनी छोटी बहन के साथ छत पर सो रही थी। रात करीब 11 बजे आरोपी छत पर चढ़ा और किशोरी को उठा ले गया। छोटी बहन ने विरोध किया तो आरोपी ने जान से मारने की धमकी दी और फरार हो गया।आपको बताते चलें कि सुबह होते ही छोटी बहन ने परिजनों को पूरे मामले की जानकारी दी। इसके बाद परिजन सीधे सदर कोतवाली पहुंचे और आरोपी के खिलाफ लिखित शिकायत दर्ज कराई। परिजनों ने तत्काल कार्रवाई की मांग की, लेकिन छह दिन बीत जाने के बावजूद अब तक न तो बेटी का कोई सुराग मिल पाया है और न ही आरोपी की गिरफ्तारी हो सकी है। बेटी की बरामदगी न होने से परेशान परिजन अब पुलिस अधीक्षक दीपक भूकर की चौखट पर पहुंचे। उन्होंने अपनी फरियाद सुनाई और गुहार लगाई कि उनकी बेटी को जल्द से जल्द ढूंढा जाए और आरोपी को सख्त सजा दी जाए। इस पर एसपी ने परिजनों को आश्वासन दिया है कि मामले में गंभीरता से कार्रवाई की जा रही है और जल्द ही किशोरी को बरामद कर लिया जाएगा। परिजनों का कहना है कि आरोपी पहले भी किशोरी के साथ छेड़छाड़ कर चुका है। उस समय इसकी जानकारी आरोपी के परिवार को दी गई थी, जिन्होंने बेटे को समझाने का वादा किया था। लेकिन इसके बावजूद युवक ने दोबारा दुस्साहसिक हरकत की और इस बार किशोरी को अगवा कर ले गया। परिवार का कहना है कि पुलिस की ढिलाई और कार्रवाई में देरी से उनका विश्वास टूटता जा रहा है। किशोरी की छोटी बहन का कहना है कि वह अपनी बहन को छत से उठाकर ले जाते हुए देखी, और जब उसने सवाल किया तो धमकी दी गई। परिवार आरोपी को फांसी या उम्रकैद जैसी सख्त सजा दिलवाने की मांग कर रहा है।

पीडीए ने 72 बीघा में हुए अवैध निर्माण को जेसीबी लगाकर किया जमीदोज

प्रयागराज । अवैध निर्माण एवं प्लाटिंग के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत पीडीए की टीम ने मंगलवार को लगभग 72 बीघा में किए गए अवैध निर्माण को ध्वस्त कर दिया। अवैध प्लाटिंग करने वालों के खिलाफ झूंसी थाने में मुकदमा दर्ज करने के लिए तहरीर दी है। यह जानकारी जोन 5 के अवर अभियन्ता श्याम कृष्ण तिवारी ने दी।उन्होंने बताया कि प्रयागराज विकास प्राधिकरण की प्रवर्तन टीम एवं सुपरवाइजर लाल बहादुर यादव, महेंद्र यादव और झूंसी थाने की पुलिस बल के साथ जोन 05 एवं उप जोन 5 ए में अवैध रूप से की गई प्लाटिंग एवं निर्माण के खिलाफ कार्रवाई करते हुए सभी अवैध निर्माण को जमीदोज कर दिया। जोन 5 के झूंसी के गारापुर रोड चीनी मिल पूरेसुरदास गांव निवासी हकीमुन निशा पत्नी इस्लाम खां एवं अन्य लोगों ने लगभग 3 बीघा जमीन पर प्लाटिंग करके निर्माण करा रहे थे। जिसे पीडीए की जेसीबी लगाकर अवैध निर्माण को गिरा दिया। इसी तरह राकेश कुमार श्रीवास्तव उर्फ रवि दादा पुत्र सुरेश श्रीवास्तव ने लगभग 10 बीघा जमीन पर अवैध प्लाटिंग किया था। जहां जेसीबी लगाकर अवैध निर्माण को ध्वस्त करा दिया गया।इसी क्रम में मुलायम यादव ने 5 बीघा, कटका झूंसी के अजय यादव ने 5 बीघा और झूंसी के गारापुर रोड में महमूद खां एवं मकसूद ने 12 बीघा जमीन पर अवैध निर्माण करा रहे थे। इसके साथ ही सोनौटी गारापुर रोड में लगभग 12 बीघा जमीन पर बुफैल उर्फ मुन्ना अवैध निर्माण करा रहे थे। जिसे पीडीए की प्रवर्तन टीम ने गिरा दिया। गारापुर रोड के किनारे नीरज तिवारी ने 8 बीघा, मुस्ताक कमरुद्दीन लगभग 25 बीघा जमीन पर अवैध प्लाटिंग करके निर्माण करा रहे थे। पीडीए की प्रवर्तन टीम ने अवैध निर्माण को जेसीबी लगाकर ध्वस्त करा दिया और सभी के खिलाफ झूंसी थाने में मुकदमा दर्ज करने के लिए तहरीर दी है।

जेष्ठ माह के बड़े मंगल पर भव्य भण्डारे का हुआ आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ । राजधानी में आलमबाग इकोगार्डन मेन गेट के बगल में जेष्ठ माह के बड़े मंगल के शुभ अवसर पर सारंगी वादक स्व. विनोद मिश्रा परिवार ने भव्य भण्डारे का किया गया। इस अवसर पत्नी गीता मिश्रा ने हनुमान जी का पूजन अर्चन कर भक्तों में पूड़ी सब्जी व छोला चाल प्रसाद रूप में वितरित किये। सारंगी वादक की पुत्री प्रीति मिश्रा ने बताया कि हमारे पिता की इच्छा थी कि हर वर्ष जेष्ठ माह के मंगलवार को भंडारा आयोजित होता रहे तो उसी क्रम में ये तीसरी बार भव्य भण्डारे का आयोजन किया गया है और सैकड़ों की संख्या में हनुमान भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया है।भण्डारे आयोजन में सारंगी वादक स्व. विनोद मिश्रा परिवार के महेंद्र मिश्रा, प्रमोद मिश्रा, अनिल कुमार तिवारी एवं अन्य भक्तजन शामिल रहे ।

हे दुःख भन्जन, मारुती नंदन, सुन लो मेरी पुकार..., ज्येष्ठ के चतुर्थ बड़े मंगल पर भण्डारे का हुआ आयोजन

बहराइच। ज्येष्ठ के चतुर्थ बड़े मंगल के अवसर पर शहर के बशीरगंज स्थित श्री चित्रगुप्त मन्दिर पर विशाल भंडारे का आयोजन किया गया।पूड़ी सब्जी,छोला चावल के प्रसाद को लोगो ने खूब छका।भण्डारे से पूर्व श्री चित्रगुप्त भगवान एवं श्री हनुमानजी की पूजा अर्चना व आरती उतारी गयी।भण्डारे की शुरुआत दोपहर से हुई जो रात्रि तक चलता रहा।इस दौरान समाज के अध्यक्ष श्रवण कुमार निगम,राजेश निगम,सुशील श्रीवास्तव, अंकित श्रीवास्तव, रवि मोहन,लव निगम,सभासद हर्षित राज श्रीवास्तव, राकेश श्रीवास्तव, अनुराग श्रीवास्तव,शिवम श्रीवास्तव,जीतेन्द्र श्रीवास्तव,शेखर श्रीवास्तव,मीडिया प्रभारी सचिन श्रीवास्तव, सोनी श्रीवास्तव,प्रीति श्रीवास्तव,रितेश श्रीवास्तव, आशीष श्रीवास्तव सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

एक्सीडेंट में युवक की मौत, मांगलिक कार्यक्रम का निमंत्रण देकर लौट रहा था घर

सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है पुलिस

कैनविज टाइम्स संवाददाता

उन्नाव। पूरा मामला उन्नाव जनपद के बिहार थाना क्षेत्र में एक सड़क हादसे में शैलेन्द्र कुमार उर्फ मोनू (30) की मौत हो गई। घटना पाटन गांव के सोनू ढाबा के पास हुई। मोनू बाइक से एक मांगलिक कार्यक्रम का निमंत्रण देकर घर लौट रहा था। इसी दौरान एक अज्ञात तेज रफ्तार वाहन ने उसे टक्कर मार दी। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। वाहन चालक घटनास्थल से फरार हो गया।बता दे कि मृतक मेला-ठेलों में अस्थायी दुकान लगाकर परिवार का भरण-पोषण करता था। वह दो बहनों का इकलौता भाई और माता-पिता का एकमात्र सहारा था। मोनू को गांव में एक मेहनती और मिलनसार युवक के रूप में जाना जाता था। हादसे की खबर से परिवार में कोहराम मच गया है। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। अज्ञात वाहन की पहचान के लिए आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं। ग्रामीणों के अनुसार, मोनू सीधा-सादा व्यक्ति था और गांव के आयोजनों में सक्रिय रूप से भाग लेता था। परिजनों ने प्रशासन से वाहन चालक की जल्द गिरफ्तारी और आर्थिक सहायता की मांग की है। पुलिस मामले की जांच कर रही है और परिवार को हर संभव मदद का आश्वासन दिया है।

बिना अनुमति बसाई जा रही कॉलोनियों पर चला बुलडोजर, मलबे में बदले अवैध सपने

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बरेली । विकास प्राधिकरण (बीडीए) की प्रवर्तन टीम ने मंगलवार को इज्जतनगर क्षेत्र के मुड़िया अहमदनगर गांव में बड़ी कार्रवाई करते हुए दो अवैध कॉलोनियों पर बुलडोजर चलाया। ये कॉलोनियां बिना किसी वैध अनुमति व नक्शा स्वीकृति के बसाई जा रही थीं।जानकारी के अनुसार, पहली कॉलोनी का निर्माण अश्वनी शर्मा द्वारा लगभग 2000 वर्गमीटर भूमि पर किया जा रहा था। इस क्षेत्र में बिना किसी प्रकार की सरकारी स्वीकृति के सड़क, बाउंड्री वॉल और भूखंडों का नक्शा तैयार किया गया था। वहीं दूसरी कॉलोनी नवनीत अग्रवाल द्वारा नकटिया नदी के किनारे लगभग 6000 वर्गमीटर भूमि पर विकसित की जा रही थी, जहां निर्माण कार्य तेज़ी से जारी था, लेकिन किसी भी प्रकार की आधिकारिक अनुमति नहीं ली गई थी।--बीडीए की सख्ती, अवैध निर्माण जमींदोजप्रवर्तन टीम अवर अभियंता अजीत कुमार, सीताराम, बौद्धमणि गौतम, संयुक्त सचिव दीपक कुमार तथा अन्य अधिकारियों की अगुवाई में भारी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंची। टीम ने दोनों स्थानों पर कार्रवाई करते हुए अवैध निर्माण को ध्वस्त कर दिया। सड़क, बाउंड्री वॉल और चिन्हित प्लॉट्स को बुलडोजर से पूरी तरह मिटा दिया गया। कार्रवाई के दौरान स्थानीय लोगों की भारी भीड़ जुट गई, किंतु पुलिस की मौजूदगी में किसी को भी निर्माण स्थल के पास जाने की अनुमति नहीं दी गई।--प्राधिकरण की सख्त चेतावनीः नियमों का उल्लंघन बर्दाश्त नहींकार्रवाई के उपरांत बीडीए ने स्पष्ट किया कि बिना मानचित्र स्वीकृति के किसी भी प्रकार की प्लॉटिंग, कॉलोनी बसाने या निर्माण कार्य को गैरकानूनी माना जाएगा। नियमों की अवहेलना करने वालों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। आम नागरिकों से अपील की गई है कि किसी भी सम्पत्ति की खरीदारी से पूर्व उसकी वैधता और विकास प्राधिकरण से स्वीकृत नक्शे की जांच अवश्य कर लें।

जेल में बंदी की मौत, दो दिन पहले ही मंजूर हुई थी जमानत

परिजनों ने जेल प्रशासन पर लगाया देर से इलाज की व्यवस्था कराने का आरोप

कैनविज टाइम्स संवाददाता

उन्नाव । जनपद के जिला कारागार में बंद 40 वर्षीय विचाराधीन कैदी कमाल उर्फ टहलू की जिला अस्पताल में इलाज के दौरान मौत हो गई। जमुनाखेड़ा थाना दही के निवासी कमाल पिछले तीन सालों से जेल में बंद थे। कमाल की तबीयत अचानक बिगड़ने पर जेल प्रशासन ने उन्हें एंबुलेंस से जिला अस्पताल में भर्ती कराया। अजगैन, हसनगंज और बीघापुर थानों में उनके खिलाफ कई आपराधिक मामले दर्ज थे। दो दिन पहले ही अदालत से उनकी जमानत मंजूर हुई थी।आपको बताते चलें कि मृतक की पत्नी मैमजादी और तीन बच्चों (दो बेटियां और एक बेटा) पर दुख का पहाड़ टूट पड़ा है। परिवार का आरोप है कि जेल प्रशासन ने समय पर इलाज नहीं कराया। जेल प्रशासन का कहना है कि तबीयत बिगड़ते ही तुरंत अस्पताल ले जाया गया। कोतवाली सदर पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मौत के कारणों का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट से चलेगा। ग्रामीणों के अनुसार, कमाल पिछले कुछ वर्षों से सुधर गए थे और शांतिपूर्ण जीवन जीना चाहते थे। परिवार को उम्मीद थी कि रिहाई के बाद वह नई जिंदगी की शुरुआत करेंगे।

चोरी के आरोप में दो गिरफ्तार, पुलिस अभिरक्षा में चार बाल अपचारी

गोरखपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक द्वारा चोरी के अपराधों पर अंकुश लगाने एवं अपराधियों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के तहत पुलिस अधीक्षक दक्षिणी के मार्गदर्शन, क्षेत्राधिकारी खजनी के पर्यवेक्षण व थानाध्यक्ष बेलघाट के नेतृत्व में उ.नि. अभिषेक यादव मय पुलिस टीम द्वारा थाना स्थानीय पर पंजीकृत धारा 303(2) भा.न्या.सं. से सम्बन्धित वांछित अभियुक्त अभिषेक व प्रीतम राज को गिरफ्तार किया है। इस मामले में चार बालअपचारी को पुलिस अभिरक्षा में लिया गया। उनके कब्जे से चोरी के चार सोलर पैनल व छह इन्वर्टर बैटरी बरामद किया गया। उक्त बरामदगी के आधार पर मुकदमा उपरोक्त में धारा 317(2) की बढोत्तरी की गयी।पुलिस के मुताबिक 17 मई को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा चार सोलर पैनल व तार चोरी कर लिया गया तथा 30 मई को अज्ञात व्यक्तियों द्वारा छह इन्वर्टर की बैट्री चोरी कर लिया गया था। गिरफ्तारी टीम में उ.नि. अभिषेक कुमार यादव, उ.नि. आशीष त्रिपाठी, हे.का. मनोज कुमार चौधरी, हे.का. मनोज चौधरी, का. रोहित यादव,का. बाल्मिकी प्रसाद गोंड व का. मोनू यादव शामिल रहे।

विनय अध्यक्ष, सतवंत सचिव व सुभाष कोषाध्यक्ष हुए नियुक्त

राजकीय ऑप्टोमेट्रिस्ट एसोसिएशन उत्तर प्रदेश शाखा बहराइच का चुनाव संपन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बहराइच। राजकीय ऑप्टोमेट्रिस्ट संगठन उत्तर प्रदेश की शाखा बहराइच का निर्वाचन मुक्त चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के सभागार में संपन्न हुआ। निर्वाचन की प्रक्रिया एडिशनल सीएमओ डॉ राजेश कुमार के संरक्षकत्व में मनोनीत निर्वाचन अधिकारी राजकीय ऑप्टोमेट्रिस्ट एसोसिएशन उत्तर प्रदेश के प्रांतीय सदस्य जे.पी.आर्या जिला चिकित्सालय बलरामपुर के द्वारा संपन्न कराया गया। निर्वाचन प्रक्रिया में उपस्थित सभी सदस्यों के आपसी सहमति से विनय कुमार सिंह अध्यक्ष, सतवंत पाल सचिव व सुभाष चंद्र वर्मा को कोषाध्यक्ष मनोनीत किया गया।निर्वाचन प्रक्रिया में पदाधिकारी के मनोनीत के पश्चात उपस्थित सभी सदस्यों व विशिष्ट जनों ने पदाधिकारीयों व राजकीय ऑप्टोमेट्रिस्ट संगठन बहराइच के परिवार को बधाई व शुभकामनाएं दी।निर्वाचन के मुख्य अधिकारी डॉ. संजय कुमार ने सभी निर्वाचित पदाधिकारी को माला पहनकर प्रमाण पत्र वितरित किया तथा शुभकामनाएं दी। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने ही नवनिर्वाचित पदाधिकारी को शपथ भी दिलाई।निर्वाचन कार्यक्रम में बलरामपुर जिला चिकित्सालय के नेत्र सर्जन डॉ.सुनील सिंह, अखिलेश श्रीवास्तव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चितौरा, सुभाष सिंह सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, नानपाराशैलेंद्र कुमार रावत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र मुस्तफाबाद, विनीत कुमार जायसवाल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र फखरपुर, अशफाक अहमद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र इकौना, उरोज फातिमा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बाबागंज, रंजना मिश्रा जिला अस्पताल बहराइच, सितारा संगम सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बाबागंज, संजय श्रीवास्तव सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रिसिया, समुख चरण पाठक फार्मासिस्ट एसोसिएशन जिला अध्यक्ष, वी.पी.सिंह सामाजिक कार्यकर्ता सेवा क्लब कैसरगंज, बी.डी. सिंह, पत्रकार व समाजसेवी प्रदीप श्रीवास्तव, प्रशांत श्रीवास्तव आदि उपस्थित रहे।

ईद- उल -अज़हा को लेकर पुलिस अलर्ट अमन कमेटी की हुई गोरखनाथ थाने पर बैठक

सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक फ़ोटो या वीडियो पोस्ट करने पर होगी कठोर कार्यवाही:रवि कुमार सिंह सीओ गोरखनाथ

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। आगामी त्योहार ईद उल अजहा (बकरीद) के मद्देनजर शांति समिति की बैठक का आयोजन गोरखनाथ थाने पर किया गया। जिसकी अध्यक्षता क्षेत्राधिकारी गोरखनाथ रवि कुमार सिंह ने किया। आगामी 7 जून को ईद उल अजहा पर्व को लेकर गोरखनाथ पुलिस ने क्षेत्र के संभ्रांत लोगो ,पार्षदों, नगर निगम, बिजली विभाग के अधिकारियों और मस्जिदों के इमामों के साथ गोरखनाथ पुलिस ने शांति समिति की बैठक कर बकरीद पर्व को शांतिपूर्ण ढंग से सम्पन्न करवाने पर चर्चा की गयी। क्षेत्राधिकारी गोरखनाथ रवि कुमार सिंह ने मीटिंग में आये हुए सभी लोगो की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनने के बाद सभी की समस्याओं का समय से निस्तारण करने की बात कही सीओ गोरखनाथ ने कहा कि किसी भी प्रतिबंधित जानवर की कुर्बानी नही होगी। इस बात का सभी ध्यान रखे कि कुर्बानी खुले में न हो पर्दे में या टेंट लगा कर ही कुर्बानी करे। जानवरों के अवशेषों को इधर उधर न फ़ेके। नगर निगम के कंटेनर में रखे। साथ ही सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर किसी भी जानवर की फ़ोटो न लगाएं, किसी की भावनाओ को आहत न करे साफ सफाई पर विशेष ध्यान दे, सभी लोग शांतिपूर्ण तरीके से आपसी सौहार्द के साथ पर्व को मनाए। कानून का उलंघन करने वालो पर कड़ा एक्शन लिया जाएगा। थाना प्रभारी गोरखनाथ शशिभूषण राय ने कहा कि मस्जिदों के इमाम इस बात का ऐलान मस्जिदों में करे कि जानवरों के अवशेषों को सड़क पर न फ़ेके मस्जिदों में अंदर बाहर सीसीटीवी कैमरे जरूर लगवा ले ताकि हर गतिविधियों पर नज़र रखी जा सके। पिछले साल की तरह ही इस साल भी पर्व को मनाएंगे। कोई नई परंपरा नही होगी। सभी लोग इस बात का ध्यान रखे कि किसी की भावना आहत न हो दूसरे धर्मो का भी सम्मान करें।

हिन्दू मुस्लिम एकता कमेटी के अध्यक्ष शाकिर अली सलमानी ने कहा कि कुर्बानी पर इस बात का ध्यान रखे कि जिस तरह से हमारे हिन्दू भाई हमेसा हमारे त्योहारों पर हम सबका साथ देते है इस बार भी कुर्बानी पर उनकी आस्था का खयाल रखते हुए जानवरों के मलबे को काली पालथिन में रखे और पर्दा लगा कर कुर्बानी करे सड़क पर जानवरों की कुर्बानी न करे और सड़क पर जानवरों के मलबे न फ़ेके अपने घर के बच्चों को बताए कि सोशल मीडिया पर जानवरों की फ़ोटो या वीडियो पोस्ट मत करे वरना उनको दिक्कत हो सकती है। अमन कमेटी की बैठक में सभी चौकी प्रभारी बीट के सिपाही मौजूद रहे।

जनपद के इन्टहा में निर्मित होगा 33/11 विद्युत उपकेन्द्र

बहराइच । जिलाधिकारी मोनिका रानी ने तहसील व परगना नानपारा अन्तर्गत परगना ग्राम इन्टहा में 33/11 के.वी. विद्युत नवीन उपकेन्द्र के निर्माण हेतु खसरा/गाटा संख्या 3126 क्षेत्रफल 0.2400 हेक्टयर पुरानी परती श्रेणी की भूमि का आवंटन उ.प्र. पावर कार्पोरेशन लिमिटेड, लखनऊ को रूपये 1.00 प्रति एकड सांकेतिक मूल्य दर पर जिसे बाद में 30-30 वर्ष पर प्रशासनिक विभाग की आवश्यकता को दृष्टिगत रखते हुए उनके अनुरोधानुसार 90 वर्ष के पट्‌टे पर उपलब्ध करायी जायेगी।

अहैतुक सहायता के रूप में बैंक खाते में भेजे गये पांच लाख रूपये

बहराइच । जिलाधिकारी मोनिका रानी ने बताया कि अन्य आपदा के तहत तहसील मिहींपुरवा (मोतीपुर) अन्तर्गत 01 व्यक्ति के बैंक खाते रू. 5,00,000=00 (रू. पांच लाख) की धनराशि अहैतुक सहायता के रूप में 03 जून 2025 को अन्तरित की गई है।

ज्येष्ठ के चतुर्थ बड़े मंगल पर किसानों की अगुवाई में भव्य भंडारे का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। चिनहट ब्लॉक के मल्होर रोड स्थित कस्बा चौकी के पास किसान सरकार ट्रस्ट कि और से हुआ भव्य भंडारे का आयोजन। इस कार्यक्रम के तहत पहले भगवान हनुमान जी पूजा- अर्चना की गयी जिसके बाद भक्तों के लिये प्रसाद का वितरण किया गया। इस अवसार पर भंडारे में श्रद्धालुओं की एवं प्रसाद ग्रहण करने वालों लोगों कि लगी लंबी कतार। इस मौके पर पसमांदा मुस्लिम समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष अनीश मंसूरी के साथ वाजिद अली, दिलीप कुमार सहित कई कार्यकर्ता मौजूद रहे। इस भंडारे के आयोजनकर्ता किसान नेता आशु चौधरी, सतेंद्र सिंह, आलोक वर्मा सहित कई लोगों के सहयोग से हुआ आयोजन।

भैरमपुर स्थित मनकामेश्वर मंदिर पर चतुर्थ विशाल भंडारे का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

निगोहा, लखनऊ। जेष्ठ के चौथे बड़े मंगल पर निगोहा क्षेत्र में जगह-जगह पर पूजा अर्चना कर भंडारों का आयोजन किया गया। क्षेत्र के भैरमपुर गांव स्थित मनकामेश्वर मंदिर पर जेष्ठ के चौथे बड़े मंगल पर सुंदर काण्ड के बाद विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। भैरमपुर के मनकामेश्वर मंदिर पर बालाजी महाराज भी विराजमान हैं , वहीं चौथे मंगलवार को चतुर्थ विशाल भंडारे का आयोजन भारद्वाज परिवार की ओर से किया गया , जिसके मुख्य यजमान पंडित दिवाकर शर्मा रहे । भंडारे में छोला चावल और बूंदी का प्रसाद वितरण किया गया। इस मौके पर पंडित केपी शर्मा, पंडित सुबोध शर्मा , पत्रकार पंडित उमेश शर्मा, पत्रकार पंडित दिवाकर शर्मा, जितेन्द्र भारद्वाज, अमित शर्मा, शिवम भारद्वाज , सोमनाथ

सुंदर काण्ड के बाद हुआ भंडारा, हजारों की संख्या में भक्तों ने प्रसाद चखा

, अंकित, मन्टू , आयुष भारद्वाज, पीयुष, आकाश, हिमाचल शामिल रहे। इसी क्रम में भैरमपुर पुलिया पर अनन्त वर्मा द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया, बेला वीर बाबा मंदिर पर भंडारा हुआ।

गोमती नगर में अवैध बहुमंजिला बिल्डिंग सील

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। मंगलवार को एलडीए ने अवैध निर्माण के खिलाफ अपनी मुहिम को जारी रखते हुए गोमती नगर में एक बहुमंजिला बिल्डिंग को सील कर दिया। एलडीए के उपाध्यक्ष प्रथमेश कुमार के निर्देश पर प्रवर्तन जोन-1 की टीम ने यह कार्रवाई की।जोनल अधिकारी देवांश त्रिवेदी ने बताया कि राजेश सिंह और अन्य द्वारा गोमती नगर के विजयंत खंड में भूखंड संख्या 1/40 पर लगभग 120 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में बिना अनुमति के बहुमंजिला बिल्डिंग का निर्माण किया जा रहा था। विहित न्यायालय के सीलिंग आदेश के चलते प्राधिकरण की टीम ने पुलिस बल के सहयोग से निर्माणाधीन भवन को सील कर दिया। एलडीए का यह अभियान शहर में अवैध निर्माण पर नकेल कसने के लिए लगातार जारी है।

कहासुनी के बाद मारपीट, कुल्हाड़ी से युवक पर किया हमला

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नगराम, लखनऊ । नगराम थाना क्षेत्र के छंगा खेड़ा मजरा देवती गाँव में रविवार शाम एक विवाद ने हिंसक रूप ले लिया। विवाद की शुरुआत शराब के नशे में गाली-गलौज से हुई, जो बाद में मारपीट और कुल्हाड़ी से हमले में बदल गई। इस हमले में एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया , प्राप्त जानकारी के अनुसार, नगराम थाना क्षेत्र के छंगा खेड़ा मजरा देवती के सहजराम के पुत्र ने थाने में दी गई तहरीर में बताया कि रविवार की शाम करीब सात बजे रामसजीवन पुत्र स्व. द्वारिका शराब के नशे में धुत होकर उसके पुत्र राहुल को गालियां देने लगे। जब पीड़ित पक्ष ने इसका विरोध किया, तो

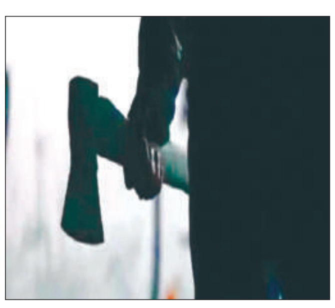

पीड़ित की तहरीर पर नगराम थाने में मुकदमा दर्ज, आरोपी पक्ष के चार लोगों पर गंभीर आरोप

रामसजीवन ने अपने दामाद दीपक, पुत्र रोहित और पत्नी सुनीता को मौके पर बुला लिया।

आरोप है कि इन चारों ने मिलकर पहले गाली-गलौच की और फिर लात-घूसों से पीड़ित को बुरी तरह मारा। इतना ही नहीं, आरोपियों ने कुल्हाड़ी से हमला कर पीड़ित के सिर पर वार कर दिया, जिससे उसे गंभीर चोटें आईं। हमलावरों ने जान से मारने की धमकी भी दी।घटना की सूचना पीड़ित ने तत्काल पुलिस कंट्रोल रूम 112 पर दी, जिसके बाद उसे इलाज के लिए मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। पीड़ित के पुत्र राहुल को भी मारपीट में चोटें आई हैं। घटना के संबंध में सहजराम ने नगराम थाने में आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराते हुए कड़ी कार्रवाई की मांग की है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

चौथे बड़े मंगल पर भी खूब सजे भंडारे और हुई हनुमान जी की जय जयकार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। ज्येष्ठ माह का मंगल सबका मंगल ही करता है राम भक्त हनुमान की महिमा जो अपरमपार है ऐसा हर हनुमान भक्त मानता है जो बड़े मंगल का भंडारा और उसका प्रसाद ग्रहण करता है वैसे तो ज्येष्ठ माह के सभी मंगल की धूम शहर की हर सड़को और मंदिरों मे दिखाई देती है जिसे देख कर ही मालूम पड़ जाता है कि लगता है आज बड़ा मंगल है ऐसा ही एक मनमोहक नज़ारा दुबग्गा के शाहपुर और बालगंज मे अम्मा का भंडारा सजा दिखाई दिया तो वहीं शाहपुर मे हनुमान भक्तों द्वारा सब्ज़ी पूड़ी व बूंदी का भोग हनुमान भक्तों को वितरित किया गाय।बड़े मंगल पर मौसम भले बेईमान होता हो पर राम

भक्त हनुमान की भक्ति मे लीन भक्तों के लिए गर्मी की तपिश भी मामूली ही नज़र आती है।

बेजुबान जानवरों के साथ क्रूरता कुत्तों को जहर देकर मारा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में इंसानियत को शर्मसार करने वाली घटना सामने आई है। तालकटोरा थाना क्षेत्र के राजाजीपुरम सी ब्लॉक सपना कॉलोनी में 10 से ज्यादा बेजुबान कुत्तों को जहर देकर मारने की कोशिश की गई। स्थानीय लोगों के अनुसार सुबह अचानक कई कुत्ते तड़पने लगे और देखते ही देखते चार कुत्तों ने दम तोड़ दिया। घटना की सूचना मिलते ही जीव आश्रय की टीम मौके पर पहुंची और तड़पते कुत्तों को तत्काल इलाज देना शुरू किया। गंभीर हालत वाले कुछ कुत्तों को अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां डॉक्टरी टीम उनकी लगातार निगरानी कर रही है। स्थानीय लोगों का कहना है कि इलाके में कुछ व्यक्तियों को आवारा कुत्तों से परेशानी थी और आशंका है कि इन्हीं में से किसी ने जहर मिलाकर खाना दिया होगा। हालांकि इसकी आधिकारिक पुष्टि अभी नहीं हुई है। इस अमानवीय कृत्य से स्थानीय लोगों में भारी गुस्सा है। स्थानीय नागरिकों ने दोषियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग की है और अपील की है कि ऐसे मामलों को रोकने के लिए कड़े कानून लागू किए जाएं। वहीं स्थानीय पार्षद ने बताया कि सी ब्लॉक सपना कॉलोनी में जहर मिले मीट के कारण यह दर्दनाक घटना हुई, जिसमें 8 कुत्तों की मौत हो गयी और 2 कुत्तो की हालात गंभीर है। इसके साथ-साथ कई कौवों की भी जान चली गई। पुलिस ने मामले का संज्ञान लेते हुए जांच शुरू कर दी है। तालकटोरा थाना प्रभारी ने बताया कि स्थानीय लोगों की तहरीर के आधार पर अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है। मृत कुत्तों के शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया है ताकि मौत की असली वजह का पता लग सके। पुलिस सीसीटीवी फुटेज खंगाल रही है और आसपास के लोगों से पूछताछ कर रही है। थाना प्रभारी ने आश्वासन दिया कि आगे की कार्रवाई जारी है और दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा। यह घटना एक बार फिर बेजुबान जानवरों के प्रति बढ़ती असंवेदनशीलता को दर्शाती है। स्थानीय नागरिकों ने मांग की है कि ऐसी क्रूरता को रोकने के लिए सख्त कानूनी प्रावधान किए जाएं ताकि भविष्य में इस तरह की घटनाएं न हों। यह मामला न केवल कानूनी कार्रवाई, बल्कि सामाजिक जागरूकता और जानवरों के प्रति करुणा की जरूरत को भी रेखांकित करता है।

गुम हुए मोबाइल लौटाकर पुलिस ने फिर जीता जनता का विश्वास

नगराम, लखनऊ । नगराम पुलिस ने एक बार फिर अपने कर्तव्यनिष्ठ आचरण और तकनीकी दक्षता का परिचय देते हुए गुम हुए दो मोबाइल फोन उनके असली मालिकों को लौटाकर जनमानस का दिल जीत लिया है। मामला नगराम क्षेत्र का है, जहां दो अलग-अलग व्यक्तियों के मोबाइल फोन हाल ही में गुम हो गए थे। दोनों व्यक्तियों ने अपने गुमशुदा मोबाइल की सूचना सीईआईआर पोर्टल पर पंजीकृत की थी। सूचना मिलते ही नगराम पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए पोर्टल की मदद से दोनों मोबाइल फोन को ट्रैक किया और बरामद कर लिया। पुलिस द्वारा सत्यापन उपरांत दोनों मोबाइल उनके वास्तविक धारकों को सुपुर्द कर दिए गए। मोबाइल प्राप्त करने वाले लोगों ने फोन वापस पाकर खुशी जताई और नगराम पुलिस की त्वरित व प्रभावी कार्यप्रणाली की सराहना की। थाना प्रभारी विवेक चौधरी नगराम ने बताया कि सीईआईआर पोर्टल तकनीक के माध्यम से गुमशुदा मोबाइल की लोकेशन ट्रेस कर उसे आसानी से बरामद किया जा सकता है। हमारा उद्देश्य है कि जनता की समस्याओं का समाधान शीघ्रता से हो।मोबाइल वापसी की इस प्रक्रिया में जो ईमानदारी और तत्परता पुलिस टीम ने दिखाई, उसने एक बार फिर यह सिद्ध कर दिया कि उत्तर प्रदेश पुलिस नागरिकों की सेवा और सुरक्षा के लिए सदैव तत्पर है।

कार चालक महिला ने तीन को कुचला, एक की मौत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। लखनऊ में मदेयगंज थाना क्षेत्र स्थित शिया कॉलेज के सामने तनु गुप्ता नामक महिला ने कार चलाते हुए तीन लोगों को कुचल दिया। मंगलवार को शाम के समय हुई घटना में खदरा निवासी रविन्द्र पाण्डेय की मौत हो गयी। वहीं एक महिला एवं एक बच्चा बुरी तरह जख्मी है।

मौके पर पहुंचें मदेयगंज थाना के प्रभारी निरीक्षक राजेश ने बताया कि मंगलवार को शिया कॉलेज के सामने तेज रफ्तार ब्रेजा कार ने सड़क किनारे खड़े तीन लोगों को रौंद दिया। घटना के तुरंत बाद पहुंची पुलिस टीम ने तत्काल ही तीनों लोगों को मेडिकल कॉलेज भेजवाया। जहां उपचार के दौरान रविन्द्र पाण्डेय की मौत हो गयी। वहीं एक बच्चा जो बुरी तरह से घायल है, उसे चिकित्सकों ने ट्रामा सेंटर रेफर कर दिया। एक भीख मांगने वाली महिला

भी घायल हुई है, जिसका उपचार चल रहा है।

उन्होंने बताया कि घटना के बाद सआदतगंज निवासी तनु गुप्ता को हिरासत में ले लिया गया एवं कार को कब्जे में लेकर दोनों को थाना लाया गया। थाने पर तनु गुप्ता से पूछताछ की जा रही है। घटना के संबंध में पुलिस को तहरीर मिलने पर मुकदमा लिखकर आगे की कार्यवाही की जायेगी। इस हादसे में दो लोग प्रत्यक्षदर्शी के रूप में भी मिले है। जिनसे पुलिसकर्मियों ने पूछताछ की है।

दबंगो ने घर में घुसकर महिलाओं से की गाली-गलौज

दुबग्गा लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। के बरावन कला में गलती से युवक की गाय खेत में चली गई थी, इससे नाराज सोमवार देर रात दबंगो ने घर मे घुसकर महिलाओं से गाली गलौज करते हुए घर के बाहर बंधी भैंसों को खोलकर भगा दिया,पीड़ित की तहरीर पर पुलिस जांच पड़ताल में जुट गई। विपिन यादव बरावन कला के मुताबिक गलती से उसकी गाय अमन के खेत मे चली गई थी,इससे नाराज गांव के ही दबंग अमन, आकाश, विकास, अंश गुप्ता सहित कई लोग सोमवार रात करीब 11 बजे घर मे घुस कर घर की महिलाओं से गाली गलौज करते हुए घर के बाहर बंधी छ भैंसों को खोलकर भगा दिया जिससे वह लापता हो गई थी, बिपिन ने बताया कि काफी खीजने के बाद चार भेंसे वापस आ गई है और दो भेंसे नही मिली है,पीड़ित बिपिन घर पर नही था इससे दबंग उसे खोजते हुए घर के कुछ दूरी पर हरि मजार के पास पकड़ कर उसकी सरिया और लाठी डंडो से पिटाई कर दी,और दबंगो ने किसी को कुछ न बताने के बात कहते हुए जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकले।बिपिन ने बताया कि गाय को दबंगों ने लाठी डंडो से काफी मारा पीटा था जिससे उसकी मौत हो गई है। इस संबंध में इंस्पेक्टर अभिनव कुमार वर्मा ने बताया की गाय की तबियत पहले से खराब थी जिसके चलते उसकी मौत हुई है, जांच पड़ताल कर कार्यवाही की जाएगी।

ज्यादा निवेश के लिए विकसित होगा आईटी सिटी : मंत्री सुनील शर्मा

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक्स मंत्री सुनील कुमार शर्मा ने मंगलवार को कहा कि लखनऊ में सुल्तानपुर राष्ट्रीय राजमार्ग व किसान पथ के बीच 2,858 एकड़ में आईटी सिटी बसेगी। आईटी सिटी को ऐसे विकसित किया जाएगा, जिससे ज्यादा से ज्यादा निवेश आए। मंत्री सुनील शर्मा ने आगे कहा कि योजना के अंतर्गत 188 एकड़ में सेंट्रल पार्क और गोल्फ कोर्स भी बनेगा। इसके लिए ग्रीन बेल्ट की जमीन चिह्नित की जा रही है। दो लाख से अधिक लोगों को यहां आवासीय सुविधा मिलेगी। करीब 445 एकड़ में औद्योगिक क्षेत्र एवं व्यावसायिक गतिविधियों के लिए लिया गया है। औद्योगिक क्षेत्र से रोजगार के अवसर बढ़ेगें। उन्होंने कहा कि लखनऊ में बन रही आईटी सिटी का जमीन पर काम शुरू हुआ है, अगले कुछ महीनों में कार्य को पूर्ण करने की योजना है। इसके लिए अंतिम तिथि दीपावली 2025 रखा गया है। फिर भी आईटी सिटी के काम को और पहले पूरा कराने पर जोर दिया जायेगा

सांसद ने क्षेत्र में आयोजित भंडारों में पहुंचकर लिया प्रसाद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सरोजनीनगर-लखनऊ। बड़े मंगल के शुभ अवसर पर जिले में आयोजित विभिन्न भंडारों में समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल एवं सांसद आर के चौधरी के साथ भंडारों में पहुंच कर प्रसाद ग्रहण किया। ओमेक्स सिटी में पप्पू यादव, नौरंगा बाद में पार्षद प्रमोद यादव, ईश्वरी खेड़ा में अखिलेश रावत,उतरेठिया में विनय लोधी, न्यू गरौरा में अखिलेश सक्सेना, गौरी बाजार में शैलेन्द्र यादव टुल्लू, दरोगा खेड़ा राजेश गौतम, चक में रंजीत पाल द्वारा आयोजित भंडारा में पहुंच कर प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर जिला अध्यक्ष जय सिंह जयंत, जिला महासचिव शब्बीर अहमद खान, जिला उपाध्यक्ष बचान सिंह

यादव, जिला अध्यक्ष पिछड़ा वर्ग मनोज पाल, मोनू पाल, अरविंद यादव, सुरेन्द्र यादव, उमेश यादव, ऋषभ शर्मा, आदित्य , सौरभ यादव, समेत कई जिम्मेदार नेता साथ में मौजूद रहे।

पनीर में टाइटेनियम डाई आक्साइड मिलाकर बेच रहे मुनाफाखोर : खाद्य सुरक्षा आयुक्त

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन के आयुक्त राजेश कुमार ने कहा कि पनीर में मिलावट कर मुनाफा कमाने वाले लोगों के लिए टाइटेनियम डाई आक्साइड बड़ा हथियार बन चुका है। मुनाफाखोर पनीर में टाइटेनियम डाई आक्साइड मिलाकर मिलावटी पनीर को उत्तर प्रदेश के बाजारों में बेच रहे है। इसकी जानकारी मिलने के बाद खाद्य सुरक्षा विभाग की टीमें सक्रिय हुई हैं और कई जगहों पर ऐसे मिलावटी पनीर की जांच कर उसे जब्त किया गया है। आयुक्त राजेश कुमार ने हिन्दुस्थान समाचार से कहा कि लोगों ने भोजन में पनीर के उपयोग को बेहद पसंद किया है और इसके कारण पनीर की मांग बाजारों में बढ़ी रहती है। उत्तर प्रदेश में पनीर को लगभग तीस सौ रूपये से चार सौ रूपये तक के रेट से बेचा जाता है। जो पनीर डेढ़ सौ या दो सौ रूपये का बिक रहा है, उसमें मिलावट की सम्भावना बेहद ज्यादा होती है। लोगों को अच्छी गुणवक्ता वाली पनीर का सेवन करना चाहिए। बाजार में मिलावटी पनीर दिखने पर

इसकी सूचना विभागीय अधिकारियों को देनी चाहिए। खाद्य सुरक्षा आयुक्त ने कहा कि बीते दिनों विभागीय अधिकारियों ने मिलावटी पनीर को पकड़ा है और जिसके बाद पनीर में बड़े पैमाने पर टाइटेनियम डाई आक्साइड मिलाये जाने की जानकारी हुई है। दूध को पनीर बनाने की प्रक्रिया के दौरान टाइटेनियम डाई आक्साइड का उपयोग कर पनीर की गुणवक्ता घटायी जाती है, वहीं पनीर का वजन बढ़ जाता है। जिसका आम लोगों की सेहत पर असर पड़ता है। जो पनीर खाने योग्य नहीं बचता है।

हनुमानगढ़ी प्रांगण में आयोजित हुआ विशाल भंडारा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। भारतीय जनता पार्टी के जिला अध्यक्ष राजेश शुक्ला द्वारा ज्येष्ठ माह के चतुर्थ मंगलवार के पावन अवसर पर नैमिषारण्य तीर्थ स्थित हनुमानगढ़ी के प्रांगण में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। इस अवसर पर सर्वप्रथम उनके द्वारा प्रभु का पूजन अर्चन किया गया साथ ही साधु संतों बटुकों व भक्त गणों ने भगवान का प्रसाद ग्रहण किया इस अवसर पर जिला अध्यक्ष राजेश शुक्ला ने बताया कि हमारे लिए गौरव का विषय है कि प्रभु के श्री चरणों में आज हम सब प्रसाद ग्रहण कर रहे हैं उन्होंने कहा मैं प्रभु से राष्ट्र के कल्याण एवं सभी देशवासियों की संपन्नता की कामना करता हूं। इस अवसर पर राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष निवर्तमान सांसद राजेश वर्मा, विधायक ज्ञान तिवारी, विधायक रामकृष्ण भार्गव, निवर्तमान विधायक सुनील वर्मा सहित पार्टी के पदाधिकारी कार्यकर्ता व भारी संख्या में भक्तगण उपस्थित रहे।

तहसील परिसर स्थित प्राचीन शिव मंदिर पर भंडारे का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बिसवां (सीतापुर)। बिसवां तहसील परिसर स्थित प्राचीन शिव मंदिर पर मंगलवार को बिसवां लॉयर्स एसोसिएशन की ओर से बड़े मंगलवार के पावन अवसर पर भंडारे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान श्रीराम, बालाजी महाराज एवं नीम करौरी बाबा के चित्र पर माल्यार्पण व पूजन-अर्चन के साथ हुई। इसके उपरांत सामूहिक हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सिविल जज कुंवर दिव्यदर्शी, उप जिलाधिकारी मनीष कुमार, पुलिस क्षेत्राधिकारी सतीश चंद्र शुक्ला, तहसीलदार उमाशंकर त्रिपाठी और नायब तहसीलदार विनोद शर्मा ने भाग लिया। अतिथियों ने पूजन के बाद प्रसाद ग्रहण किया।भंडारे का आयोजन संघ अध्यक्ष कमलेंद्र कुमार बाजपेई व सचिव सत्य प्रकाश सिंह की अगुवाई में संपन्न हुआ। इस अवसर पर संघ के वरिष्ठ अधिवक्ताओं में लालजी वर्मा, बृजेश नारायण गुप्ता, मन्नालाल बाजपेई, सुरेश चंद्र मौर्य, ओम प्रकाश वर्मा, सर्वेश मोहन श्रीवास्तव, रविंद्र नाथ सिंह, दिनेश श्रीवास्तव, राजेश सिंह, रजनीश कुमार मिश्रा, ललित प्रकाश शर्मा, संतोष कठेरिया, संकटा प्रसाद शुक्ला, वीरेंद्र शुक्ला, आनंद मेहरोत्रा और ओंकार नाथ तिवारी सहित अनेक अधिवक्ता, न्यायिक व राजस्व कर्मचारी, वादकारी और आमजन उपस्थित रहे। सभी ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण कर पुण्य लाभ प्राप्त किया। आयोजन में श्रद्धा, समर्पण और सौहार्द का वातावरण देखने को मिला।

मोहल्ला शुजावलपुर में भंडारे का आयोजन

खैराबाद सीतापुर। मोहल्ला शुजावलपुर में रविवार को एक भव्य भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया और प्रसाद ग्रहण किया। यह आयोजन ग्राम सहरिया एवं खैराबाद के समाजसेवी युवाओं के आपसी सहयोग और समर्पण से संपन्न हुआ। इस आयोजन में प्रमुख रूप से चंद्रावल मौर्य, धर्मेंद्र मौर्य, रिंकू मौर्य, सुशील, अंबुज मौर्य, महेंद्र, अमन मौर्य, सत्यम जयसवाल, निशांक जायसवाल, शुभ जयसवाल, दर्शिका जायसवाल, संजय जयसवाल सहित अन्य सहयोगियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। सभी ने तन, मन और धन से कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया। भंडारे में श्रद्धालुओं के लिए भजन-कीर्तन की व्यवस्था भी की गई थी, जिससे पूरे माहौल में भक्तिमय ऊर्जा व्याप्त हो गई। आयोजन समिति ने बताया कि इस तरह के सामूहिक प्रयासों से समाज में आपसी भाईचारे और मेल-जोल की भावना मजबूत होती है। भंडारे में आए श्रद्धालुओं ने भी इस आयोजन की सराहना की और कहा कि ऐसे धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों से न केवल परंपराएं जीवित रहती हैं, बल्कि नई पीढ़ी को भी संस्कारों से जोड़ने में मदद मिलती है।

तीन दिवसीय वार्षिक उर्स में सैय्यद हबीब अनवर कलंदर का 247वां उर्स संपन्न

हमें आपसी भाईचारा बनाए रखने के साथ-साथ मेल मोहब्बत रखना अनिवार्य है: सैय्यद तरीक अहमद किरमानी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

खैराबाद'सीतापुर। स्थानीय दरगाह कलंदरिया दादा मियां में सैय्यद हबीब अनवर कलंदर का 247वा वार्षिक उर्स 2 जून से शुरू होकर आज समाप्त हो गया तथा आपके पौत्र हज़रत सैय्यद मक़बूल मियां का 67 वा उर्स शुरू हो गया।उक्त अवसर पर रात के समय कव्वाली हुई और चादर पेश की गई जबकि 3 जून को प्रातः कुरान ख्वानी हुई और पूर्वान्ह हज़रत सैय्यद हबीब अनवर कलंदर उर्फ़ दादा मियां का कुल शरीफ़ हुआ इसी रात दादा मियां के पौत्र हजरत सैय्यद मकबूल अनवर कलंदर के 67 वें उर्स के सिलसिले में सांय काल मीलाद शरीफ़ तत्पश्चात महफिल ए समा हुई और कल 4 जून को प्रातः कुरआन ख्वानी तथा 10 बजे से कव्वाली शुरू होंगी और दोपहर में मकबूल मियां शाह का कुल शरीफ होगा।दादा मियां की महफिले उर्स के अवसर पर दरगाह के सज्जादा नशीन सैय्यद तरीक अहमद किरमानी ने कहा कि हमें आपसी भाई चारा कायम रखना चाहिए और आपस में मेल मिलाप और मोहब्बत स्थापित करना चाहिए तभी अच्छे समाज का निर्माण हो सकता है।दादा मियां की शब के अवसर पर उपस्थित सज्जादगान में सैय्यद तरीक अहमद किरमानी, नजमुल हसन शोएब किरमानी,सैय्यद लईक अहमद किरमानी, सैय्यद वसीक मियां,सैय्यद खुर्शीद किरमानी, सैय्यद इमरान किरमानी,हाफिज सैय्यद शाकिर किरमानी,हाफिज सैय्यद ताहिर किरमानी,सैय्यद इंतेसाब किरमानी जुगनू, जूनू किरमानी, सैय्यद तालिब किरमानी, सैय्यद अफ़जाल मियां,सैय्यद साकिब किरमानी, सैय्यद तारिक़ किरमानी,पूर्व पालिका अध्यक्ष इस्तेफ़ा अली खान,मौलाना अकील अहमद, इशरत अली चिश्ती,इमरान सिद्दीकी, क़ारी हसन साक़िब तय्यब उस्मानी,सैय्यद अंसार मियां, सैय्यद रिज़वान मियां, सैय्यद शोएब किरमानी,वगैरह मौजूद रहे।

बंदरों के उत्पात से गिरी मकान की रेलिंग, बड़ा हादसा टला

घटनास्थल का थाना अध्यक्ष ने कराया निरीक्षण तथा अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्त के द्वारा वार्ड सभासद को मौके पर भेज कर लोगों को सजग किया गया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

खैराबाद। मोहल्ला अर्जुनपुर नया बाजार में स्थित एक मकान की छत पर रखी हुई पानी की टंकी को कई बंदरों के द्वारा हिलाने पर वह मकान की छत पर बनी रेलिंग पर जा गिरी जिस की रेलिंग सड़क पर ढह गई सुबह 6:30 बजे घटित हुई ही इस हादसे में गनीमत यह रहे की लोग प्रातः काल से ही सड़क से निकालना प्रारंभ कर देते हैं जब रेलिंग टूट कर गिरी सब मौके पर कोई नहीं था अन्यथा बहुत बड़ा हादसा कर सकता था नगर पालिका परिषद अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्त तथा अधिशासी अधिकारी प्रेम शंकर गुप्त को घटना की जानकारी दी गई मौके पर वार्ड सभासद राकेश चंद्रगुप्त तथा कस्बा इंचार्ज अवधेश यादव के द्वारा घटना स्थल पर उपस्थित होकर तत्काल मकान मालिक को सूचना दी गई मौके पर दिवंगत आफाक कंसारी के सुपुत्र नेक आलम जुबैस अंसारी तुरंत मौके पर उपस्थित हुए तथा छत पर जाकर शेष मकान की छत पर स्थित रेलिंग तत्काल हटाई गई। विदित हो कि मैंगो बेल्ट घोषित खैराबाद में बागो की अंधाधुंध कटाई का कार्य जोरों पर है जिसके कारण इन बागो पर रहकर अपना जीवन यापन करने वाले बंदरों के सामने बस्ती में आने के सिवा कोई भी विकल्प नहीं बचा है तथा बंदरों के द्वारा प्रतिदिन बस्ती में आकर उत्पात किया जा रहे हैं जिससे कि यहां के लोग काफी भयभीत है कि बंदर कही हमला न कर दें। कुछ लोगों ने तो अपने घरों के ऊपर जाल लगवाया है जिससे कि बंदर प्रवेश न कर सके इस संबंध में नगर पालिका के अधिशासी अधिकारी प्रेम शंकर गुप्त ने बताया कि नगर क्षेत्र में जिन जिन जीर्ण-शीर्ण मकान पर बने छज्जो तथा मकान का सर्वे कराया जाएगा तथा संबंधित को नोटिस भेज कर तत्काल मकान को दुरुस्त करने हेतु निर्देशित किया जाएगा। वन विभाग को सूचना भेज दी गई है जो की बंदरों को पकड़ने हेतु अपने ढंग से कार्य करेंगे। स्थानीय नागरिक आदित्य जयसवाल राम प्रसाद दिलशाद दिलीप जायसवाल सोनू जायसवाल सीतांशु जायसवाल गीता देवी माही प्रवीण मिश्र देवेंद्र मिश्र आज आदि ने पालिका अध्यक्ष श्रीमती बेबी गुप्ता तथा अभिषेक गुप्त से इस घटी घटना को गंभीरता से संज्ञान में लेते हुए आवश्यक कार्रवाई करने की मांग की है ताकि भविष्य में इस तरीके की घटना की पुनरावृत्ति ना हो।

धोपाप धाम में आयोजित राम कथा में उमड़ा जन सैलाब

भाजपा एवं व्यापारी नेता रवीन्द्र त्रिपाठी के संयोजन में धोपाप धाम में हो रही है राम कथा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लंभुआ/सुलतानपुर। तहसील अंतर्गत तीर्थ स्थल धोपाप में राम कथा का गायन करते हुए अंतर्राष्ट्रीय कथावाचक दिलीप कृष्ण भारद्वाज ने श्रद्धालु श्रोताओं को धनुष भंजन एवं राम सीता विवाह का प्रसंग सुनाते हुए बताया कि राम और सीता का मिलन सर्वप्रथम पुष्प वाटिका में होता है. जहां सीता जी राम जी को देखकर मन ही मन उन्हें पसंद कर बैठती हैं। देवी पार्वती के समक्ष उन्हें अपने पति के रूप में पाने का आशीर्वाद मांगती हैं. जब सीता का स्वयंवर होता है तो राजा जनक एक शर्त रखते हैं। वह सीता का विवाह उसी से करने की बात कहते हैं जो शिव धनुष को उठा सकता हो।

बचपन में जब सीता जी ने खेल-खेल में शिव धनुष को उठा लिया, तो सभी इस दृश्य को देख कर अचंभित रह जाते हैं। उस धनुष को कोई भी साधारण व्यक्ति हिला नहीं पाया था, सीता जैसी छोटी सी बालिका ने उसे आसानी से उठा लिया होता है. तब राजा जनक प्रण(वचन) करते हैं की वह अपनी पुत्री सीता का विवाह उसी से करेंगे जो इस धनुष को उठा सकने का सामर्थ्य रखता हो। सीता के विवाह योग्य होने पर, राजा जनक ने सीता के स्वयंवर की घोषणा कर देते हैं. पृथ्वी के सभी राजाओं को संदेश भेजा जाता है. वहीं दूसरी और वन गमन करते समय ऋषि विश्वामित्र को राजा जनक द्वारा भेजा गया निमंत्रण प्राप्त होता है. ऋषि विश्वामित्र जी, राम-लक्ष्मण के साथ जनकपुरी में राजकुमारी सीता के स्वंयवर में भाग लेने के लिए पहुंचते हैं. राम सीता की प्रथम भेंट एक पुष्पवाटिका में होती है और पुनः स्वयंवर में राम का आना एक अद्भुत घटना ही होती है. सीता स्वयंवर में रखी गई शर्त के अनुसार सभी राजा एक-एक करके अपने पराक्रम को दिखाने के लिए उस धनुष को उठाने के लिए आते हैं. परंतु शिव धनुष को कोई भी राजा नहीं उठा पाता है और न ही प्रत्यंचा चढ़ा पाता है. फिर सभी राजा एक साथ मिलकर धनुष को उठाने का प्रयत्न करते हैं तुरंत धनुष को हिला भी नहीं सके। राजा जनक इस स्थिति को देख कर अत्यंत ही निराश हो जाते हैं. उनके मुख से कठोर वचन निकलते हैं. वह कहते हैं की इस सभा में कोई भी योग्य व्यक्ति नहीं है जो इस धनुष को उठा सके. जिस पर लक्ष्मण जी को क्रोध आ जाता है और वे जनक जी से कहते हैं कि जब तक सभा में एक भी रघुवंशी बैठा है तब तक आपको यह बातें कहते हुए शोभा नहीं देती है। राजा जनक के वचन सुन कर श्री राम जी अपने गुरु की आज्ञा को पाकर धनुष को उठाने के लिए जाते हैं। भगवान राम को शिव जी के धनुष को उठा कर प्रत्यंचा चढ़ाने लगते हैं तो धनुष टूट जाता है.धनुष के टूटने के साथ ही राम सीता जी के साथ विवाह बंधन में बंधते हैं. धनुष भंजन एवं राम विवाह के सुंदर प्रसंग को सुनकर श्रोता झूम उठे उपस्थित श्रद्धालु मातायें नाचने लगी पूरा धोपाप धाम राम मय हो गया।

जेठ माह के चौथे बड़े मंगल पर हुआ भव्य भंडारे का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। जेठ माह के चौथे बड़े मंगल पर शहर और ग्रामीण अंचलों विशाल भंडारे का आयोजन किया गया जगह जगह स्टॉल लगाकर लोगों को प्रसाद वितरण किया गया। साथ ही भगवान हनुमान की पूजा अर्चना की गई। सभी जगह हनुमानजी की पूजा अर्चना करके उन्हें प्रसाद का भोग लगाया गया। ग्राम रामपुर निजामपुर में भव्य भंडारे का आयोजन किया गया।जिसमे सैकड़ो श्रद्धालुओं ने प्रसाद पाया भंडारे मुख्य आयोजक अतुल कुमार राठौर ''छोटा'', नगर पालिका खैराबाद अध्यक्ष प्रतिनिधि अभिषेक गुप्ता ''बबलू'' , नवनीत दीक्षित , कृष्ण कुमार यादव ''काजू'' प्रधान प्रतिनिधि सेनपुर , अनूप राठौर , पवन राठौर , रोहित दीक्षित आदि सैकड़ो की संख्या में लोग उपस्थित रहे।

तालाब की भूमि पर अवैध कब्जा से बारिश में गिर सकता है गरीबों का आशियाना

ग्राम पंचायत मिर्ज़ागढ़ के आक्रोशित ग्रामीणों ने राज्यमंत्री से लगाई न्याय की गुहार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

तिलोई अमेठी। क्षेत्र की ग्राम पंचायत मिर्ज़ागढ़ के ग्रामीणों ने सरकारी अभिलेखों में तालाब के नाम अंकित भूमि से अवैध कब्जा हटवाये जाने की मांग को लेकर राज्यमंत्री व क्षेत्रीय विधायक से न्याय की गुहार लगाई है। ग्रामीणों की मानें तो बारिश के पानी में जलनिकासी की समस्या से मकान गिरने की संभावना बनी रहती है लेकिन राजस्व महकमा कुम्भकर्णी नींद में सो रहा है। विकास खण्ड सिंहपुर की ग्राम पंचायत मिर्ज़ागढ़ के सरकारी अभिलेखों में तालाब के नाम अंकित भूमि गाटा संख्या 717 पर गांव के ही दंबगों द्वारा अवैध तरीके से मिट्टी डालकर पाट लिया गया है जिससे बरसात का पानी निकलने में समस्या उत्पन्न हो रही है। गांव मिर्ज़ागढ़ निवासी राम प्रसाद, श्याम बिहारी, नसीर अहमद,मोहम्मद इलियास, फकीर मोहम्मद सहित अन्य तमाम ग्रामीणों ने क्षेत्रीय विधायक व राज्यमंत्री राजा मयंकेश्वर शरण सिंह को सौंपे गये पत्र में लिखा है कि ग्राटा संख्या 717 राजस्व अभिलेख में तालाब दर्ज है इस तालाब में समस्त ग्रामवासियों के घर का पानी जाता था उक्त तालाब को चारों तरफ से पाट दिया गया है जिससे घरों का पानी एवं बारिस का पानी भरने के कारण मकान गिरने का भय बना रहता है। ग्रामीणों द्वारा कई बार मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत की गई लेकिन नतीजा शून्य साबित हुआ। ग्रामीणों की मानें तो काफी सिफारिश के बाद हल्का लेखपाल द्वारा चिन्हाकन तो कर दिया गया है किन्तु अभी तक समस्या का निस्तारण नही किया गया है। ग्रामीणों ने उक्त तालाब को अवैध कब्जा मुक्त कराकर खुदाई करवाने की मांग की गई है। राज्यमंत्री राजा मयंकेश्वर शरण सिंह ने ग्रामीणों की शिकायत को गम्भीरता से लेते हुये उपजिलाधिकारी को आवश्यक कार्यवाही किये जाने का निर्देश दिया गया है। उपजिलाधिकारी अमित सिंह ने स्थानीय पुलिस के साथ ही राजस्व निरीक्षक और लेखपाल को उक्त तालाब से अवैध कब्जा हटवाये जाने का निर्देश दिया गया है लेकिन सोमवार की देर शाम तक राजस्व महकमे को अवैध कब्जा हटवाये जाने की फुरसत नही मिली। अब देखना यह है कि तहसील प्रशासन की कुम्भकर्णी नींद कब टूटती है यह भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है।

मैगलगंज में चोरी की वारदात लाखों के जेवरात और नकदी पर हाथ साफ

लखीमपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। मैगलगंज कोतवाली के पास बीती रात एक घर को चोरों ने निशाना बना लिया। चोरों ने घर में घुसकर लाखों रुपये के जेवरात और नकदी चोरी कर ली। वारदात के बाद पूरे इलाके में सनसनी फैल गई है। घटना के बाद सुबह जब ग्रामीणों ने घटनास्थल के आसपास गतिविधि देखी तो दो संदिग्ध युवकों को वहां पैरों के निशान मिटाते हुए देखा गया। ग्रामीणों ने सतर्कता दिखाते हुए दोनों युवकों को पकड़ लिया और तत्काल पुलिस को सूचना दी। सूचना पर पहुंची पुलिस दोनों संदिग्धों को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। मौके पर फॉरेंसिक टीम को भी बुलाया गया है, जो सबूतों की जांच कर रही है। ग्रामीणों का कहना है कि क्षेत्र में लगातार चोरी की घटनाएं बढ़ रही हैं और पुलिस गश्त को और मजबूत किए जाने की जरूरत है।

ककरहा में युवती की रहस्यमय मौत

लखीमपुर खीरी कैनविज टाइम्स संवाददाता। थाना मैगलगंज क्षेत्र के अंतर्गत ग्राम ककरहा में उस समय हड़कंप मच गया जब गांव के बाहर गन्ने के खेत में एक युवती का शव संदिग्ध परिस्थितियों में पड़ा मिला। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। प्राथमिक जानकारी के अनुसार, युवती को मिर्गी की बीमारी थी, और आशंका जताई जा रही है कि दौरा पड़ने के दौरान समय पर दवा न मिलने से उसकी मौत हुई है। हालांकि मौत की असली वजह पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही स्पष्ट हो सकेगी। घटना की खबर फैलते ही ग्रामीणों की भीड़ मौके पर जुट गई। शव गन्ने के खेत में मिलने से संदेह और चर्चा का माहौल बन गया है। पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और परिजनों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि हर पहलू से मामले की पड़ताल की जा रही है। जरूरत पड़ने पर फोरेंसिक टीम भी बुलाई जा सकती है।

तालाब में नाव पलटने से दो युवक डूबे, एक की मौत, दूसरा गंभीर

लखीमपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। खीरी जिले के पढ़ुआ थाना क्षेत्र में मंगलवार को एक बड़ा हादसा हो गया। सेमरा गांव के पास स्थित भाखर ताल में नाव पलटने से नाव पर सवार दो युवक पानी में डूब गए। हादसे के बाद मौके पर चीख-पुकार मच गई। ग्रामीणों और परिजनों ने तत्परता दिखाते हुए दोनों युवकों को तालाब से बाहर निकालकर नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र (सीएचसी) पहुंचाया। चिकित्सकों ने जांच के बाद एक युवक को मृत घोषित कर दिया, जबकि दूसरे की हालत गंभीर देखते हुए उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया है। मृतक की पहचान मोहम्मद कैफ पुत्र मोबीन के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि कैफ बाहर रहकर नीट (नक्कइ) की तैयारी कर रहा था और कुछ दिनों की छुट्टी पर अपने घर आया हुआ था। ग्रामीणों में हादसे के बाद से शोक और दहशत का माहौल है। पुलिस प्रशासन ने मामले की जांच शुरू कर दी है।

संदिग्ध हालात में युवक का शव पेड़ से लटका मिला

मैगलगंज खीरी कैनविज टाइम्स संवाददाता। खीरी जनपद के थाना मैगलगंज क्षेत्र अंतर्गत फतेपुर चौकी के मुरादपुर गांव में उस वक्त सनसनी फैल गई जब गांव के बाहर एक पेड़ से एक युवक का शव संदिग्ध अवस्था में लटका मिला। मृतक की पहचान मूलचंद मिश्रा के रूप में हुई है, जो मुरादपुर गांव का ही निवासी बताया जा रहा है। सुबह ग्रामीणों ने शव को पेड़ से लटका देखा तो तुरंत इसकी सूचना पुलिस को दी। मौके पर पहुंची फतेपुर चौकी पुलिस ने शव को नीचे उतरवाकर पंचनामा भरते हुए पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस घटना की जांच में जुट गई है। अभी तक यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि यह आत्महत्या है या फिर किसी साजिश के तहत की गई हत्या। गांव में दहशत का माहौल है और ग्रामीण तरह-तरह की चर्चाएं कर रहे हैं। अधिकारियों का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट और जांच के बाद ही मौत के कारणों का खुलासा हो सकेगा।

मोहनगंज पुलिस ने लखनऊ से चोरी की गई दो बाइकों को किया बरामद

तिलोई अमेठी कैनविज टाइम्स संवाददाता। थाना मोहनगंज पुलिस ने लखनऊ से चोरी की गई दो अपाचे मोटर साइकिल के साथ दो शातिर अपराधियो को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने पकड़े गये शातिर अपराधियों के कब्जे से पचास ग्राम स्मैक एवं एक अदद तमंचा एक जिंदा कारतूस भी बरामद किया है। पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक के निर्देश पर थाना मोहनगंज की प्रभारी निरीक्षक राकेश कुमार सिंह मय हमराह द्वारा तलाश वांछित देखभाल क्षेत्र व चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु, वाहन के दौरान बिना नम्बर प्लेट दो मोटरसाइकिलों पर सवार व्यक्तियों को रोक कर नाम पता पूछा गया तो स्प्रेंद्र अपाचे मोटर साइकिल पर सवार व्यक्ति ने अपना नाम राहुल सिंह पुत्र शिव कुमार सिंह निवासी ग्राम सुब्बा सिंह का पुरवा मजरे मिश्रौली थाना जगदीशपुर जनपद अमेठी व काली अपाचे मोटरसाइकिल पर सवार व्यक्ति ने अपना नाम सोहन लाल पुत्र रामशंकर पासी निवासी ग्राम जमुरवा थाना मोहनगंज जनपद अमेठी वर्ष बताया।मोटर साइकिलों के कागज मांगने पर दिखा नहीं सके। पुलिस टीम द्वारा की गई तलाशी में राहुल सिंह के कब्जे से पचास ग्राम स्मैक व सोहन लाल के कब्जे से एक अदद तमंचा एक जिंदा कारतूस बरामद हुआ।

बीमार बच्चे को देख लौट रहे डूडा अधिकारी की सड़क हादसे में दर्दनाक मौत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखीमपुर खीरी। खीरी जिले में डूडा (जिला नगरीय विकास अभिकरण) के परियोजना अधिकारी (पी.ओ.) पद पर तैनात डॉ. अजय कुमार सिंह की एक सड़क हादसे में दर्दनाक मौत हो गई। यह हादसा सोमवार को सीतापुर जिले के परसेहरामाल इलाके में हुआ, जब वे अपने बीमार बच्चे को लखनऊ में देखकर वापस लौट रहे थे। गंभीर रूप से घायल डॉ. सिंह को अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। सूत्रों के अनुसार, डॉ. अजय कुमार सिंह रविवार को लखनऊ गए थे, जहां उनका बेटा बीमार होने के कारण अस्पताल में भर्ती था। बच्चे की तबीयत देखने के बाद वे सोमवार को कार से खीरी लौट रहे थे, तभी उनकी कार परसेहरामाल के पास दुर्घटनाग्रस्त हो गई।

इस दुखद समाचार से पूरा परिवार सदमे में डूब गया। डॉ. सिंह की पत्नी रेनू और बेटा आयुष्मान जब उनके निधन की खबर से अवगत हुए, तो मानसिक संतुलन खो बैठे। दोनों आत्महत्या की नीयत से लखनऊ के बख्शी का तालाब थाना क्षेत्र स्थित नेशनल हाईवे व रेलवे ट्रैक की ओर बढ़ रहे थे। राहगीरों ने समय रहते उनकी गतिविधियों पर संदेह कर उन्हें रोक लिया और मौके पर पुलिस को सूचित किया।

पुलिस ने मौके पर पहुँचकर माँ-बेटे को सुरक्षित अपने कब्जे में लिया और तत्काल परामर्श के लिए मनोवैज्ञानिक टीम से संपर्क किया गया। इस समय दोनों की मानसिक स्थिति अत्यंत नाजुक बनी हुई है।

डीएम ने जनपद में चल रहे निर्माण कार्यों की समीक्षा कर कार्य पूर्ण करने का दिया निर्देश

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अमेठी। जिलाधिकारी संजय चौहान ने आज कलेक्ट्रेट सभागार में अधिकारियों एवं कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधियों के साथ जनपद में निर्माणाधीन परियोजनाओं को लेकर समीक्षा किया। बैठक में जिलाधिकारी ने सभी कार्यदायी संस्थाओं को निर्देश दिया कि निर्माण कार्यों की गुणवत्ता पर विशेष ध्यान दें गुणवत्ता में किसी प्रकार की कमी नही होनी चाहिये इसे कार्यदायी संस्थाएं पूरी गम्भीरता से लें। उन्होंने समीक्षा बैठक के दौरान उपस्थित अधिकारियों व कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधियों को निर्देशित करते हुए कहा कि जिन परियोजनाओं के निर्माण कार्य हेतु धनराशि प्राप्त हो गई है उन परियोजनाओं का कार्य निश्चित समयावधि के अंतर्गत कार्यदायी संस्थाएं पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने कहा कि निर्माण कार्य शीघ्र पूरा करना तथा गुणवत्तापूर्ण एवं समय के अंदर कार्य पूर्ण किए जाएं। उन्होंने कहा कि निर्माण कार्यों में किसी भी प्रकार की लापरवाही कतई बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यदि निर्माण कार्य में किसी भी प्रकार की शिथिलता अथवा मानक विहीन व अनियमितता पाई जाती है तो संबंधित के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने कहा कि निर्माण में प्रयुक्त सामग्री की गुणवत्ता जांच के बाद ही निर्माण कार्य में प्रयुक्त किए जाएं। उन्होंने कहा कि जिन कार्यों को पूर्ण कराने में बजट की आवश्यकता हो उसके लिए शीघ्र अतिशीघ्र प्रस्ताव बनाकर शासन को भेजे जिससे कि कार्य में बाधा न उत्पन्न हो व निर्माण कार्य ससमय पूर्ण कराया जा सके। बैठक में जिलाधिकारी ने कार्यदायी संस्थाओं को निर्देश दिया कि जो परियोजनाएं पूर्ण हो गई हैं उनको संबंधित विभाग को हैंड ओवर कर दिया जाए। बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेल, मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. अंशुमान सिंह, अधिशासी अभियंता लोक निर्माण विभाग शैलेंद्र सिंह सहित अन्य संबंधित अधिकारी व कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

विकास और अपने हक–हुकूक को लेकर सदन तक करेंगे संघर्ष : मोहम्मद अफजल

दस सूत्री मांगों को लेकर विधानसभा के बाहर सभासदों ने किया पैदल मार्च, उठाई आवाज, सभासद ने सभासदों को बताया विकास की चॉभी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

आजमगढ़। सभासद अपने हक-अधिकारों में इजाफा और नगरीय विकास को लेकर लामबंद नजर आ रहे है। उत्तर प्रदेश सभासद एसोसिएशन(नगरीय निकाय) के बैनर तले प्रदेश उपाध्यक्ष व जिला योजना समिति के सदस्य मोहम्मद अफजल की अगुवाई में नगर विकास मंत्री एके शर्मा, सदर सांसद धर्मेंद्र यादव, विधायक दुर्गा प्रसाद यादव, नफीस अहमद, डा संग्राम यादव व एमएलसी शाह आलम गुड्डू जमाली आदि को पत्रक सौंपा जा चुका है। अपनी आवाज को और धार देने के लिए लखनऊ के ईको गार्डन में पहुंचकर एसोसिएशन पदाधिकारियो कें साथ-साथ मो अफजल ने विधानसभा के सामने पैदल मार्च किया और दस सूत्री मांग को सीएम दरबार तक पहुंचाया गया। इस दौरान उन्होंने कहाकि अपने-अपने मुहल्ले के विकास का जिम्मेदार सभासद होता है, ऐसे में उसके हाथों को मजबूत करके विकास की चाभी को सभासद के हाथों में दी जाए। अध्यक्ष और सभासद के कार्यशैली में विभिन्नता होने के कारण मुहल्ले का विकास थम जाता है इसी बात को लेकर सभासद अपने अधिकारो में बढ़ोत्तरी चाहता है ताकि सभासद जैसे महत्वपूर्ण पद के पास अपना कोष हो और क्षेत्र में विकास की गंगा बह सकें। सभासद मोहम्मद अफजल ने बताया कि हमारी दस सूत्री मांग पत्र में सभासदों की वार्षिक विकास निधि पैतीस लाख रुपये की जाए, प्रतिमाह सभासदों को 15 हजार रुपया मानदेय मिले, प्रदेश के निकायों में मेयर व चेयरमैन के विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लागू करने की सुविधा हो, प्रदेश के निकाय में डिप्टी मेयर उपाध्यक्ष, वाईस चेयर मैन का पद बहाल हो, प्रदेश के सभासद के आकस्मिक के निधन पर परिजनों को पचास लाख रुपए मिला, सभासदों को जनता के कार्य से अपने जिला मुख्यालय में आने-जाने हेतु रोडवेज व रेल का निःशुल्क पास पूरे पांच वर्षों तक दिया जाए, प्रदेश के सभासदों को अपने निकाय के सहायक अभियंता को विकास कार्य हेतु आगणन (स्टीमेट) बनाने हेतु सीधा आदेश देने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए, आउट सोर्सिंग कर्मचारी के चयन में निकाय के अध्यक्ष, ईओ के साथ सभासदों को भी शामिल किया जाये, एक लाख रुपए तक का विकास कार्य करने हेतु सभासदों को स्वतंत्र अधिकार मिले जिसमें अध्यक्ष का कोई हस्तक्षेप न रहे, प्रदेश के सभासदों को अपने वार्ड में गम्भीर रूप से बीमार हुए मरीज के इलाज हेतु मुख्यमंत्री राहतकोष से विधायको की भाँति सीधा पत्र-लिखकर धन उपलब्ध कराने का अधिकार मिले। इसी आवश्यक विषयों को लेकर सभासद आदोलित है और अपनी आवाज तो लगातार शासन तक पहुंचाने का कार्य कर रहे है। अगर हमारी मांगे पूरी नहीं हुई तो पुनः हम सड़क से लेकर सदन तक प्रदर्शन करने को बाध्य होंगे।

डीएम ने मुंशीगंज स्थित शहीद स्मारक स्थल पर चल रहे कार्यों का किया निरीक्षण

रायबरेली। जिलाधिकारी हर्षिता माथुर ने प्रमुख स्थलों के चल रहे सौन्दरीकरण कार्य के अंतर्गत मुंशीगंज स्थित शहीद स्मारक स्थल का निरीक्षण कर कार्य की गुणवत्ता देखीं। इस दौरान स्मारक स्थल के भीतरी एवं बाहरी भाग का भ्रमण कर वहां उपलब्ध व्यवस्थाओं का अवलोकन किया । संबंधित पदाधिकारी को शहीद स्मारक स्थल के दोनों भाग में बेहतर साफ-सफाई के अलावा समस्त परिसर का रंग-रोगन, बिजली, पानी आदि के बारे में उचित दिशा-निर्देश दिया। इसके अलावा सांस्कृतिक आयोजनों के अवसर पर संभावित भीड़भाड़ को देखते हुए वाहनों की पार्किंग, सुचारू यातायात, सुरक्षा व्यवस्था आदि के संदर्भ में भी आवश्यक निर्देश दिए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अमृता सिंह, प्रभारी पर्यटन अधिकारी सुरेश गिरी सहित संबंधित अधिकारी व कर्मचारी मौजूद रहे।

विश्व साइकिल दिवस के अवसर पर निकाली गई साइकिल रैली

रायबरेली। विश्व साईकिल दिवस के अवसर पर जिला खेल कार्यालय रायबरेली द्वारा साईकिल रैली का आयोजन किया गया। यह रेस मोतीलाल नेहरू स्पोर्टस स्टेडियम से होकर पुलिस लाईन चौराहे से वापस मोतीलाल नेहरू स्पोर्टस स्टेडियम तक आयीं। जिला क्रीड़ाधिकारी ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। जिला क्रीड़ाधिकारी धीरेन्द्र कुमार पुरूषोत्तम ने खिलाडियो को साईकिल रेस के माध्यम से व्यायाम महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार की आयोजनों का मुख्य उद्देश्य लोगों को स्वस्थ रहने का संदेश देना है। इस अवसर पर मुकेश कुमार क्रीड़ाधिकारी, बाबूलाल, नरेश कुमार निषाद, खेल प्रशिक्षक लीना सिह,श्रद्धा सोनकर, शोएब खान, पिन्कू कुमार, अश्वनी चन्द्रा व खिलाड़ी उपस्थित रहे।

जनपद में शुरू हुआ नाईट ब्लड सर्वे

पहले दिन रक्त के लिए गए 793 नमूने, पीएसपी सदस्य रक्त जाँच कराने में कर रहे लोगों को जागरूक, माइक्रो फाइलेरिया की दर जानने को हो रही जांच

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रायबरेली। राष्ट्रीय फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम के तहत जनपद के 15 ब्लाक में दो से सात जून तक नाईट ब्लड सर्वे (एन.बी.एस) चल रहा है जिसके तहत माईक्रोफ़ाइलेरिया की दर जानने के लिए लोगों के रक्त के नमूने लिए जा रहे हैं। इस क्रम में राही ब्लॉक के आयुष्मान आरोग्य मंदिर राही पर मंगलवार की रात 10 बजे नाइट ब्लड सर्वे शिविर आयोजित हुआ। पेशेंट स्टेकहोल्डर प्लेटफार्म (पीएसपी) के सदस्यों सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ), कोटेदार, आशा, आंगनबाड़ी, फाइलेरिया मरीजों के सहयोग से जागरूक कर शिविर में जांच के लिए लोगों को एकत्र किया गया। शिविर में 75 लोगों के रक्त के नमूने लिए गए।मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. नवीन चंद्रा ने बताया कि राही ब्लाक सहित जनपद के 15 ब्लाक में एन.बी.एस शुरू हुआ है। प्रत्येक ब्लॉक और अर्बन आरआई यूनिट में दो स्थल चुने गए हैं। एक रैंडम आधार पर और दूसरा ऐसा क्षेत्र जहाँ पहले फाइलेरिया के सर्वाधिक मामले सामने आए हों या फिर संक्रमण के लिए अनुकूल पर्यावरण वाले गाँव या मोहल्ले को प्राथमिकता दी गई है।राही आयुष्मान आरोग्य मंदिर में लगे शिविर में पीएसपी सदस्यों के सहयोग से प्रचार-प्रसार कराया गया है। अन्य जगहों पर भी पीएसपी के सदस्यों का सहयोग लिया जा रहा है। पीएसपी के सहयोग से कई लोगों ने एन.बी.एस.में अपनी जांच कराई है। एन.बी.एस. का मुख्य उद्देश्य फाइलेरिया के संक्रमण एवं माइक्रो फाइलेरिया की दर को जानना है। इससे यह पता चलेगा कि अमुक क्षेत्र में कितने लोगों में फाइलेरिया के परजीवी हैं। उन्होंने लोगों को बताया कि फाइलेरिया का परजीवी रात में ही सक्रिय रहता है इसीलिए इसका पता लगाने के लिए एन.बी.एस. कराया जाता है। एन.बी.एस. के परिणाम आने के बाद जहां पर फ़ाइलेरिया के केस निकलेंगे वहां पर सर्वजन दवा सेवन (आईडीए) अभियान चलेगा।

आईजीआरएस की शिकायतों के निस्तारण में जनपद का सातवां स्थान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

आजमगढ़। जनसुनवाई (आई0जी0आर0एस0) की शिकायत निस्तारण में जनपद-आजमगढ़ को सातवां स्थान प्राप्त हुआ। जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार-ऋ्क्ष के निर्देशन में एक बार फिर जनपद ने शासन की प्राथमिकता वाली समन्वित जन शिकायत निवारण प्रणाली (आई0जी0आर0एस0) पर दर्ज शिकायतों के निस्तारण में जनपद को सातवां स्थान मई में प्राप्त शिकायतों के निस्तारण करने पर प्राप्त हुआ है। आई0जी0आर0एस0 प्रणाली के अन्तर्गत जनसुनवाई पोर्टल शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता में शुमार है। जन सामान्य द्वारा की जाने वाली समस्त शिकायतों के समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के उद्देश्य से शुरू किये गये इस कार्यक्रम में जनपद माह मई में प्रदेश के समस्त जिलो में सातवां स्थान पर रहा। जिलाधिकारी महोदय द्वारा शिकायतो के डिफाल्टर प्राप्त होने पर सम्बन्धित अधिकारियों के अफसरो को कड़े निर्देश के साथ वेतन रोकने व प्रतिकूल प्रविष्टि देने के भी आदेश दिये। जिलाधिकारी द्वारा प्रतिदिन जनसुनवाई पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के निस्तारण की समीक्षा की जा रही है। जनपद में प्रत्येक कार्यदिवस जनता दर्शन आयोजित किया जाता है। जिलाधिकारी महोदय द्वारा जनशिकायतों के निस्तारण में शत प्रतिशत शिकायतकर्ताओं से वार्ता किये जाने एवं फीडबैक लिये जाने के निर्देश समस्त कार्यालयाध्यक्ष को पूर्व में दिये गये है। जनपद आजमगढ़ की इसके पूर्व रैंक माह अप्रैल में 38, मार्च-64 एवं फरवरी-66 रही है ।

जिलाधिकारी ने त्यौहारों को सकुशल शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराने को लेकर की बैठक

आजमगढ़। जिलाधिकारी रविंद्र कुमार-ऋ्क्ष की अध्यक्षता में वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री हेमराज मीना की उपस्थिति में आज कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी गंगा दशहरा, बकरीद एवं निकट भविष्य में पड़ने वाले त्यौहारों को सकुशल शांतिपूर्ण, भाईचारे, प्रेम, एवं सौहार्दपूर्ण माहौल में संपन्न कराने के लिए सभी उप जिलाधिकारी, सभी क्षेत्राधिकारी पुलिस, सभी थानाध्यक्ष,सभी खंड विकास अधिकारी, सभी विभागीय अधिकारी एवं जनपद के प्रत्येक थाना क्षेत्र से आए हुए पीस कमेटी के सदस्यों एवं संभ्रांत नागरिकों के साथ बैठक की गई। जिलाधिकारी ने कहा की सभी उप जिलाधिकारी एवं पुलिस विभाग के अधिकारी आपस में समन्वय स्थापित करते हुए पीस कमेटी की बैठक सुनिश्चित कर लें।जिलाधिकारी ने सभी खंड विकास अधिकारियों एवं नगर पालिका तथा नगर पंचायत के अधिशासी अधिकारियों एवं अन्य सभी संबंधित विभाग के अधिकारियों को गंगा दशहरा के दिन लगने वाले मेले / स्नान पर्व को देखते हुए सभी नदी एवं बड़े तालाबों के तटों पर स्थित घाटों एवं मंदिरों की साफ सफाई करने के निर्देश दिए।उन्होंने कहा कि घाटों पर जाने वाले मार्गो एवं मंदिर मार्गों की सफाई एवं चूना छिड़काव सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि नदी घाटों की गहराई को देखते हुए गोताखोर, रस्सी, नाव आदि की व्यवस्था स्नान वाले दिन सुनिश्चित करें, ताकि आवश्यकता पड़ने पर तत्काल प्रयोग में लाया जा सके। जिलाधिकारी ने कहा कि ईद उल अजहा (बकरीद) दृष्टिगत सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने के लिए धर्मगुरु, प्रबुद्धजनों एवं संभ्रान्त नागरिकों से सहयोग का आह्वान किया।

विकसित कृषि संकल्प अभियान अंतर्गत कृषकों एवं वैज्ञानिकों की बीच हुई परिचर्चा

जिले के करीब आधा दर्जन गांवों में शुरू किए गए विकसित कृषि संकल्प अभियान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

आजमगढ़। विकास खंड तहबरपुर और मिर्ज़ापुर के ग्राम सेमरी, ददरा भगवानपुर सरदहआ, खुटौली, फिरुद्दीनपुर ,परवेजाबाद में सरकार द्वारा शुरू किए गए विकसित कृषि संकल्प अभियान का दिनांक 03.06. 2025 दिन मंगलवार को संपन्न हुआ। जिसमें कृषि वैज्ञानिकों ने किसानों से संवाद कर उनकी समस्याओं का समाधान किया और आधुनिक कृषि तकनीकों की जानकारी दी। केवीके कोटवा के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ रणधीर नायक ने मृदा की उर्वरकता को बढ़ाने पर जोर दिया। उन्होंने पौधों के लिए आवश्यक पोषक तत्व (मैक्रो और माइक्रो न्यूट्रिएंट्स) के बारे में विस्तार से बताया। राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो कुसमौर, मऊ के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ हर्षवर्धन सिंह ने विभिन्न सूक्ष्मजीव पर प्रकाश डाला साथ ही साथ उन्होंने ट्राईकोडर्मा की उपयोगिता बताई ।

कृषि विज्ञान केंद्र की खाद्य प्रौद्योगिकी एवं प्रसंस्करण वैज्ञानिक डॉध सुमन देवी ने विभिन्न खाद्य उत्पादों के मूल्य संवर्धन कैसे करें इसके बारे में प्रकाश डालते हुए कृषकों को जानकारी उपलब्ध कराई। उन्होने फलों एवं सब्जियों से जैम, जेली, स्क्वैश, अचार, मुरब्बा बनाने की तकनीकी भी बताई। केवीके कोटवा के उद्यान वैज्ञानिक डॉ. विजय कुमार विमल ने आम में लगने वाले रोगों और कीटो के प्रबंधन के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला उन्होंने बागवानी में नई तकनीकी पर जोर डाला। कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) की सस्य वैज्ञानिक डॉ. दिव्या सिंह ने बताया कि हरी खाद, गोबर की खाद, ढँचा, मूंग और दलहनी फसलों को खेत में पलटने से मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ेगी, जिससे उत्पादन और गुणवत्ता में वृद्धि होगी। उन्होंने खरीफ की तैयारी, कीट-रोग नियंत्रण और कम लागत में अधिक मुनाफ़े की तकनीकों पर प्रकाश डाला और फसलों का टीकाकरण कर बोआई की सलाह दी द्य राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो कुसमौर, मऊ के वैज्ञानिक डॉ ज्योति प्रकाश सिंह ने राइजोबियम, एजोटोबैक्टर, एजोस्पाइरिलम, जैसे सूक्ष्मजीवों के उपयोग पर जोर दिया। साथ ही साथ उन्होंने कम्पोस्टिंग के विषय पर जानकारी दी। कृषि तथा संवर्गीय विभागों के उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपने विभागीय योजनाओं के विषय में विस्तृत जानकारी कृषकों को प्रदान की गयी।

अंबेडकर पार्क में योग मंच निर्माण के विरोध में बसपा नेताओं, कार्यकर्ताओं का धरना

डीएम पर पूर्व सांसद ने लगाया कार्यालय से भगाने का आरोप, जिलाधिकारी ने कहा हमें राजनीति से दूर रखें

कैनविज टाइम्स संवाददाताढ

आजमगढ़। शासन के निर्देश पर जिले में 3 पार्क में 15 जून से 21 जून तक अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर योग सप्ताह का कार्यक्रम आयोजित किया जाना है। इसे लेकर नगर पालिका द्वारा कलेक्ट्रेट क्षेत्र स्थित अंबेडकर पार्क में योगा मंच का निर्माण किया जा रहा है। मंच दक्षिणी तरफ छोटे गेट के पास हो रहा है। जानकारी होने पर बसपा के नेता और कार्यकर्ता विरोध किए। इस दौरान कार्यकर्ताओं ने निर्माण के लिए खोदे गए गड्ढे को मिट्टी गिराकर भरने का काम शुरू कर दिया। सूचना मिलते ही एसडीएम सदर नरेंद्र गंगवार, सीओ सिटी गौरव शर्मा और ईओ नगरपालिका विवेक त्रिपाठी पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंच गया। पुलिस और प्रशासन के पहुंचने पर कार्यकर्ता डा. बलिराम के नेतृत्व में धरने पर बैठ गए। समाचार लिखे जाने तक बसपा कार्यकर्ता धरने पर बैठे हैं और मौके पर पुलिस बल तैनात है।पूर्व सांसद डा. बलिराम ने बताया कि उन्हें मंच बनाए जाने की सूचना सोमवार की रात को ही मिल गई थी। उन्होंने इसके लिए डीएम को फोन किया था। मंगलवार को जब वह डीएम को ज्ञापन देने के लिए पहुंचे तो डीएम ने उन्हें आफिस से बाहर निकलने को बोला। पूर्व सांसद ने कहा हमारी मांग है कि पार्क को जैसे हैं वैसे ही रहने दिया जाए। अगर मंच बनाना है तो उसे अस्थायी बनाया जाए। उन्हें इससे कोई एतराज नहीं है। नगरपालिका ईओ विवेक त्रिपाठी ने बताया कि शासन की तरफ से नगरपालिका क्षेत्र के तीन पार्कों में योगा मंच के निर्माण का निर्देश मिला है। जिसके क्रम में इसका निर्माण कराया जा रहा है। जो लोग विरोध कर रहे हैं उनसे वार्ता की जा रही है। कार्य जारी है। इस संबंध में डीएम रविंद्र कुमार ने कहा कि शासन के निर्देश पर इस कार्य को कराया जा रहा है। यह एक स्थायी निर्माण है। हमको राजनीति से दूर रखिए। हम शासन के निर्देशों का पालन कर रहे हैं। ईओ ने बताया कि यह अस्थाई निर्माण है और मंच का आकार अब छोटा कर दिया गया है।

42 वर्षीय किसान की धारदार हथियार से निर्मम हत्या

कैनविज टाइम्स संवाददाता

महराजगंज,रायबरेली। खेत में काम करने गए 42 वर्षीय किसान की धारदार हथियार से निर्मम हत्या कर दी गई। घटना की सूचना मिलते ही आनन फानन मौके पर पहुंची कोतवाली पुलिस व फोरेंसिक टीम ने घटनास्थल का मौका मुआयना कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जैसे ही हत्या की सूचना ग्रामीणों सहित क्षेत्र वासियों को हुई वैसे ही ग्रामीणों की भीड़ इकट्ठा होने लगी और कोतवाली प्रभारी द्वारा घटना की सूचना अपने जिले के आला अधिकारी पुलिस अधीक्षक डॉ यशवीर सिंह को दी आनन फानन पुलिस अधीक्षक डॉ यशवीर सिंह दलबल के साथ मौके पर पहुंचकर गहनता से जांच पड़ताल की और परिजनों से जानकारी ली। वहीं उपस्थित पत्रकारों को संबोधित करते हुए पुलिस अधीक्षक डॉ यशवीर सिंह ने कहा कि जल्द ही हत्या करने वाले अज्ञात हत्यारो को गिरफ्तार कर जेल की सलाखों के पीछे भेजा जाएगा और ऐसे जधन्य अपराध को कारित करने वाले अपराधी जेल के सलाखों के पीछे होंगे बताते चलें कि महराजगंज कोतवाली क्षेत्र के कपूर पुर मजरे जमुरावा गांव के पास हलोर गांव निवासी किसान तेज बहादुर चौधरी पुत्र माता प्रसाद उम्र 42 वर्ष प्रतिदिन की भांति आज सुबह 8 बजे गांव पर स्थित अपने ट्यूबवेल के नजदीक खेतों पर काम करने के लिए घर से निकला था तभी अज्ञात हत्यारे ने धारदार हथियार से गले पर वार कर दिया । तेज बहादुर की मौके पर ही मौत हो गई राहगीरों द्वारा जानकारी मिलने पर परिजन व ग्रामीण ट्यूबवेल पर पहुंचे तो देखा कि खून से लतपथ तेज बहादुर का शव मौके पर पड़ा है और तेज बहादुर की जीवन लीला समाप्त हो गई जिसकी सूचना ग्राम प्रधान रिंकू चौधरी द्वारा कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव को दूरभाष पर दी गई घटना की सूचना फैलते ही हड़कंप मच गया और आनन फानन कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव दलबल के साथ घटनास्थल पर पहुंचे तथा थोड़ी ही देर बाद फॉरेंसिक टीम भी मौके पर पहुंची और घटनास्थल का मौका मुआयना किया पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वही खेत में दिनदहाड़े हुई इस हत्या से क्षेत्र में सनसनी फैल गई और जैसे ही जिले के मातहत पुलिस अधीक्षक डॉ यशवीर सिंह को घटना की सूचना मिली वैसे ही आनन फानन मौके पर पहुंचकर बारीकी से जांच पड़ताल की और उपस्थित। कोतवाली प्रभारी व पुलिस बल को सख्त लहजे में निर्देश देते हुए कहा कि जल्द ही अज्ञात हत्यारे को गिरफ्तार कर जेल भेजा जाए। इस मौके पर अपर पुलिस अधीक्षक संजीव कुमार सिन्हा क्षेत्राधिकारी यदुवेन्द्र बहादुर पाल क्षेत्राधिकारी लालगंज गिरजा शंकर त्रिपाठी कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव एस एस आई देवेंद्र सिंह भदोरिया एस आई उत्कर्ष केसरवानी एस आई सुनील सिंह एस आई रोहित कुमार एस आई प्रज्ञा मिश्रा फॉरेंसिक टीम तथा भारी मात्रा में पुलिस बल मौजूद रहा वही मामले में मृतक के भाई प्रदीप कुमार चौधरी द्वारा अज्ञात हत्यारों के खिलाफ लिखित तहरीर दी है।

बोले थाना प्रभारी

मामले में कोतवाली प्रभारी जगदीश यादव ने बताया कि मृतक के भाई प्रदीप कुमार चौधरी की तहरीर पर अज्ञात हत्यारों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज किया गया है जल्द ही हत्यारों पड़कर जेल की सलाखों के पीछे भेजे जाएंगे।

पत्नी और बचों को रो रो कर बुराहाल

महराजगंज रायबरेली 42 वर्षीय मृतक किसान तेज बहादुर चौधरी की पत्नी रीता जो कि प्राथमिक विद्यालय हलोर में शिक्षामित्र के पद पर कार्यरत हैं और वही लड़का शिवांश 18 वर्ष बेटी अनुष्का 16 वर्ष का रो रो कर बुराहाल है। वही रोते बिलखते परिजनों का कहना है कि मृतक की न तो किसी से कोई दुश्मनी थी और न ही किसी प्रकार का विवाद ऐसे में परिवार के मुखिया की की गई निर्मम हत्या क्षेत्र में चर्चा का विषय बनी हुई है।

बजरंगबली के जयकारों से गूंज उठा संपूर्ण महाराजगंज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

महराजगंज,रायबरेली। जेष्ठ माह के चौथे मंगलवार को कस्बा सहित क्षेत्र में जय बजरंगबली की जयकारों वा विविध प्रकार के भंडारों की रही धूम। बताते चलें कि महराजगंज क्षेत्र के थुलवासा चौकी पर स्थित हनुमान मंदिर पर चौकी इंचार्ज राहुल मिश्रा की अगुवई में सुंदरकांड का पाठ व विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें हजारों की संख्या में भक्तों ने पहुंचकर प्रसाद ग्रहण किया। वहीं महराजगंज क्षेत्र के बावन बुजुर्ग बल्ला गांव में सैकड़ो वर्ष पुराने हनुमान मंदिर परिसर पर ग्राम प्रधान प्रतिनिधि पंकज गुप्ता की अगुवई में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। जिसमें भी लोगों ने पहुंचकर प्रसाद ग्रहण किया तथा हनुमानगढ़ी मंदिर में विधि विधान के साथ हवन पूजन कर विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। वहीं बछरावां रोड पर स्थित दिनेश कुमार उर्फ भल्लू ठेकेदार द्वारा विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी अपने प्रतिष्ठान दिनेश इंटरप्राइजेज पर विशाल भंडारे का आयोजन किया जिसमें भी लोगों ने पहुंचकर प्रसाद ग्रहण किया। पाल ट्रेडर्स के प्रोपराइटर आनंद पाल व प्रभात चौधरी द्वारा बजरंगबली की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर हवन पूजन कर विधि विधान के साथ विशाल भंडारे का आयोजन किया गया।

नजूल की भूमि पर अवैध निर्माण को रोक पाने में नाकाम प्रशासन

भू–माफिया के आगे कानून बेबस, नजूल की जमीन पर हो रहा अवैध निर्माण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। नगर पालिका परिषद गोण्डा में भूमिया के आगे कानून व्यवस्था आ रहा है। नजूल की जमीन पर बिना मानचित्र व बिना फ्री होल्ड के अवैध नि र्माण रोकने के लिए बना कानून भू-माफिया के आ गे दम तोड़ता दिख रहा है।नजूल की जमीन पर हो रहे अवैध निर्माण भू-माफिया पर सख्ती से रोक ल गाने के लिए नगर पालिका परिषद के पास ऐसा कोई कानून नहीं है,जिनका भय दिखाकर इन पर सख्ती बरती जा सके।गोंडा नगर पालिका परिषदके वीर अब्दुल हामिद चौक से जिगर स्कूल को आ ने वाले रास्ते पर संगत मंदिर इमामबाड़ा के पास एक व्यक्ति ने नगर पालिका के जेई और नजूल वि भाग के अमीन के मिली भगत से इमामबाड़ा के पा स बेशकीमती नजूल की जमीन पर बिना फ्री होल्ड व बिना नक्शा स्वीकृत कराए व्यवसायिक निर्माण हो रहा है।वही सूत्र बता रहे हैं कि नगर पालिका के जेई और नजूल के अमीन के संरक्षण में यह काम कराया जा रहा है।वही नजूल की जमीन पर अवैध निर्माण कार्य अवैधानिक ढंग से होना शासन को आर्थिक क्षति पहुंचाने के साथ ही आदेशों का उ ल्लंघन किया जा रहा है।

नजूल के जेई से मिलिए और अवैध निर्माण

सूत्र सूत्र बता रहे है कि नगर पालिका परिषद यानी कि सी को भी अवैध निर्माण करना तो उनको बस भ्रष्ट जेई या नजूल विभाग के अमीन से संपर्क करना बाकी सारी समस्याओं का हल हो जायेगा ये बात कैनविज टाइम्स के रिपोर्टर नही कह रहे है बल्कि नगर में अवैध निर्माण करने वाला दूसरे अवैध नि र्माण करने को तैयार व्यक्ति से कहता है और कही ना कही ये बात सही भी है क्योंकि नगर में हो रहे हर अवैध निर्माण में यही सामने आता है शिकायत के बाद भी जेई और नजूल के अमीन मौके पर तो ठीक शिकायत तक नही देखते है बल्कि जिसकी शिकायत हुई उसको जा कर कह देता।जेई और अ मीन मौका रिपोर्ट लगाने की बजाए नगर पालिका परिषद में बैठे ही मनमुताबिक रिपोर्ट बना देते है।

नजूल की जमीन पर व्यावसायिक निर्माण

अवैध निर्माण की शिकायत के बाद भी रिपोर्ट में कही भी इसका जिक्र नहीं करता और न ही छोड़ा बस इतना लिख दिया जाता है कि ऐसा एक माम ला नही है बल्कि कई मामले है।जिसमें जो जेई औ र दो नजूल विभाग के अमीन की जोड़ी ने बड़े खेल किए है।ऐसा ही कुछ मामले में फिर सामने आये है ऐसे कई मामले है वीर अब्दुल हमीद चौक से जिग र स्कूल जाने वाले रास्ते इमामबाड़ा संगत मंदिर के पास में हुए नजूल की सम्पति पर अवैध निर्माण के मामले में भी बड़ा गोलमाल हुआ है। जिसमें भी पा लिका परिषद के इन भ्रष्टों का नाम चर्चाओं में है। सूत्र बता रहे हैं कि यही दोनों नजूल के पहले मौके का निरीक्षण करते हैं और निरीक्षण के दौरान अधि कारियों को गुमराह करके नजूल की जमीन पर बि ना मानचित्र के अवैध निर्माण करवाते हैं और फिर उसके बदले में सुविधा शुल्क लेते हैं सूत्र बता रहे है किसी की शिकायत उच्च अधिकारियों या किसी अखबारों में खबर प्रकाशित हो जाती है तो अधि कारी नजूल के जमीन पर बने मकान पर बुलडो जर चलवाते हैं जिससे कि नजूल का कब्जा किए हुए लोगों को भारी क्षति पहुंचती है और नजूल क र्मी सुविधा शुल्क लेकर चुपचाप तरीके से साइड में लग जाते हैं।

नजूल भूमि पर हो रहे अवैध निर्माण

सूत्र बता रहे हैं कि नजूल के जेई और अमीन के जानकारी में कुछ लोगो का महल जैसा शोरूम भी पूरा बन कर तैयार हो गया पर योगी के राज्य में गोण्डा नगर पालिका परिषद में हो रहे अवैध निर्माण करने वालों का कुछ नहीं बिगड़ा बस आप जेई औ र नजूल विभाग के अमीन को थोड़ा ज्यादा खुश करना पड़ेगा ऐसे में लोगों कहना भी सच लगता है कि ईमानदारी का पाठ दूसरों को पढ़ाने वालों के राज्य में इतना भ्रष्टाचार कैसे संभव हो रहा है।जहां पर आवासीय होने के बाद जमीन की बिक्री हो जा ती है और फिर बिना मानचित्र के ही नजूल कि ज मीन पर बिना फ्री होल्ड के बीच शहर में नजूल की संपत्ति पर अवैध निर्माण हो जाता है।वही नजूल की जमीन पर हो हो रहे अवैध निर्माण एक तरफ तो गोण्डा नगर पालिका परिषद की पहचान बन ग या है तो दूसरी तरफ भ्रष्ट इंजीनियर और नजूल के अमीन के लिए मोटा माल कमाने का साधन बन गए है सूत्र बता रहे है कि जेई और नजूल विभाग के अमीन नगर पालिका का के ईओ हो या सभा पति सबको खुश रखते है कभी किसी को नाश्ता तो कभी किसी को पार्टी देते रहते है ये सुन एक सभापति पति बोले कि मालवीय कहावत है कि खुद खावे काकड़ी...हमें दे आकड़ी..नगरपालिका परिषद में ऐसा ही कुछ हो रहा है और कोई तो है जो इन भ्रष्ट जेई और नजूल के अमीन की अवैध कमाई का हिस्सा ले रहा तभी तो इतना संरक्षण मिल रहा है।वरना इतना लिख देने के बाद भी इन पर कार्यवाही का चाबुक चल जाना था खैर ठीक है हमारा काम है लिखना हमने तो लिख दिया अब लिखें पर कार्यवाही करना या नही करना ये जिला प्रशासन या नगरपालिका परिषद के जिम्मेदार को तय करना है। वही नजूल की जमीन पर बन रहे बिना मानचित्र और बिना फ्री होल्ड के व्यावसायि क निर्माण की जानकारी सिटी मजिस्ट्रेट से ली गई तो उन्होंने बताया नगर पालिका के नजूल कर्मचारी को सूचना दे दी गई है। वही इसकी जानकारी नगर पालिका परिषद के ईओ संजय मिश्रा से दूरभाष पर लेने की कोशिश की गई तो उनका फोन नॉट रीचेबल बताया और जानकारी नहीं मिल पाई।

दो बाइकों की आमने–सामने टक्कर से मां–बेटे समेत तीन की मौत, एक महिला घायल

हादसे में एक ही परिवार के माँ बेटे की मौत,सभी कोलम्हपुर मंदिर से दर्शन करके वापस घर आ रहे थे

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोंडा। गोंडा जिले में आज भीषण सड़क हादसा हो गया जिसमें तीन की मौत हो गयी और एक महिला गंभीर रूप से घायल हैं हादसे में एक ही परिवार के मां बेटे ने जान गंवाई हैं सभी कोलम्हपुर मंदिर से दर्शन करके वापस घर आ रहे थे पुलिस ने शवों को पोस्मार्टम के लिए भेज दिया है जांच की जा रही है।घटना दर्जीकुआं - मनकापुर मार्ग मोतीगंज थाना क्षेत्र के वीरपुर बाजार के पास की है जहां दो बाईकों की आमने-सामने टक्कर हो गई जिसमें तीन लोगों की मौत हो गई हैं और एक महिला गंभीर से घायल है इस सड़क हादसे में माँ-बेटे समे त तीन की मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई हैं ज बकि एक महिला गंभीर रूप से घायल है,जिसे गोंडा मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है. ज हाँ इनका इलाज किया जा रहा है मृतकों में 45 वर्षीय मीना और उनका 25 वर्षीय बेटा रंजीत शामिल हैं. दोनों सोठिया के रहने वाले थे तीसरा मृतक 25 वर्षीय मनोज वर्मा मोतीगंज गढ़ी का निवासी हैं।घायल महिला बिंदू पांडे 45 के चाचा राधेश्याम पाण्डेय ने बताया कि सभी मंदिर दर्शन करने के लिए गए थे,आते समय दो बाइक आमने-सामने आपस में बुरी तरह से टकरा गयी जिससे कि लोगों को गंभीर चोटे आई थी।वहीं मेडिकल कॉलेज के इमरजेंसी में तैनात डॉ.अरिहंत मिश्रा ने बताया कि हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई है, जबकि एक महिला बिंदू पांडे 45 गंभीर रूप से घायल हो गई हैं जिनका इलाज अस्पताल में चल रहा हैं।

चंदेला कला गांव में हुआ भव्य भंडारा सैकड़ों भक्तों ने लिया प्रसाद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नानपारा, बहराइच। नानपारा कोतवाली क्षेत्र अंतर्गत चंदेला कला गांव में मंगलवार को एक विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। इस भंडारे का आयोजन पत्रकार शिवम पांडेय द्वारा किया गया, जिसमें सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालुओं ने भाग लिया। आयोजन स्थल को आकर्षक रूप से सजाया गया था और पूरा वातावरण भक्तिरस से सराबोर रहा। कार्यक्रम के दौरान सुंदरकांड का पाठ किया गया, जिससे माहौल और अधिक भक्तिमय हो गया। श्रद्धालुओं को प्रसाद के रूप में हलवा, छोला-चावल और लड्डू वितरित किया गया, जिसे सबने श्रद्धा और प्रसन्नता के साथ ग्रहण किया। स्थानीय ग्रामीणों ने भी इस आयोजन में बढ़-चढ़कर भाग लिया और सेवा कार्यों में सहयोग दिया। आयोजक शिवम पांडेय ने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य जनकल्याण और सामाजिक एकता को बढ़ावा देना है। ग्रामीणों ने उनके प्रयासों की सराहना की और भविष्य में भी ऐसे आयोजनों की अपेक्षा जताई। कार्यक्रम पूरी तरह शांतिपूर्ण और सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। इस अवसर पर पत्रकार अनुराग शर्मा, संदीप गिरी, प्रदीप कुमार गिरी, टिंकू शर्मा समेत अनेक श्रद्धालु मौजूद रहे।

बजरंगबली के जयकारों से गूंजे चौक चौराहे व मंदिर, ज्येष्ठ माह के चतुर्थ बड़े मंगल पर आयोजित हुए भंडारे

जरवल, बहराइच। ज्येष्ठ माह के चतुर्थ बड़े मंगलवार पर मंदिरो मे उमड़ी भक्तो की भारी भीड़, भक्तो ने बड़ी श्रद्धा व आस्था से मंदिरो मे किया पूजन व बजरंगबली बाबा का किया दर्शन, मंदिर मे चल रहे भंडारे मे चखा बाबा का प्रसाद,जरवल विकास खंड के अंतर्गत ग्राम पंचायत परसा मे स्थापित प्राचीन हनुमान जी का मंदिर इन दिनों बड़ी आस्था का केंद्र बना हुआ है हर मंगलवार को भक्तो की भारी भीड़ मंदिर मे उमड़ती है ज्येष्ठ माह के चतुर्थ मंदिरमंगलवार को मंदिर मे हनुमान जी महाराज के भव्य भंडारे का आयोजन किया गया आयोजित भंडारे का आयोजन भोला ज्वेलर्स,राकेश कुमार, अरविन्द वर्मा, ननकु वर्मा द्वारा भव्य भंडारे का आयोजन किया गया जहाँ पर सैकड़ो की संख्या मे भक्तो ने प्रसाद ग्रहण किया भंडारे मे छोला चावल, शरबत, पूड़ी सब्जी आदि प्रकार के प्रसाद का वितरण किया गया,इस अवसर पर मंदिर के पुजारी महादेव वर्मा, तुसार, हर्षित, दीपक कश्यप सहित तमाम लोग मौजूद रहे।ग्राम आठईसा मे प्रिंस शुक्ला द्वारा बाबा के भव्य भंडारे का आयोजन कर सैकड़ो भक्तो को प्रसाद का वितरण किया, जरवल रोड मे बलभद्र ऑटो सेल्स के प्रॉपराटर मोहित पोरवार द्वारा भव्य भंडारे का आयोजन किया गया जिसमे हजारों भक्तो ने प्रसाद ग्रहण किया।

हेलमेट जागरूकता अभियानः बड़हलगंज में लोगों को किया जागरूक

गोरखपुर । बड़हलगंज, ब्लाक के खड़ेश्वरी गांव में मानव शिक्षा सेवा संस्थान ने सोमवार को हेलमेट जागरूकता अभियान चलाकर लोगों को हेलमेट पहनने के महत्व के बारे में जागरूक किया। इस अभियान के तहत अंबेडकर चौराहे होते हुए कालेज रोड,नेशनल इंटर कालेज रोड होते हुए पटना चौराहे पर तक जागरूकता रैली निकाली गई और हेलमेट पहनने के महत्व को बढ़ावा दिया गया।विश्व हिंदू रक्षा परिषद के प्रदेश अध्यक्ष शिखर गुप्ता और जिला पंचायत सदस्य आलोक गुप्ता ने कहा कि हेलमेट पहनने से सड़क दुर्घटनाओं में होने वाली मौतों और चोटों को कम किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि सड़क सुरक्षा के प्रति लोगों को जागरूक करके सड़क दुर्घटनाओं को कम करने के लिए हेलमेट पहनना जरूरी है।इस अवसर पर जरूरतमंद लोगों को हेलमेट वितरित किए गए और उन्हें हेलमेट पहना कर जागरूक किया गया। भाजपा नेत्री पूनम गुप्ता ने कहा कि हाल ही में उनके क्षेत्र में चार युवकों की सड़क दुर्घटना में मौत हो गई। उन्होंने कहा कि अगर युवक हेलमेट पहने हुए होते तो इस घटना पर विराम लग सकता था।

शिक्षिकाओं के सिर पर सजा थाईलैंड में ताज,खिले चेहर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोरखपुर। धरा धाम इंटरनेशनल,देवनागरी उत्थान फाउंडेशन,एशिया बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड द्वारा थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मान समारोह में देश विदेश की जो शिक्षकाएं अपने क्षेत्रा में अपने कार्यों के बदौलत रोल मॉडल बन चुकी है उन्हें ताज पहनकर उनका स्वागत एवं सम्मान किया गया।इस दौरान वंदना महाजन, बबीता, संदीप कुमार, के. वी. एन. लक्ष्मी तायारु, दीप्ति खरे, सीमा बेनर्जी, जे. रंजना, डॉ. सुरुचि मिश्रा, डॉ. अंजनी शर्मा, सुमन यादव, शशि रानी सिंह, मुनचुन, अफसा परवीन, सोना खुराना, डॉ. रक्षा मेहता, विजया ओझा, पद्मा तिवारी, किरण कुमारी, डॉ. माधुरी मिश्रा, आभा शर्मा, डॉ. प्रतिमा सिंह, कल्पना, श्रीमती विनय श्रीवास्तव, अर्चना प्रणव, सरस्वती, गीता दुबे के सिर पर ताज पोशी की गई।उक्त ताजपोशी धरा धाम इंटरनेशनल की इवेंट डायरेक्टर मिसेज एशिया यूनिवर्स पूजा निगम के निर्देशन में किया गया।इस दौरान कार्यक्रम आयोजक सौहार्द शिरोमणि संत डा सौरभ पाण्डेय एवं डा सुनील दूबे ने इस पल को स्वर्णिम बनाते हुए सम्मानित शिक्षकों के प्रति शुभाशीष प्रेषित किया।इस दौरान प्रमुख रूप सेइस मौके पर धराधाम अंतर्राष्ट्रीय के संस्थापक, मानद कुलपति प्रो. डॉ. सौरभ पाण्डेय महाराज, राष्ट्र भाषा सेवा संघ और देवनागरी उत्थान फाउंडेशन के संस्थापक डॉ. सुनील दुबे,बौद्ध धर्म गुरु विसीयन, महामहिम राजा जनरल ग्रैंड मास्टर प्रोफ़ेसर दातो सेरी, इंडोनेशिया, डॉ. सुमपंद रथफट्टाया डी एस सी, इंडोनेशिया के एच आई आर एच एच ई महाराजा पंगेरन ड्यूक प्रिंस राडेन मास नगाबी, थाईलैंड सरकार पुलिस समिति के अध्यक्ष की सलाहकार एवं शिक्षा मंत्री थाईलैंड डॉ. मोनरुडी सोमार्ट, पवन मिश्रा,पेज–3 न्यूज पेपर यू एस ए के मुख्य संपादक डॉ परमिंदर सिंह समेत अन्य लोग मौजूद रही।

पुलिस और राजस्व विभाग में भ्रष्टाचार चरम पर

थानों पर हाल यह है कि मामूली रिपोर्ट चाहे जिस प्रकार की हो बिना मुंहमांगी रकम लिये रिपोर्ट लगना नामुमकिन है

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। भाजपा सरकार में विभागों में भ्रष्टाचार चर म पर पहुंच गया है।प्रायः सभी विभाग ऊपर से लेकर नीचे तक सरकार की छवि खराब करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ रहे है। जिसका नतीजा यह सामने न आ रहा है कि गरीब इसमें सर्वाधिक न पीड़ित है इसकी कहीं सुनवाई नहीं हो पा रही है क्यों कि उसके पास चढावे के लिए रकम नहीं है। उसकी फरियाद नक्कारखाने में तूती की में आवाज साबित हो रही है।लोगों का कहना है कि राजस्व और पुलिस विभाग के भ्रष्टाचार का दुष्परिणाम भ वयावह साबित हो रहा है।

थानों पर मामूली रिपोर्ट चाहे जिस प्रकार की हो बिना मुंहमागी प रकम लिये रिपोर्ट लगना नामुमकिन है। चाहे असलहे का ला इसेन्स हो या पासपोर्ट के लिए रिपोर्ट लगवानी हो। मारपीट और अन्य मामलों में न एफआईआर दर्ज करने में हीला हवाली करना पुरानी आदत है।मोटरसाइकिल चोरी के बाद एफआईआर के लिए नाको चना चबाना पड़ता है तब दो सप्ताह बाद रिपोर्ट द र्ज हो पाती है।किसी पीड़ित के जाने पर थानों पर जांच के नाम पर खर्चा पानी की मांग की जाती है। छोटे से लेकर बड़े मामले में पुलिस अपने हिसाब से धन वसूलती है।हरे पेड़ की कटान अवैध मादक पदार्थ बेचने वालों,शराब की दुकाने निर्धारित समय के बाद खोलने के लिए भी बंधी रकम वसूली जा ती है।इसकी जानकारी सभी अधिकारियों को है।जिले में वाहन वसूली दिन रात चलता है।गरीब आ दमी का काम थानों पर होना बहुत मुश्किल साबित होता है।यही वजह है कि अपराध भी बढ़ रहे है औ र पुलिस व्यवस्था से जनता का विश्वास कम होता जा रहा है।राजस्व विभाग में भ्रष्टाचार की गंगोत्री बह रह रही है।लेखपाल और सक्षम अधिकारियों के आदेश के बाद पैमाइश नहीं करते है।इसके लि ए मोटी रकम उन्हे देना पड़ता है,तब भी कई बार वादा करने के बाद वे मौके पर पहुंचते है।वरासत से लेकर सभी नियमानुसार काम के लिए काश्तका रों को जेब खाली करनी पड़ती है।अवैध कब्जा के मामले राजस्व विभाग के कृपा से खाली नहीं करा ये जाते है।उसके लिए लेखपाल से लेकर तहसील दार तक कमाई करते है।सक्षम न्यायालय के आदे श के बाद भी कार्यवाही करने में राजस्व कर्मचारी और अधिकारी हीलाहवाली करते है।हाई कोर्ट के आदेश तक नकार दिये जाते है।पीड़ित समाधान दिवस से लेकर मुख्यमंत्री,जिलाधिकारी,राजस्व प रिषद तक फरियाद करता है लेकिन परिणाम ढाक के तीन पात ही साबित होते है।इस व्यवस्था से पी ड़ित रोज अधिकारियों के पास आते है लेकिन उन्हे राहत के नाम पर चलता कर दिया जाता है और नि यमानुसार कार्यवाही के लिए आदेश हो जाता है और कोई कार्यवाही न होने से खूनी संघर्ष और हत्यायें तक हो जाती है।तब प्रशासन की आंख खुलती है।

कमिश्नर के आदेश की हो रही अवहेलना

थाने पर न्याय न मिलने पर भूख हड़ताल पर बैठी पीड़ित परिवार व महिलाएं धानेपुर थाना क्षेत्र निवा सी ग्राम नदावर में स्थित एक जमीन विवाद को ले कर पीड़ित परिवार की महिलाएं जिला पंचायत के टीन शेड में धरने पर बैठ गईं।पीड़ित ने बताया कि गाटा संख्या 141 प्रार्थनी की भूमिधरी आराजी हैं जिसका बटवारा न्यायालय आयुक्त देवी पाटन मंडल में चल रहा हैं जिस भूमि पर न्यायाल य द्वारा 26 अप्रैल 2025 को अग्रिम आदेश दिया था कि विवादित जमीन पर यथा स्थिति कायम रहे,उसके बावजूद भी विपक्षी ने पुलिस से मिलकर उस विवा दित जमीन पर प्राथमिक के हिस्से पर छप्पर रख के जबरदस्ती कब्जा कर लिया है वही पीड़ित महि लाओं का कहना है जब थाने में शिकायत कर ने गईं तो पुलिस ने छप्पर हटवाने से साफ-सा फ मना कर दिया और उल्टा ही पीड़िता के ही परि वार को थाने में बैठाकर 107,116 में चालान कर दिया।जिससे नाराज़ होकर वे धरने पर बैठने को मजबूर हुईं हैं।

गुरु नानक चौराहे पर अवैध टैक्सी स्टैंड से प्रति दिन लगता है जाम,जनता हो रही परेशान

शासन ने रोडवेज बस स्टैंड के निकट एक किलोमीटर के दायरे में कोई भी अवैध प्राइवेट टैक्सी स्टैंड़ प्रतिबंधित किया है इसक बावजूद नियमों का पालन नहीं हो रहा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। गुरु नानक चौराहे पर जाम की स्थिति दिन-प्रति दिन गंभीर होती जा रही है।रोडवेज के निकट अवैध टैक्सी स्टैंड संचालित होने के कारण अवै ध टैक्सियां सड़क के फुटपाथ पर या सड़क के बीच में खड़ी रहती है जिससे कि चौराहे से गुजर रही छोटी गाड़ियां वही एंबुलेंस को जाम से जूझना पड़ता है। शासन के द्वारा रोडवेज बस स्टैंड के निकट एक किलोमीटर के दायरे में कोई भी अवैध प्राइवेट टैक्सी स्टैंड़ प्रतिबंधित है। फर भी नियमों की अवहेलना जारी है।इससे चौराहे पर आए दिन प्राइवेट बसें व टैक्सियां सड़क पर खड़ी रहती हैं। जिससे कि लंबा जाम लग रहा है।यात्रियों को 40 डिग्री सेल्सियस की गर्मी में फंसे रहना पड़ रहा है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए बार-बार रोडवेज के कर्मचारियों ने अवैध टैक्सी स्टैंड के खिलाफ धर ना प्रदर्शन किया लेकिन अभी तक प्रशासन ने अवै ध टैक्सी स्टैंड को सड़क से नहीं हटाया गया हैं।व ही चौराहे पर ट्रैफिक पुलिस कर्मी तो तैनात हैं ले किन पूरा चौराहा होमगार्ड के भरोसे चल रहा है। सड़क पर अवैध टैक्सियां पुलिस के सामने सड़क पर खड़ी करके सांवरिया भरते रहते हैं टैक्सी चाल क मनमाने ढंग से चौराहे पर जाम की स्थिति पैदा कर रहे हैं।प्रशासन की ओर से कोई ठोस कार्रवाई न होने से समस्या बढ़ती जा रही है।

पापों का नाश करती है श्रीमद् भागवत कथा : आचार्य जितेंद्र गोला

गोरखपुर । ब्रंह हत्या और अकाल मृत्यु जैसे दोषों से घिरे व्यक्ति को श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण करना चाहिए। इसके श्रवण से सारे पाप कर्म नष्ट हो जाते हैं।यह बातें आचार्य जितेंद्र राम त्रिपाठी ने कही। वे गोला ब्लाक के झरकटा गांव में आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में श्रोताओं को कथा का रसपान करा रहे थे। कहा कि जब धुंधकारी प्रेत योनि की आग जल रहा था तब उसके मुक्ति के लिए गोकर्ण से कहा। गोकर्ण ने उसकी मुक्ति के लिए गया तीर्थ में पिंडदान किया। फिर भी मुक्ति नहीं मिली तब उन्होंने भगवान सूर्यदेव की अराधना करके धुंधकारी की मुक्ति का रास्ता पूछा, जिस पर उन्होंने कहा कि हे राजन कोई मनुष्य यदि श्रीमद्भागवत कथा का श्रवण सातों दिन पूरे मनोयोग से करता है तो निश्चित रूप से वह समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। जिस पर गोकर्ण ने कथा का आयोजन किया और उस कथा में प्रेतयोनि में भटक रहा धुंधकारी एक बांस के कट्टे में छिपकर कथा का श्रवन कर रहा था। सातवें दिन वह प्रेत योनि से मुक्त हो गया और वह स्वर्गलोक को गमन कर गया। कथा के अंत में आयोजक भाजपा नेता श्यामनारायण दुबे ने सपत्नीक व्यास पीठ की आरती कर प्रसाद वितरण किया।

मुख्यमंत्री से मिली ब्लॉक प्रमुख

बारात घर व जंगल किनारे गांव में सौर ऊर्ज़ा लाइटे लगवाने की करी मांग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत।विकासखंड मरौरी में लगातार विकास कार्यों की ओर अग्रसर मरौरी ब्लॉक प्रमुख सभ्यता वर्मा ने सोमवार को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मुलाकात की है। ब्लॉक प्रमुख ने मुख्यमंत्री को क्षेत्र की समस्याओं के बारे में बताया और ब्लॉक प्रमुख सभ्यता वर्मा ने मुख्यमंत्री को न्याय पंचायत स्तर पर बारात घर एवं विकासखंड में अतिथि गृह बनवाने की मांग की है। इसके अलावा न्याय पंचायत स्तर पर बारात घर बनने से कन्याओं के विवाह संपन्न होने में लोगों को काफी सहूलियत मिलेगी इसके अलावा क्षेत्र पंचायत के अंतर्गत जंगल किनारे बसे गांव के लिए सौर ऊर्ज़ा स्ट्रीट लाइट लगवाए जाने की भी मांग की है पत्र में ब्लॉक सभ्यता वर्मा ने मुख्यमंत्री को बताया कि हमारी विकासखंड क्षेत्र के अधिकांश गांव जंगल के किनारे बसे हुए हैं।साथ ही पीलीभीत टाइगर रिजर्व की सीमा लगी हुई है।लगातार बाघों का आतंक बना हुआ है। अतिरिक्त बजट मिलने से जंगल किनारे बसे गांव में सौर ऊर्ज़ा स्ट्रीट लाइट लग जाने से मनुष्यों को वन्यजीवों के खतरे से निजात मिलेगी आपको बता दे ब्लॉक प्रमुख सभ्यता वर्मा लगातार अपने विकासखंड क्षेत्र के प्रत्येक गांव में विकास के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से पूर्व में भी मुलाकात कर चुकी हैं।

दहेज की मांग पूरी न होने पर की गई विवाहिता की हत्या उत्तराखंड पुलिस ने पति सहित अन्य के खिलाफ दर्ज किया मुकदमा

पुरनपुर।थाना माधोटाडा क्षेत्र के गांव नगरिया खुर्द कला के रहने वाले समीर मालिक ने अपनी पुत्री का विवाह पड़ोसी राज्य उत्तराखंड के शक्तिफर्म के ग्राम गोविंदर थाना सितारगंज 6 वर्ष पूर्व की थी। मृतका के पिता ने ससुरालीजनों पर दहेज की मांग पूरी न होने पर दहेज हत्या का आरोप लगाया है। नगरिया खुर्द थाना माधोटांडा निवासी समीर मालिक ने थाना सितारगंज पुलिस को तहरीर देकर शिकायत में कहा कि उसने अपनी पुत्री ज्योति की शादी शक्तिफर्म थाना सितारगंज के निवासी सचिन सरकार से 6 वर्ष पूर्व की थी।शादी के बाद से ही उसकी पुत्री को दहेज मांग पूरी न होने पर प्रताड़ित किया जा रहा था। दहेज की मांग पूरी न होने पर उसकी पुत्री को फांसी पर लटका कर मार दिया गया। पुलिस को इस घटना की तहरीर देकर पति, ससुर, देवर ,सास , ननद के खिलाफ दहेज उत्पीड़न और दहेज हत्या की धाराओं में मुकदमा दर्ज कराने की गुहार लगाई है।

ससुराल पहुंची महिला की हत्या कर शव नहर में फ़ेकने का आरोप पुलिस से की शिकायत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पूरनपुर। कोतवाली क्षेत्र के गांव अमरैया कला के रहने वाले लाल सिंह ने मंगलवार को बताया कि अपनी पुत्री रचनी देवी की शादी 12 मई 2019 में चाँदूपुर निवासी सतीश कुमार पुत्र हेतराम के साथ की थी। शादी में लगभग सात लाख रुपए खर्च किया था और दो लाख रुपए व सभी सामान दिया था। आरोप है कि शादी के कुछ माह के बाद पति के अलावा सुसराल पक्ष के लोग महिला को अतिरिक्त दहेज में बुलेट गाड़ी व दो लाख रुपए की मांग कर प्रताड़ित करते थे। इसको लेकर कई बार पंचायत भी हुई थी। उसके बाद भी महिला का पति सतीश कुमार, सुशील कुमार सास दुलारी देवी, ससुर हेतराम, ननद राधा देवी,माया देवी,ममता देवी, नंदोई गुलाब सिंह उक्त लोग अतिरिक्त दहेज की मांग कर प्रताड़ित करते थे। आरोप है तीन माह पूर्व माधोटांडा गोमती उद्गम स्थल पर पंचायत के बाद सतीश अपनी पत्नी रचनी देवी को साथ ले गया था और परिजनों से फोन पर बातचीत भी नहीं कराई थी। 1 जून 2025 को सतीश ने ग्राम प्रधान सत्यपाल को फोन पर सूचना दी। कि चार दिन पूर्व वह अपनी पत्नी रचनी देवी को छोड़ गया है। जब प्रधान ने इस संबंध में रचनी देवी के पिता लाल सिंह से पूछा तो उन्होंने पुत्री के घर न आने की बात कही और मामले की शिकायत लेकर माधोटांडा थाने पहुंचे और पुलिस से शिकायत की। इस पर पुलिस ने बताया कि 30 मई को हरदोई ब्रांच नहर में एक अज्ञात महिला का शव मिला है यह सुनकर परिजनों के होश उड़ गए और फोटो देखकर अपनी पुत्री को पहचान लिया। पोस्टमार्टम के बाद शव घर लाकर परिजनों ने अंतिम संस्कार कर दिया। आरोप है कि उक्त लोगों ने दहेज की खातिर महिला की हत्या कर शव नहर में फ़ेकने का आरोप लगाकर तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है।

पति पत्नी में विवाद के बाद महिला की बांके से पति और जेठ ने की हत्या

पीलीभीत कैनविज टाइम्स संवाददाता। बरखेड़ा थाना क्षेत्र के गांव पतरसिया की रहने वाली अनीता ने बताया उन्होंने अपनी पुत्री नन्ही देवी की शादी अखिलेश निवासी जल्लूपुर थाना घुंघचाई के साथ बीस वर्ष पूर्व की थी। नन्ही देवी की दो पुत्रियां है जिनकी उम्र 13 और 15 वर्ष है। आरोप है कि एक माह पूर्व दोनों पुत्रियां घर से गायब हो गई। महिला ने अपने पति से पुलिस में शिकायत करने की बात कही थी। इसी बात को लेकर दोनों विवाद हो गया था। महिला की माँ अनिता सोमवार को अपनी वेटी के घर पहुंची थी। इस पर महिला अपनी माँ के साथ जाना चाहती थी पर अखिलेश ने भेजने से मना कर दिया था। मंगलवार समय लगभग एक बजे माँ वेटी थाने जा रही थी। तभी रास्ते में महिला का पति अखिलेश मिल गया और उसने पूछा कि आप लोग कहां जा रही हैं। इस पर नन्ही देवी ने माँ के साथ घर जाने की बात कही तभी अखिलेश वोला चलो में पहुंचा देता हूँ। इस पर अखिलेश अपनी सास अनिता को रोड पर छोड़कर नन्ही देवी को लाने की बात कहकर गया। आरोप है कि तभी अखिलेश का भाई अरविंद भी घर पहुंच गया और दोनों ने मिलकर रास्ते में ही बांके से नन्ही देवी पर हमला कर दिया। इस दौरान महिला का भाई रजनीश कुमार पहुचा और उसने अपनी बहन को बचाया और मामले की सूचना पुलिस को दी।

चौथे बड़े मंगल पर भंडारा, हजारों श्रद्धालुओं को पूड़ी-सब्जी का प्रसाद बांटा

पूरनपुर। नगर के स्टेशन चौराहे पर व्यापारियों ने चौथे बड़े मंगल पर भंडारे का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत हनुमान की पूजा-अर्चना और भोग अर्पण से हुई। भंडारे में हजारों श्रद्धालुओं को पूड़ी,सब्जी, हलुआ और शरबत का प्रसाद वितरित किया गया संयोजक सचिन गुप्ता चोटी वाला और हंसराज गुलाटी ने कहा कि यह भंडारा हर साल बड़े मंगल पर आयोजित किया जायेगा है। उन्होंने युवाओं से धार्मिक और सामाजिक कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने का आग्रह किया। भंडारे की सफलता में कई लोगों का योगदान रहा जिसमें मुख्य रूप से चेयरमैन शैलेन्द्र गुप्ता, सचिन गुप्ता,हंसराज गुलाटी, विजयपाल विक्की, विनोद गुप्ता आढ़ती, मनोज गुप्ता, संजीव गुप्ता, रजनीश सक्सेना, पवन जैसवार,संजय गुप्ता, अशीष रस्तोगी,राहुल जायसवाल, सुशील वर्मा, राजेन्द्र खण्डेलवाल, विजय खुराना, सचिन गुप्ता,अजय गुप्ता पप्पू, मुकेश गुप्ता, कमल भंडारी ने विशेष सहयोग किया है।आयोजन स्थल पर श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी।

जिला प्रशासन ने ज्येष्ठ मंगलवार पर किया विशाल भंडारे का आयोजन

डीएम-एसपी ने किया प्रसाद वितरण

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। ज्येष्ठ माह के मंगलवार के पावन अवसर पर जिला प्रशासन की ओर से कलेक्ट्रेट परिसर में विशाल भंडारे का आयोजन किया गया। धार्मिक आस्था और जनसेवा से जुड़े इस आयोजन की शुरुआत पूजन-अर्चन के साथ हुई, जिसके बाद भंडारे में श्रद्धालुओं को प्रसाद वितरित किया गया। इस अवसर पर जिलाधिकारी कुमार हर्ष, मुख्य विकास अधिकारी अंकुर कौशिक एवं पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह ने विधिवत पूजन कर कार्यक्रम की शुरुआत की। पूजन उपरांत तीनों अधिकारियों ने प्रसाद वितरण कर भंडारे की शुरुआत की। भंडारे की संपूर्ण व्यवस्था में अपर जिलाधिकारी, उप जिलाधिकारी, एडिशनल एसपी सहित प्रशासनिक अमला पूरी तरह से जुटा रहा। अधिकारी स्वयं भी भंडारे की व्यवस्थाओं का निरीक्षण करते हुए प्रसाद वितरण में सहयोग करते नजर आए। कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित इस आयोजन में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। पूरा वातावरण भक्ति और श्रद्धा से ओतप्रोत रहा। भंडारे में शांति, स्वच्छता और अनुशासन का विशेष ध्यान रखा गया। इस आयोजन को लेकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला। लोगों ने जिला प्रशासन की इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि यह न केवल धार्मिक भावना से जुड़ा है,बल्कि प्रशासन और आम जनता के बीच सहयोग और विश्वास का भी प्रतीक है। वही महिला थाने के सामने मकरंद मार्केट में पत्रकार मनोज तिवारी के सौजन्य से ज्येष्ठ मंगल पर हनुमान चालीसा का पाठ कराया तत्पश्चात विशाल भंडारे का आयोजन किया। जिसमें लोगो ने बढ़चढ कर हिस्सा लिया।

बड़े ही धूमधाम से उर्स पाक मुकम्मल पहुंचे हजारों अकीदमंद

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत। जनपद पीलीभीत शहर के बीचो-बीच स्थित हाजी शाहजी मोहम्मद शेर मियां रहमतुल्ला अलैह के 122 वे उर्स शरीफ के कुल बड़े ही हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। कुल शरीफ में जनपद पीलीभीत से ही नहीं बल्कि पूरे प्रदेश एवं पड़ोसी राज्य उत्तराखंड से भी लोगों ने पहुंच कर जियारत की है। मंगलबार को अपनी टीम के साथ पीलीभीत पहुंचे पूर्व प्रधान प्रतिनिधि हाजी रियाजत नूर खान ने शिरकत करके अपने जनपद एवं देश के लिए अमन अमान कायम रहे इसके लिए दुआ मांगी हाजिरी देने वालों में हाजी रियाजत नूर खान,जावेद खान पूर्व प्रधान, मकबूल हसन खान सेवानिवृत्ति पुलिस कर्मी,डॉक्टर हांजी हबीब खान, जुनैद खान, मेराज खान ,मोहम्मद अहमद उर्फ मुन्नी ,एजाज खान सहित कई लोगों ने दरगाह पर हाजिरी दी और साथ ही दरगाह पर मेले में सुरक्षा की दृष्टि से कोतवाली पुलिस के दरोगा देवेंद्र राणा सहित इंस्पेक्टर नरेश त्यागी अपनी टीम के साथ मुस्तैद रहे।

माधोटाडा पुलिस ने सिद्ध कर दिया खुलेआम गुंडागर्दी नहीं चलेगी सड़क पर मारपीट करने वालों के खिलाफ दर्ज किया मुकदमा

पूरनपुर। कुछ दिन पूर्व माधोटाडा में खटीमा रोड पर गौमांस की बिक्री के शक मे कई कार्यकर्ताओं ने डगा के रहने वाले वशीर अहमद पुत्र गरीवुउल्ला थाना माधौटांडा की पिटाई कर दी थी। जिसका वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर जमकर वायरल हुआ था।इस मामले की तहरीर पुलिस को दी गई थी। माधोटांडा पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए।गम्भीर धाराओं मे मुकदमा दर्ज कर लिया है। बशीर अहम ने बताया कि मीट डगा मे संचालित दुकान से खरीद कर माधौटांडा मे अपनी रिश्तेदारी में ले जा रहा था। मीट बेचने के शक मे पिटाई लगा दी थी। जबकि युवक के पास मांस की रसीद मौजूद थी।कुलदीप मिश्रा पुत्र लालाराम, गोविन्द राणा, आशु यादव पुत्र महेन्द्र यादव निवासी माधौटांडा व लगभग 7 से 8 अज्ञात व्यक्तियों ने लाठी,डन्डों व लोहे की रॉड से लैस होकर जान से मारने की नीयत से हमला कर दिया था। माधोटांडा पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर लिया है।

ईद उल अजहा पर प्रतिबंधित पशुओं की कुर्बानी न दी जाय : डीएम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सोशल मीडिया पर भ्रामक फोटो व वीडियो डालने पर होगी कड़ी कार्यवाही

अमेठी । जिलाधिकारी संजय चौहान की अध्यक्षता में आज कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी त्योहार ईद उल अजहा (बकरीद) के दृष्टिगत शांति, सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने तथा शांतिपूर्ण एवं परम्परागत तरीके से आपसी भाई-चारे के साथ त्योहार को मनाने हेतु शांति समिति की बैठक आयोजित हुई। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक, मुख्य विकास अधिकारी सूरज पटेल, अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व अर्पित गुप्ता, अपर पुलिस अधीक्षक शैलेंद्र कुमार सिंह सहित अन्य अधिकारी व विभिन्न सम्प्रदायों के धर्मगुरु उपस्थित रहे। बैठक में जिलाधिकारी संजय चौहान ने उपस्थित विभिन्न सम्प्रदाय के धर्मगुरुओं एवं अलग अलग क्षेत्रों से आये हुये संभ्रान्त नागरिकों, ग्राम प्रधानों, सभासदों एवं शांति समिति के सदस्यों से सीधा संवाद कर आगामी त्यौहारों विशेष रूप से बकरीद के अवसर पर आपसी सौहार्द एवं कानून व्यवस्था बनाये रखने में शांति एवं सहयोग की अपील करते हुये कहा कि त्यौहार में किसी प्रकार की नई परंपरा की शुरूआत न की जाय जिस प्रकार से और जिस जगह पर विगत वर्षो में बकरीद के दौरान कुर्बानियां दी जाती रही हैं उसी को कायम रखना है। उन्होंने कहा कि किसी भी दशा में प्रतिबंधित पशु की कुर्बानी न दी जाय तथा कोई भी कुर्बानी खुले में न हो।जिलाधिकारी ने उपस्थित समस्त क्षेत्रीय प्रबुद्धजनों से अपील करते हुये कहा कि लोगों को अधिक से अधिक जागरूक करें जिससे त्यौहार शांतिपूर्ण रूप से संपन्न हो। जिलाधिकारी ने कहा कि कुर्बानी के उपरांत अपशिष्ट अवशेष को खुले में न डाला जाय। जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग को निर्देश देते हुये कहा कि नमाज के मुख्य मार्गों का स्थलीय निरीक्षण कराकर जर्जर विद्युत तारों को समय रहते दुरुस्त करना सुनिश्चित करें तथा त्यौहार के समय विद्युत आपूर्ति निर्वाध संचालित रहे। उन्होंने जिला पंचायत राज अधिकारी को निर्देशित करते हुये कहा कि ग्रामीण क्षेत्रों में किसी प्रकार की लापरवाही संज्ञान में न आये एवं साफ सफाई की विशेष व्यवस्था रहे। उन्होंने समस्त अधिशाषी अधिकारी नगर पालिका,नगर पंचायत को निर्देशित करते हुये कहा कि अपने-अपने इलाकों में साफ-सफाई व्यवस्था सुनिश्चित कराते हुए त्योहार के दिन सफाई कर्मचारियों की ड्यूटी पहले से ही सुनिश्चित रखी जाय बैठक में जिलाधिकारी में मुख्य चिकित्सा अधिकारी को निर्देश दिए की सभी सीएचसी, पीएचसी पर त्योहार के दृष्टिगत एंबुलेंस, डॉक्टरों की उपस्थिति व आवश्यक दवाओं की उपलब्धता रहे। जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकरी एवं पुलिस क्षेत्राधिकारी सहित समस्त सम्बंधित अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि त्योहार के दौरान विशेष सतर्कता व अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा के साथ करते हुए त्यौहार को सकुशल संपन्न कराने में अपनी भूमिका का निर्वहन करें, इन कार्यों में किसी प्रकार की कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए। पुलिस अधीक्षक ने बकरीद के त्यौहार को परंपरागत रूप से मनाये जाने के संबंध में पुलिस अधिकारियों,थानाध्यक्षों को निर्देशित करते हुए कहा कि शांति-सुरक्षा एवं कानून व्यवस्था बनाए रखने में किसी भी प्रकार की कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए।

बाबा चित्थरशाह का दो दिवसीय सालाना उर्स सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

तिलोई अमेठी । क्षेत्र के कस्बा सेमरौता स्थित बाबा चित्थरशाह की मजार का सालाना उर्स बडे ही शान ओ शौकत के साथ मनाया गया। दो दिवसीय सालाना उर्स में आये जायरीनो ने बाबा की मजार पर चादर चढ़ाकर दुआएं मांगी। उर्स के दूसरे दिन जबाबी कव्वाली के मुकाबले में साहिद झंकार कानपुर और उजाला परवीन नागपुर बराबरी पर रहे।बाबा चित्थरशाह के सालाना उर्स के पहले दिन गागर शरीफ जामा मस्जिद सेमरौता से बाबा की दरगाह तक जायरीन लेकर गये और बाबा की मजार का उजू कराया गया इसके बाद तकरीरों का आयोजन हुआ और यह दौर रात्रि तक जारी रहा। बाबा के आस्ताने पर आये हुये जायरीनो के लिये लंगर का भी आयोजन किया गया था।मुख्य आकर्षण का केंद्र उर्स के आखिरी दिन जबाबी कव्वाली रहा जिसे सुनने व देखने के लिये हजारों की भीड़ उमड़ी।कव्वाली शुरू होने से पहले कार्यक्रम में शिरकत के लिये आये मुख्य अतिथि ग्राम प्रधान देवी शरण बाजपेई ने बाबा को चादर चढ़ाकर अमन चैन की दुआ मांगी और उर्स में आये हुये जायरीनो का खैर मकदम किया।इसी के साथ सूफी संत बाबा चित्थर शाह के बताये अमन चैन के रास्ते पर सभी को चलने का आवाहन भी किया। आयोजक पूर्व जिला पंचायत सदस्य जहीर अहमद कुरैशी ने अतिथियों को पुष्पगुच्छ और प्रतीक चिन्ह भेंटकर स्वागत किया। इस अवसर पर परमानंद मिश्रा,बाल कृष्ण त्रिपाठी,रामू तिवारी,पूर्व जिला पंचायत सदस्य कर्ण बाजपेई,गोपी बाजपेई,मनीष बाजपेयी,शकील अहमद, भारत लाल सोनी, रेहान हासमी, मोहम्मद आरिफ,राजू कुरैशी,जुम्मन कसगर सहित अन्य तमाम लोग मौजूद रहे।

गोमती नदी में प्रदूषण के कहर से मरी सैकड़ो मछलियां

सुल्तानपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। गोमती मित्र मंडल के लाख निवेदन के बावजूद भी प्रशासन ना तो नदी में सीधे गिरते नालों को बंद करवा पा रहा है ना ही फैक्ट्रीयों से छोड़े जा रहे केमिकल युक्त पानी पर अंकुश जिसका खामियाजा जलीय जीव जंतुओं को उठाना पड़ा रहा है। मंगलवार प्रातः जब गोमती मित्र अपने दैनिक श्रमदान के लिए सीता कुंड धाम पहुंचे तो तट पर पानी पर उतराती मरी हुई मछलियों को देखकर दंग रह गए। जिनकी तादाद इकाई दहाई में नहीं बल्कि सैकड़ो में थी और यह इस बात को सिद्ध करने के लिए काफी है कि गोमती नदी के जल के प्रदूषण ने अपने उच्च स्तर को प्राप्त कर लिया है, जिस नदी को जीवनदायिनी कहा जाता है आज उसी नदी का जल जलीय जीव जंतुओं के जीवन के संकट का कारण बन गया है। इतनी ज्यादा तादाद में मछलियों का मरना गंभीर बीमारियों के फैलने का कारण भी बन सकता है क्यूंकि मछलियों को लोग भोजन में तो लेते ही हैं साथ ही नदी में नहाने वाले श्रद्धालुओं को भी इस गंभीर प्रदूषण का शिकार बनना पड़ सकता है। गोमती मित्र मंडल के प्रदेश अध्यक्ष रुद्र प्रताप सिंह मदन, मीडिया प्रभारी रमेश महेश्वरी, राजेश पाठक, राजेंद्र शर्मा, दिनकर सिंह, अजय प्रताप सिंह, आलोक तिवारी, सेनजीत कसौधन, विकास शर्मा, विपिन सोनी, अजय वर्मा आदि ने प्रशासन से तत्काल संज्ञान लेने का निवेदन किया है।

शेरपुर में हुई लुट मुकदमा दर्ज

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। कोतवाली क्षेत्र के गांव शेरपुर कला ईदगाह के पास के रहने वाले अरशद कुरैशी पुत्र कय्यूम कुरैशी की बहन की अगले महीने मंगनी है। इसी को लेकर घर में सोने चाँदी के जेवर सहित 24 हजार रुपए रखे थे। रविवार सोमवार मध्यरात्रि बदमाश घर में घुस गए और दरवाजे पर हाथ मारकर दरवाजा खुलवा लिया जिसके बाद युवती का मूह कपड़ें से बांधकर तमंचे के वल पर घर में रखे सोने चाँदी के जेवर व 24 हजार रुपए लूट ले गए थे।घटना की सूचना मिलते ही एसपी अभिषेक यादव,एडिशनल एसपी ने घटना स्थल का मौका मुआयना किया था। पुलिस ने मामले में मुकदमा दर्ज किया है।लेकिन दो दिन बीत जाने के बाद भी अभी तक पुलिस के हाथ खाली है।

कार की टक्कर से बाइक सवार मां बेटे तीन लोग घायल

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। शाहजहांपुर पुवायां की रहने वाली प्रेमवती पत्नी कमलेश अपने पुत्र राहुल और विपिन के साथ मंगलवार समय लगभग एक बजे पूरनपुर बाइक से दवा लेने के लिए आ रहे थे। जैसे ही बाइक सवार मां बेटे घाटमपुर के पास में पहुंचे तभी कार ने बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार तीनों लोग घायल हो गए। घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां डॉक्टर के द्वारा उपचार कर जिला अस्पताल रेफर किया जा रहा है।

डीह में पंचायत घोटाला, सचिवों पर दिखावटी कार्रवाई

सुल्तानपुर। विकास खंड बल्दीराय की ग्राम पंचायत डीह में हुए लाखों रुपये के सरकारी धन के दुरुपयोग के मामले में जिला पंचायत राज अधिकारी अभिषेक शुक्ल की निष्पक्षता पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं। इस प्रकरण में पदच्युत की गई ग्राम प्रधान ममता शुक्ला के साथ मिलीभगत कर गड़बड़ी करने के आरोपी तत्कालीन सचिव रवि कुमार राणा और रोहित चंद्रा पर प्रशासन ने अलग-अलग और असमान कार्रवाई की। जिसे लेकर जनमानस में रोष व्याप्त है। प्रशासन द्वारा सचिव रोहित चंद्रा की महज एक वार्षिक वेतन वृद्धि रोककर मामला निपटा दिया गया। जबकि दूसरे आरोपी सचिव रवि कुमार राणा पर कोई भी विभागीय कार्रवाई नहीं की गई। दोनों पर एक समान आरोप होने के बावजूद इतना भिन्न दंड दिए जाने से स्थानीय लोगों में गहरा असंतोष है। जनप्रतिनिधि गोकरण शुक्ल ने इस कार्रवाई को दिखावटी और पक्षपातपूर्ण बताते हुए आरोप लगाया है कि डीपीआरओ पर किसी बाहरी दबाव में काम करने का संदेह है। उन्होंने कहा कि जब ग्राम प्रधान को पद से हटाया जा सकता है, तो सचिवों को संरक्षण क्यों दिया जा रहा है।

दुनिया चले न श्रीराम के बिना, रामजी चलें न हनुमान के बिना

ज्येष्ठ माह के चतुर्थ बड़े मंगल पर सुंदरकाण्ड पाठ समापन पर विशाल भण्डारा में उमड़ा जनसैलाब

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अमेठी । ज्येष्ठ माह के चतुर्थ बड़े मंगल पर जनपद के विभिन्न कस्बों में श्रीराम चरित मानस एवं सुंदर काण्ड पाठ के साथ ही प्रसाद वितरण व विशाल भण्डारा आयोजित किया गया जिसमें क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों के साथ ही हजारों की संख्या में राहगीरों एवं आम जनमानस ने प्रसाद ग्रहण किया।ज्येष्ठ माह का चतुर्थ बड़ा मंगल होने के कारण क्षेत्र में माहौल भक्तिमय नजर आ रहा था और दुनिया चले न श्रीराम के बिना रामजी चलें न हनुमान के बिना जैसे भक्तिमय गीतों पर भक्तों ने खूब धमाल मचाया।तिलोई तहसील क्षेत्र के कस्बा शंकरगंज में ध्रुव डेयरी उद्योग के निदेशक डॉ सुरेन्द्र सिंह द्वारा सुंदर काण्ड पाठ समापन और आरती पूजन के बाद विशाल भण्डारा आयोजित किया गया जिसमें क्षेत्रीय जनप्रतिनिधियों और सम्भ्रांत नागरिकों के साथ ही हजारों की संख्या में राहगीरों ने प्रसाद ग्रहण किया। विकास क्षेत्र सिंहपुर के कस्बा अहोरवा भवानी में उचित दर विक्रेता कौशल किशोर सोनी रवि सोनी द्वारा सुंदर काण्ड पाठ के उपरांत विशाल भण्डारा आयोजित किया गया। गांव टेढ़ई में शिक्षक नेता विकल्प श्रीवास्तव द्वारा विशाल भण्डारा आयोजित किया गया तो पूरे जयलाल दुबे मजरे चिलौली में चंद्र शेखर द्विवेदी सहित अन्य लोगों द्वारा विशाल भण्डारा आयोजित किया गया। कस्बा शिवरतनगंज में अशोक सोनी द्वारा विशाल भण्डारा आयोजित किया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सिंहपुर के पास अमर यादव द्वारा विशाल भण्डारा आयोजित किया गया तो राजा फत्तेपुर में अगम मिश्र द्वारा आयोजित विशाल भण्डारा में भक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया।ज्येष्ठ माह के चतुर्थ बड़े मंगल पर भक्तिमय गीतों पर भक्तों ने खूब धमाल मचाया और माहौल बदला बदला नजर आया इसके साथ ही नारों व जयकारों से इलाका गुंजायमान रहा।इस मौके पर ग्राम प्रधान गौरव श्रीवास्तव, राष्टीय शैक्षिक महासंघ सिंहपुर के अध्यक्ष सत्येन्द्र कुमार तिवारी, नवनीत त्रिवेदी, हरिकेश गौतम,कार्तिकेय शुक्ला, रवि तिवारी, आशीष नंदन त्रिपाठी, शिरीष गुप्ता, गौरव मिश्रा, संदीप शुक्ला,मनीष पाण्डेय, जितेन्द्र कुमार, आयुष श्रीवास्तव, राहुल पाठक, सुशील कुमार श्रीवास्तव सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

पत्नी को मौत के घाट उतारने वाला युवक गिरफ्तार

अमेठी कैनविज टाइम्स संवाददाता। थाना रामगंज पुलिस ने पत्नी को मौत के घाट उतारने वाले युवक को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है और हत्या में प्रयुक्त एक अदद कुल्हाड़ी भी बरामद किया है।पुलिस अधीक्षक अपर्णा रजत कौशिक के निर्देश पर थाना रामगंज पुलिस द्वारा हत्या के अभियोग में वांछित ऋषि कुमार व शशि कुमार पुत्रगण राम आसरे निवासीगण ग्राम मवइया थाना रामगंज जनपद अमेठी को गिरफ्तार किया गया। पुलिस टीम ने आरोपी ऋषि कुमार की निशान देही पर हत्या में प्रयुक्त एक अदद कुल्हाड़ी (आलाकत्ल) उसके घर से बरामद किया है। पुलिस टीम द्वारा की गई पूंछतांछ में ऋषि कुमार ने बताया कि उसकी पत्नी फोन से दूसरे से बात करती थी इसी बात से गुस्से में आकर उसने अपनी पत्नी को कुल्हाड़ी से गर्दन पर वार कर मार दिया एवं घटना के समय उसका भाई शशि कुमार भी मौके पर मौजूद था।इस सम्बंध में थाना रामगंज के प्रभारी निरीक्षक कृष्ण मोहन सिंह ने बताया कि पुलिस टीम द्वारा पकड़े गये दोनों भाइयों के खिलाफ मुकदमा दर्जकर जेल भेज दिया गया है।

महाविद्यालय परिवार की तरफ से किया गया शरबत वितरण

सुलतानपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। स्थानीय गनपत सहाय महाविद्यालय सुलतानपुर में आज ज्येष्ठ माह के चौथे मंगलवार को बजरंग बली के परम भक्त महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ.ओम प्रकाश पाण्डेय 'बजरंगी' के संरक्षण व आशीर्वाद से विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी पयागीपुर स्थित महाविद्यालय के मुख्य परिसर के मुख्य प्रवेश द्वार पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.(डॉ.)अंग्रेज सिंह 'राणा' के मार्गदर्शन में महाविद्यालय परिवार की तरफ़ से प्रसाद के रूप में शरबत वितरण किया गया।

पढ़ने की उम्र में जुर्म

हिसार में सहपाठी द्वारा प्रतिशोध में कक्षा दस के एक छात्र की गोली मारकर की गई हत्या ने हर संवेदनशील व्यक्ति को झकझोरा है। एक साल पहले स्कूल में डेस्क पर बैठने को लेकर विवाद की खुंदक आरोपी छात्र अपने दिमाग में पालता-पोसता रहा। फिर एक दिन सहपाठी को सुबह मिलने के बहाने बुलाया और अपने दादा के हथियार से गोली मारकर हत्या कर दी। घटना बेहद दुखद है और हर मां-बाप के लिये बेहद चिंता का विषय कि उनके बच्चे का सहपाठी भी इतना खूंखार हो सकता है। हमारे जिस समाज की प्यार, सामंजस्य व सहयोग के लिये मिसाल दी जाती थी, उसमें ये किशोर आखिर ऐसा भयानक कदम कैसे उठा रहे हैं? जिस उम्र में किशोरों को पढ़ना-लिखना था, उस समय में वे हिंसक गतिविधियों में क्यों लिप्त हो रहे हैं? दोषी तो आरोपी छात्र के अभिभावक भी हैं कि जिन्होंने घातक हथियार को लापरवाही से घर में छोड़ा, जिससे आरोपी ने हत्या को अंजाम दिया। बताते हैं कि आरोपी छात्र के दादा सेना से सेवानिवृत्त हैं और एक बैंक में सुरक्षा गार्ड हैं। कितनी दुर्भाग्यपूर्ण घटना है कि मृतक छात्र अपने परिवार में इकलौता था और अपने परिवार को हमेशा के लिये रोता-बिलखता छोड़ गया। एक समय अमेरिका व यूरोप में ऐसी घटनाएं सुनने में आती थी। अब ये किशोर अपराध हमारे दरवाजों पर भी दस्तक देने लगे हैं। समाज में व्याप्त नकारात्मकता व हिंसक प्रवृत्ति का किशोरों द्वारा अनुकरण करना हमारे समाज के लिये खतरे की घंटी ही है। बीते मार्च में दिल्ली के वजीराबाद इलाके में एक छात्र की ऐसी ही निर्मम हत्या हुई थी। वजीराबाद की घटना में एक नौवीं के छात्र का अपहरण करके उसके परिजनों से दस लाख की फिरौती मांगी गई थी। छात्र की हत्या के बाद जांच में पता चला कि उसके अपहरण व हत्या में तीन किशोर संलिप्त थे।

> एक साल पहले स्कूल में डेस्क पर बैठने को लेकर विवाद की खुंदक आरोपी छात्र अपने दिमाग में पालता-पोसता रहा। फिर एक दिन सहपाठी को सुबह मिलने के बहाने बुलाया और अपने दादा के हथियार से गोली मारकर हत्या कर दी। घटना बेहद दुखद है और हर मां-बाप के लिये बेहद चिंता का विषय कि उनके बच्चे का सहपाठी भी इतना खूंखार हो सकता है। हमारे जिस समाज की प्यार, सामंजस्य व सहयोग के लिये मिसाल दी जाती थी, उसमें ये किशोर आखिर ऐसा भयानक कदम कैसे उठा रहे हैं?

आए दिन स्कूल-कालेज विवाद में हिंसक घटनाएं हमें परेशान करती हैं। यदि कम उम्र के बच्चों व किशोरों में बढ़ती हिंसक प्रतिशोध की प्रवृत्ति पर लगाम न लगी तो डर लगता है कि आने वाले समय में हमारे समाज का स्वरूप कैसे होगा। सवाल यह है कि आखिर किशोरों में आपराधिक प्रवृत्तियां क्यों पनप रही हैं। आखिर उन्हें मां-बाप का संघर्ष क्यों नहीं दिखायी देता कि वे कैसे उन्हें पाल-पोस व पढ़ा-लिखा रहे हैं? समाज विचार करे कि वे कौन से कारक हैं जो बच्चों को आपराधिक प्रवृत्ति का बना रहे हैं। उनके द्वारा ऐसे जघन्य अपराध को अंजाम देने के लिये जिम्मेदार प्रवृत्ति का स्रोत क्या है? ऐसे बच्चों में कानून का भय क्यों नहीं है? कभी लगता है कि हमारे जीवन का हिस्सा बने तकनीकी साधन बच्चों के विवेक पर आक्रमण कर रहे हैं। जिससे उनमें सही-गलत की सोच की प्रक्रिया बाधित हो रही है। कहा जा रहा है कि फिल्म, वेब सीरीज तथा इंटरनेट में व्याप्त आपराधिक कार्यक्रम उन्हें हिंसक बना रहे हैं। जिससे वे बेलगाम सपनों के संजाल में भी फंसते हैं, जिन्हें पूरा करने को वे हिंसक राह पर उतर जाते हैं।

भारत में कोरोना की नई लहर और चुनौतियां

मई 2025 में सोशल मीडिया रिपोर्ट्स और सरकारी अलर्ट के अनुसार, जेएन.1 जैसे नए वेरिएंट्स की उपस्थिति ने स्वास्थ्य तंत्र को फिर से सतर्क कर दिया है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च और भारतीय एसएआरएस-कोव-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम (आईएनएसएसीओजी) ने जीनोमिक निगरानी तेज कर दी है। अस्पतालों में गंभीर श्वसन रोग और फ्लू जैसे लक्षणों वाले मरीजों पर बारीक नजर रखी जा रही है। हालांकि इस लहर में अस्पताल में भर्ती और मृत्यु दर अपेक्षाकृत कम है, फिर भी मास्क पहनने की सलाह और सतर्क निगरानी इस वायरस के लगातार खतरे की पुष्टि करती है। इस लहर के उभरने के प्रमुख कारणों में वेरिएंट्स की जेनेटिक परिवर्तनशीलता है। एसएआरएस-कोव-2 की निरंतर उत्परिवर्तन क्षमता ने मौजूदा वैक्सीन और उपचारों की प्रभावशीलता को कम कर दिया है। आईएनएसएसीओजी लगातार नए वेरिएंट्स की पहचान में जुटा है, लेकिन 1.3 अरब की आबादी में समग्र जीनोमिक निगरानी करना एक जटिल चुनौती बना हुआ है। दूसरा टीकाकरण की अपनी सीमा है। भारत ने अब तक अरबों वैक्सीन डोज वितरित की हैं, लेकिन बूस्टर खुराक की कम दर और ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पहुंच से प्रतिरक्षा क्षमता कम हो गई है, जिससे पुनः संक्रमण का खतरा बढ़ गया है। इसके सामाजिक औरआर्थिक कारक भी हैं। पिछली लहरों से क्षतिग्रस्त अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी, और अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं ने जनता की भेद्यता को और बढ़ाया है, जिससे नई स्वास्थ्य पहलों की सफलता सीमित होती जा रही है।

कोरोना (कोविड-19) की नई लहर भारतीय स्वास्थ्य तंत्र के लिए एक गंभीर परीक्षा है। हालांकि टीकाकरण, जांच, और जनसंचार के स्तर पर उल्लेखनीय प्रगति हुई है, फिर भी अवसंरचनात्मक कमिया, असमान पहुंच और सामाजिक-आर्थिक चुनौतियां अभी बनी हुई हैं। यदि अतीत से मिले सबक को अपनाते हुए निरंतर निवेश और ठोस रणनीति को अपनाएं तो भारत न केवल वर्तमान संकट से निपट सकता है बल्कि एक समावेशी, लचीले और भविष्य के लिए तैयार स्वास्थ्य तंत्र की स्थापना भी कर सकता है। एसएआरएस-सीओवी-2 वायरस से फैली कोविड-19 महामारी वैश्विक स्तर पर भारी तबाही मचा चुकी है। मई 2025 तक भारत में 4.5 करोड़ से अधिक पुष्टि किए गए मामले और 5.33 लाख से अधिक आधिकारिक रूप से दर्ज की गई मौतें हो चुकी हैं। अब नए वेरिएंट्स के साथ कोविड-19 की एक नई लहर ने भारतीय स्वास्थ्य तंत्र को एक बार फिर गंभीर दबाव में ला खड़ा किया है। भारत में कोविड-19 का पहला मरीज 30 जनवरी 2020 को सामने आया था। वुहान (चीन) से लौटे तीन मेडिकल छात्रों में वायरस की पुष्टि हुई थी। इसके बाद विभिन्न वेरिएंट्स, जैसे बी.1.617 (डेल्टा) और बी.1.1.7 (अल्फा) ने खासकर 2021 की दूसरी लहर के दौरान व्यापक तबाही मचाई। मई 2025 में सोशल मीडिया रिपोर्ट्स और सरकारी अलर्ट के अनुसार, जेएन.1 जैसे नए वेरिएंट्स की उपस्थिति ने स्वास्थ्य तंत्र को फिर से सतर्क कर दिया है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च और भारतीय एसएआरएस-कोव-2 जीनोमिक्स कंसोर्टियम (आईएनएसएसीओजी) ने जीनोमिक निगरानी तेज कर दी है। अस्पतालों में गंभीर श्वसन रोग और फ्लू जैसे लक्षणों वाले मरीजों पर बारीक नजर रखी जा रही है। हालांकि इस लहर में अस्पताल में भर्ती और मृत्यु दर अपेक्षाकृत कम है, फिर भी मास्क पहनने की सलाह और सतर्क निगरानी इस वायरस के लगातार खतरे की पुष्टि करती है। इस लहर के उभरने के प्रमुख कारणों में वेरिएंट्स की जेनेटिक परिवर्तनशीलता है। एसएआरएस-कोव-2 की निरंतर उत्परिवर्तन क्षमता ने मौजूदा वैक्सीन और उपचारों की प्रभावशीलता को कम कर दिया है। आईएनएसएसीओजी लगातार नए वेरिएंट्स की पहचान में जुटा है, लेकिन 1.3 अरब की आबादी में समग्र जीनोमिक निगरानी करना एक जटिल चुनौती बना हुआ है। दूसरा टीकाकरण की अपनी सीमा है। भारत ने अब तक अरबों वैक्सीन डोज वितरित की हैं, लेकिन बूस्टर खुराक की कम दर और ग्रामीण क्षेत्रों में सीमित पहुंच से प्रतिरक्षा क्षमता कम हो गई है, जिससे पुनः संक्रमण का खतरा बढ़ गया है। इसके सामाजिक औरआर्थिक कारक भी हैं। पिछली लहरों से क्षतिग्रस्त अर्थव्यवस्था, बेरोजगारी, और अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाओं ने जनता की भेद्यता को और बढ़ाया है, जिससे नई स्वास्थ्य पहलों की सफलता सीमित होती जा रही है। भारतीय स्वास्थ्य प्रणाली के सामने कई तरह की चुनौतियां हैं। इनमें स्वास्थ्य अवसंरचना पर बोझ का बढ़ना है। 2021 की दूसरी लहर ने भारतीय स्वास्थ्य तंत्र की कमजोरियों को उजागर किया है। ऑक्सीजन, आईसीयू बेड और वेंटिलेटर की भारी कमी सामने आई। सरकार ने 600 से अधिक विशेष कोविड-19 केंद्र स्थापित किए और रेलवे कोच को आइसोलेशन वार्ड में परिवर्तित किया, फिर भी ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएं आज भी अपर्याप्त हैं। भारत में डॉक्टर से मरीज का अनुपात 1:1700 है और कई ग्रामीण स्वास्थ्य केंद्रों में आवश्यक स्टाफ की भारी कमी है। जांच और निगरानी की सीमाएं भी हैं। 2020 के मध्य तक भारत में लगभग 49 लाख नमूनों की जांच की जा चुकी थी, लेकिन राज्यों के बीच जांच क्षमता में असमानता बनी रही। बिहार जैसे राज्यों में जांच दर दिल्ली की तुलना में बहुत कम रही। जीनोमिक निगरानी के बावजूद, त्वरित निदान और एकत्रित परीक्षण जैसी रणनीतियों की आवश्यकता बनी हुई है ताकि संक्रमण पर समय रहते काबू पाया जा सके। स्वास्थ्यकर्मियों की सुरक्षा और थकावट से सब परिचित हैं। स्वास्थ्यकर्मी कोविड-19 की सबसे अग्रिम पंक्ति में रहे हैं। वैश्विक आंकड़ों के अनुसार, कुल मामलों में से 4-12 प्रतिशत मामले स्वास्थ्यकर्मियों में दर्ज हुए और 2020 तक भारत में 90 से अधिक डॉक्टर अपनी जान गंवा चुके थे। हालांकि रोजाना छह लाख पीपीई किट का उत्पादन शुरू हुआ, फिर भी गुणवत्ता और वितरण संबंधी समस्याएं बनी रहीं। स्वास्थ्यकर्मियों की शारीरिक और मानसिक थकावट स्वास्थ्य प्रणाली की लचीलापन क्षमता के लिए खतरा है। सामाजिक और व्यवहारिक अवरोध की दिक्कतें अलग हैं। शहरी इलाकों की घनी आबादी और अस्वच्छ परिस्थितियां सामाजिक दूरी का पालन करना मुश्किल बना देती हैं। 2020 का लॉकडाउन प्रवास, बेरोजगारी, और खाद्य संकट का कारण बना। गलत जानकारी और सामाजिक कलंक ने लोगों को जांच या उपचार से हतोत्साहित किया। जागरुकता अभियान शुरू किए गए, लेकिन व्यवहार में बदलाव धीमा और असमान रहा। भारत ने दुनिया का सबसे बड़ा टीकाकरण अभियान चलाया, जिसमें सीरम इंस्टीट्यूट द्वारा निर्मित कोविशील्ड प्रमुख रही। हालांकि बूस्टर डोज की कम दर और ग्रामीण क्षेत्रों में पहुंच की समस्या आज भी बरकरार है। आईसीएमआर ने आरटी-पीसीआर किट को मंजूरी दी और रैपिड एंटीबॉडी टेस्ट शुरू किए। एकत्रित परीक्षण और स्व-परीक्षण किट जैसे उपाय संक्रमण की शृंखला को तोड़ने में सहायक हो सकते हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने मास्क पहनने, सामाजिक दूरी बनाए रखने और पोस्ट-कोविड देखभाल पर जोर दिया। हालिया दिशा-निर्देशों में सतर्कता और संतुलन की रणनीति को प्रमुखता दी गई है। 2021 के बजट में वन हेल्थ कार्यक्रम की शुरुआत की गई, जो मनुष्य, पशु और पर्यावरण की संयुक्त स्वास्थ्य दृष्टिकोण को महत्व देता है। इसके लिए नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ एनिमल बायोटेक्नोलॉजी ने एक विशेष केंद्र की स्थापना की है। हालांकि कुछ महत्वपूर्ण कमियां अब भी मौजूद हैं। मसलन राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 में जूनोटिक महामारियों की आशंका को समुचित रूप से शामिल नहीं किया गया। टीबी नियंत्रण और टीकाकरण कार्यक्रमों पर असर पड़ा, जैसे कि 2019 से 2020 के बीच टीबी के मामलों में 24 फीसद की गिरावट आई। कोरोना महामारी ने लैंगिक असमानता को और गहराया। महिलाओं को नौकरियों से हाथ धोना पड़ा और देखभाल का बोझ भी अधिक पड़ा। स्वास्थ्य बजट को जीडीपी के न्यूनतम 2.5 फीसद तक बढ़ाना समय की मांग है। डिजिटल तकनीक और विकेंद्रीकृत मॉडल अपनाकर प्रतिक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। उच्च गुणवत्ता वाले पीपीई, पर्याप्त स्टाफिंग और मानसिक स्वास्थ्य सुविधाएं दी जानी चाहिए। पारदर्शी संदेशों और सांस्कृतिक संवेदनशीलता पर आधारित अभियानों से गलतफहमियां दूर की जा सकती हैं। आयुर्वेद और अन्य पारंपरिक पद्धतियों को रोकथाम में सम्मिलित कर सामुदायिक प्रतिरक्षा को मजबूत किया जा सकता है। वैक्सीन वितरण और वेरिएंट निगरानी में अंतरराष्ट्रीय सहयोग भारत की तैयारी को सुदृढ़ कर सकता है। **-डॉ. अंसार अहमद**

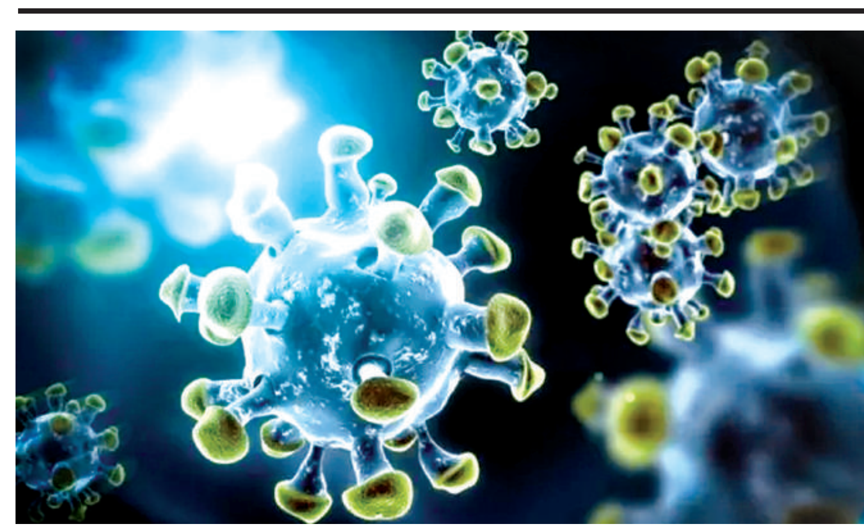

आतंकवाद भारत ही नहीं विश्व के लिए नासूर

सुरेश सिंह बैस 'शाश्वत'

आज संपूर्ण विश्व की स्थिति अत्यंत नाजुक प्रतीत होती है। चारों ओर आतंकवाद और युद्धों के घने बादल मडरा रहे हैं। लोगों की आपसी मनमुटाव की बात तो गई गुजरी हो गई अब तो देशों के बीच मनमुटाव और वैरभाव के कारण आतंकवाद जैसी समस्या ने जन्म ले लिया है। आज की स्थिति में देशों के बीच मतभेद होने पर उस समस्या को शांतिपूर्वक सुलझाना छोड़ कर आतंकवाद का जाल फैला दिया जाता है। हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान भी तो वर्षो से यही करता चला आ रहा है। पिछले दिनों पहलगाम में पाकिस्तान द्वारा पोषित आतंकवादियों ने निर्दोष मासूम भारतीयों की नृशंस हत्या की उससे तो भारत जैसा शांतिप्रिय, अमन प्रिय और भाईचारे वाला देश भी आक्रोश से उबल पड़ा। परिणामतः भारत को सबक सिखाने के लिए और न्याय के लिए ऑपरेशन सिंदूर चलाना पड़ा। इस ऑपरेशन ने पाकिस्तान की चूलें हिला कर रख दी, लेकिन आगे भविष्य में पाकिस्तान इस कार्यवाही से सबक ले ले तो उसका भी भला और दुनिया का भी भला होता, भगवान करे उसे इस बार अकल आ जाए। वैसे देखें तो भारत में आतंकवादी की जड़े वहीं से फैली हुई हैं। पंजाब, काश्मीर सहित पूरा देश इस जाल में फैला हुआ है। दूसरे के घर में उपद्रव पाकिस्तान भले ही फैला रहा है, पर इस प्रक्रिया में उसका अपना घर कितना कंगाल हो गया है। व्यापार वनिज उद्योग धंधे उत्पादन सभी कुछ सत्यानाश कर बैठा पाकिस्तान ने अपने ही हाथों। शायद उसे अब तक इसका होश नहीं आया है। वर्ना वह अपनी शैतानियत से कब का बाज आ चुका होता। अब स्थिति यह है कि ठीक पाकिस्तान के नक्शे कदम पर भारत के अहसानों को धता बताते हुए बांग्लादेश भी उसी राह पर चल निकला है। पडोस के ही एक अन्य देश श्रीलंका की स्थिति भी ''लिट्टे'' जैसी आतंकवादी संस्था से निपटते-निपटते काफी गंभीर हो चली। फिर उसके बाद कमजोर आर्थिक स्थिति ने उसे भी कंगाल कर दिया, वह तो भारत था जिसने उसे नाजुक स्थिति से उबारा। चूंकि भारत भी श्रीलंका की आंतरिक खराब स्थिति के दुष्प्रभाव से अछूता नहीं रह पाया। भारत के अत्यंत लोकप्रिय प्रधानमंत्री स्व.राजीव गांधी की हत्या लिट्टे (आंतकवादी संस्था) ने कर दी। उनका कुसूर नाम इतना था कि उन्होंने अपने पड़ोसियों के प्रति सहदयता दिखाई थी। आतंकवाद अब सामान्य जीवन के लिये अंतराष्ट्रीय चुनौती के रुप में उपस्थित है। विश्व क्षितिज पर आंतकवाद की काली छाया परमाणु युद्ध से भी ज्यादा भयानक है। जिसका शिकार भारत ही नहीं वरन संपूर्ण विश्व भी बना हुआ है। आज आवश्यकता है कि प्रत्येक मनुष्य अपने व्यस्त जीवन के कुछ क्षण निकाल कर यह विचार करे कि आंतकवाद की जड़ें पनपने न पाएं, इसको पनपने से न जाने कितने बेगुनाह व्यक्तियों को असमय जान काल का ग्रास बन जाना पड़ रहा है। कितने मासूमों के ऊपर से मां बाप का ही साया उठ गया। ईश्वर की सर्वोत्कृष्ट रचना मनुष्य है। मनुष्य को बुद्धि प्रदान कर संवेदन शील प्राणी बनाकर शायद ईश्वर ने यही सोचा होगा कि वह धरती पर सुखसमृद्धि, मानवता का प्रसार करेगा। प्रेम और स?द्भाव से धरती को स्वर्ग का रूप प्रदान करेगा। पर यह बात विचारणीय है कि क्या आज मानव ईश्वर की अपेक्षाओं के अनुरुप चल रहा है....? इसका उत्तर नकारात्मक है। आज मानव आंतकवाद के साये से डरा हुआ है, सहमा हुआ है। समाज में आर्थिक असमानता भी आतंकवाद को बढ़ावा दे रहा है। लोग अपनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये अनुचित साधनों का प्रयोग अनुचित ढंग से करते हैं इनकी अंधी दौड़ मानवता को विछिप्त बना रही है। धर्मान्धता और भाषा की विविधता भी इस समस्या को बढ़ाने में सहायक हो रही है। हमारे ही देश के उन्नर दक्षिण राज्यों में मात्र भाषा के नाम पर कई हिंसात्मक आंदोलन हुये हैं। विश्व के देशों में समन्वय की कमी दिन पे दिन बढ़ रही है। राष्ट्रसंघ जैसी संस्थाएं भले ही तीसरे विश्व युद्ध को रोके हुये हैं, पर ये संस्थाएं मानव की भावनाएं नहीं बदल पा रही है, जिससे पर आतंकवाद के साये में सासें लेने को मजबूर हो रहा है। जातिवाद, रंगभेद की नीति की आड़ में भी आतंकवाद को प्रश्नय मिल रहा है। उदाहरणार्थ अफगानिस्तान,सीरिया, फिलीस्तीन,बंगलादेश, इजराइल सहित अन्य कई देशों की भयावह स्थिति आज मुंह बाये खड़ी है जिसका कोई समाधान हाल फिलहाल तो नहीं दिखाई दे रहा है। हालांकि आंतकवाद के निदान के लिये अंतर्राष्ट्रीय व राष्ट्रीय स्तर पर कई कार्य किये गये हैं जैसे (1) राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद निरोधक संगठनों का निर्माण (2) सामाजिक संस्थाओं का विकास (3) विभिन्न विषयांतर्गत सम्मेलनों का आयोजन (4) गुट निरपेक्ष आंदोलन (5) विभिन्न राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार (6) अंतर्राष्ट्रीय सहयोग व संधि वार्तायें (7) शांति सभायें।

सेहत मंत्र

हर उम्र में रहना चाहते हैं फिट, तो नियमित करें स्क्वॉट्स

फिट रहने के लिए लोग व्यायाम करते हैं, लेकिन वे केवल शरीर के ऊपरी हिस्से की तरफ अधिक ध्यान देते हैं और ज्यादातर समय केवल एब्स और बाइसेप्स बनाने में ही लगाते हैं। जबकि कई शोधों में यह साबित हो चुका है कि शरीर के ऊपरी हिस्?से की तरह पैरों का भी व्यायाम बहुत फायदेमंद है। आज हम आपको फिट रहने और लंबी उम्र तक स्वस्थ दुरुस्त रहने के लाभ बता रहे हैं। स्क्वॉट्सः पैरों की मांसपेशियों को मजबूत बनाने के लिए यह बेहतर वर्कआउट है। यह कई तरह का भी होता है। इसके नियमित अभ्यास से पैर की मांसपेशियां मजबूत होती हैं। इसे करने के लिए पीठ को सीधी रखें। ध्यान रहे कि घुटने 90 डिग्री से अधिक के कोण पर न मुड़े हों, इससे चोट लग सकती है। लंजेस करने के लिए, सीधे नीचे की तरफ झुकें। एड़ी पूरे समय ऊपर ही होनी चाहिए। स्क्वॉट्स एंड लंजेस को अधिक चुनौतीपूर्ण बनाने के लिए आप बेस बॉल जैसी अस्थिर सतह का इस्तेमाल कर सकती हैं। अगर स्क्वॉट्स करते समय पीठ में दर्द होता है तो पीठ के पीछे दीवार के सहारे एक जिम बॉल रखें। फिर इस बताई गई प्रक्रिया को दोबारा करें। इस प्रक्रिया की संख्या रोजाना धीरे-धीरे बढ़ाएं। स्क्वॉट्स एंड लंजेस को एक रैंप पर भी कर सकते हैं। बारबेल बेंच प्रेसः सीने में विस्तार व शेप लाने के लिए बेंच प्रेस वर्षों से सबसे बेहतरीन एक्सरसाइज रही है। दुनिया भर के विशेषज्ञों द्वारा बेंच प्रेस को चेस्ट शेप्ड व मज़बूत करने के लिए मानक एक्सरसाइज माना गया है। इसे करने के लिए एक मानक ओलंपिक बैंच पर अपनी पीठ के बल फ्लैट लेट जाएं, अब अपने पैरों को ज़मीन पर सीधे कर वज़न वाली रौड को स्टैंड से हटाएं और चेस्ट की ओर नीचे लाएं और फिर ऊपर ले जाएं। रौड का संतुलन बनाए रखने के लिए दोनों हाथों को साथ चलाएं।

धर्म मंत्र

भारतवर्ष में सर्वाधिक पूजे जाने वाले आराध्य देव हैं हनुमानजी

भगवान हनुमानजी इस कलियुग में महान शक्ति हैं, सबसे ज्यादा पूजे जाने वाले इष्ट हैं, जो अष्ट सिद्धि और नव निधि के देने वाले हैं। इसलिए उनकी विश्वासपूर्वक जो पूजा करता है, उसकी मनोकामना अवश्य पूरी होती है। उनको हिन्दू देवताओं में सबसे शक्तिशाली माना गया है, वे रामायण जैसे महाग्रंथ के सह पात्र थे। वे भगवान शिव के 11वें रूद्र अवतार थे जो श्रीराम की सेवा करने और उनका साथ देने त्रेता युग में अवतरित हुए थे। भारतीय संस्कृति में मानव जीवन के लक्ष्य भौतिक सुख तथा आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति के लिए अनेक देवी देवताओं की पूजा का विधान है जिनमें पंचदेव प्रमुख हैं। पंच देवों का तेज पुंज श्री हनुमानजी हैं। माता अन्जनी के गर्भ से प्रकट हनुमानजी में पांच देवताओं का तेज समाहित हैं। अजर, अमर, गुणनिधि, सुत होहु- यह वरदान माता जानकीजी ने हनुमानजी को अशोक वाटिका में दिया था। स्वयं भगवान् श्रीराम ने कहा था कि- 'सुन कपि तोहि समान उपकारी, नहि कोउ सुर, नर, मुनि, तुनधारी।' बल और बुद्धि के प्रतीक हनुमानजी राम और जानकी के अत्यधिक प्रिय हैं। इस धरा पर जिन सात मनीषियों को अमरत्व का वरदान प्राप्त है, उनमें बजरंगबली भी हैं। उनको मारुतिनंदन, पवनपुत्र, केशरीनंदन आदि अनेकों नामों से पुकारा जाता है। उनका एक नाम वायुपुत्र भी है, उन्हें वातात्मज भी कहा गया है अर्थात वायु से उत्पन्न होने वाला। वे सभी कलाओं में सिद्धहस्त एवं माहिर थे। वीरों में वीर, बुद्धिजीवियों में सबसे विद्वान।

पर्यटन

खूबसूरती में किसी से कम नहीं है नॉर्थ ईस्ट इंडिया

बहुत से लोग ऐसे होते हैं, घूमने के लिए नॉर्थ इंडिया की लोकेशन्स पर जाते हैं। इसकी एक वजह ये है कि यहां का रूट और बजट. जहां वीकेंड में भी जा सकते हैं। जैसे दिल्ली, उत्तरप्रदेश, पंजाब, चंडीगढ़ जैसी जगहों के पर्यटक हिल स्टेशन पर जाने के लिए उत्तराखंड और हिमाचल की जगहों को चुनते हैं लेकिन अगर आप इन जगहों पर घूमकर आ चुके हैं और कोई दूसरी दिलचस्प डेस्टिनेशन्स का अनुभव करना चाहते हैं, तो आप नॉर्थ इंडिया के खूबसूरत राज्यों में घूम सकते हैं। गंगटोक : सिक्किम की राजधानी गंगटोक काफी खूबसूरत शहर है। पहाड़ियों की ढाल पर दोनों ओर आकर्षक भवन दिखाई देते हैं। शहर में पारंपरिक रीति-रिवाजों और आधुनिक जीवनशैली का अनूठा संगम देखने को मिलता है। युक्सोमः यह सिक्किम की पहली राजधानी थी। इस जगह को पवित्र स्थान समझा जाता है, क्योंकि सिक्किम का इतिहास ही इससे शुरू होता है। यह प्रसिद्ध माउंट कंचनजंघा की चढ़ाई के लिए बेस कैम्प भी है। यहां आप याक की सवारी भी कर सकते हैं। सोम्यो लेकः एक किलोमीटर लंबी और अंडाकार सोम्यो झील पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। मई और अगस्त के बीच झील का इलाका बेहद खूबसूरत हो जाता है। दुर्लभ किस्मों के फूल यहां देखे जा सकते हैं। इनमें बसंती गुलाब, आइरिस और नीले-पीले पोस्त शामिल हैं। झील में जलीय और पक्षियों की कई प्रजातियां मिलती हैं। लाल पांडा के लिए भी यह एक मुफीद जगह है। सर्दियों में झील का पानी जम जाता है। नाथुला दर्राः नाथु-ला दर्रा भारत-चीन सीमा पर स्थित है। इसकी ऊंचाई 14,200 फीट है। सिक्किम को चीन के तिब्बत स्वशासी क्षेत्र से जोड़ता है। ये यात्रा अपने आप में आनंद देने वाला अनुभव है। धुंध से ढंकी पहाड़ियां, टेढ़े-मेढ़े रास्ते और गरजते झरने और रास्ता तो अद्भुत है। इस जगह जाने के लिए पर्यटकों के पास परमिट होना चाहिए।

हरिजन आबादी की सुरक्षित भूमि पर दबंगों का अवैध कब्जा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रामनगर बाराबंकी । तहसील रामनगर की ग्राम पंचायत चुरोलिया में हरिजन आबादी के लिए सुरक्षित सरकारी भूमि पर गांव के ही कुछ दबंगों द्वारा अवैध कब्जा किए जाने का गंभीर मामला सामने आया है। ग्रामीणों का आरोप है कि वर्षों से वे इस कब्जे को हटवाने के लिए प्रशासनिक दफ्तरों के चक्कर काट रहे हैं, लेकिन हल्का लेखपाल एवं अन्य राजस्व कर्मियों द्वारा भ्रामक रिपोर्ट लगाकर मामले को दबा दिया जा रहा है। ग्राम चुरोलिया की गाटा संख्या 166, रकबा 0.076 हेक्टेयर भूमि, अनुसूचित जाति समुदाय के लिए आरक्षित है। ग्रामीणों का कहना है कि इस भूमि पर अनूप, महेश, राकेश आदि पुत्रगण मंगल ने अवैध रूप से कब्जा कर स्थायी व अस्थायी निर्माण कर लिए हैं। इतना ही नहीं, वहां मेंथा पेराई की टंकी लगाकर व्यावसायिक गतिविधियां संचालित की जा रही हैं।

सार्वजनिक रास्ते भी बाधित

इस अवैध कब्जे के कारण ग्रामीणों के लिए चक मार्ग एवं अन्य सार्वजनिक रास्तों

पर आवाजाही कठिन हो गई है। ग्रामवासियों रामराज, मुरली, श्यामलाल, चेतराम, विशेश्वर, रामकुवारे सहित दर्जनों लोगों ने इस मुद्दे पर तहसील दिवस एवं जनसुनवाई कार्यक्रमों में आवेदन देकर कार्रवाई की मांग की है।

पुलिस की रिपोर्ट में पुष्टि, फिर भी प्रशासन मौन

मौके पर गई त्रिलोकपुर चौकी पुलिस की रिपोर्ट में अवैध कब्जे की पुष्टि की गई है। पुलिस ने स्पष्ट उल्लेख किया है कि उक्त भूमि पर कब्जा वास्तविक है। इसके बावजूद लेखपाल द्वारा ''कोई कब्जा नहीं है'' जैसी रिपोर्ट दर्ज कर प्रशासनिक कार्रवाई से बचा जा रहा है।

डीएम के आदेशों की उड़ रही धज्जियां

वर्तमान जिलाधिकारी द्वारा पूर्व में यह स्पष्ट निर्देश दिए गए थे कि सरकारी भूमि पर कब्जा मिलने पर हल्का लेखपाल को जिम्मेदार ठहराया जाएगा। इसके बावजूद उनके आदेशों की खुलेआम अवहेलना हो रही है। जब स्थानीय स्तर पर सुनवाई नहीं हुई तो ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री को पत्र भेजकर न्याय की गुहार लगाई है।

ग्रामीणों ने लगाया लेखपाल पर पक्षपातपूर्ण रिपोर्ट देने का आरोप, मुख्यमंत्री को भेजा पत्र

बोले एसडीएम जांच कर दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी

यह भूमि हरिजन आबादी के लिए आरक्षित है और वर्तमान में अनुसूचित जाति के ही लोगों का पुराना कब्जा है। शिकायतकर्ता भी उसी वर्ग से संबंधित हैं। हम मामले की निष्पक्ष जांच कर उचित निर्णय लेंगे।

विवेकशील यादव
एसडीएम रामनगर

लोधेश्वर महादेवा में तीन दिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट का भव्य आयोजन

अनुभव इलेवन को हराकर बाबा इलेवन ने दर्ज की शानदार जीत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रामनगर, बाराबंकी। लोधेश्वर महादेवा में तीन दिवसीय क्रिकेट टूर्नामेंट का आयोजन उत्साहपूर्वक किया गया। टूर्नामेंट के दूसरे दिन मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के मंडल अध्यक्ष श्री अमित कुमार सिंह ने फीता काटकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। अपने संबोधन में श्री सिंह ने कहा कि ऐसे खेल आयोजनों से ग्रामीण क्षेत्रों में छिपी प्रतिभाएं सामने आती हैं और युवाओं को अपनी क्षमता दिखाने का अवसर मिलता है। साथ ही, खेल से शारीरिक विकास होता है और स्वास्थ्य भी उत्तम रहता है।

विशिष्ट अतिथि के रूप में महादेवा व्यापार मंडल के अध्यक्ष श्री अमित तिवारी उपस्थित रहे। उन्होंने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए उद्घाटन मैच की शुरुआत कराई। कार्यक्रम के संयोजक शिवम तिवारी, अंकित तिवारी, तीव्र गुप्ता, मलिक फैसल एवं अनुभव तिवारी की देखरेख में पहला मुकाबला बाबा इलेवन

और अनुभव इलेवन के बीच खेला गया। अनुभव इलेवन ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का निर्णय लिया, लेकिन पूरी टीम मात्र 57 रन पर सिमट गई। जवाब में बाबा इलेवन ने शानदार प्रदर्शन किया। मोहित की तेज़-तर्रार 39 रनों की पारी की बदौलत बाबा इलेवन ने महज तीन विकेट गंवाकर सात विकेट से यह मुकाबला अपने नाम कर लिया। इस अवसर पर महादेवा क्षेत्र के अनेक क्रिकेट प्रेमी व ग्रामीण बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और मैच का भरपूर आनंद लिया।

भागवत कथा के समापन पर छा गया मातम भंडारे के दिन जजमान के पिता की दर्दनाक मृत्यु

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हैदरगढ़, बाराबंकी। आस्था और भक्ति से ओतप्रोत एक सप्ताह तक चली भागवत कथा के समापन पर जब भंडारे का आयोजन किया गया था, तब किसी को भी यह अंदेशा नहीं था कि यह दिन खुशियों के बजाय गहरे शोक में बदल जाएगा। हैदरगढ़ के लिलहौरा वार्ड निवासी 65 वर्षीय राम किशोर सिंह की अचानक हुई दर्दनाक मृत्यु ने पूरे नगर को स्तब्ध और शोकाकुल कर दिया। बताया गया कि राम किशोर सिंह, जो कथा के जजमान विकास सिंह के पिता थे, सोमवार को अचानक अस्वस्थ हो गए। उन्हें तेज़ उल्टी की शिकायत हुई, जिसके बाद परिजन उन्हें तुरंत सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, हैदरगढ़ ले गए। लेकिन डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। यह समाचार मिलते ही कथा स्थल पर प्रसाद वितरण की रौनक एक पल में सन्नाटे में बदल गई। जो स्थान अभी तक भजन-कीर्तन और श्रद्धा की भावनाओं से गूंज रहा था, वहां अब सिर्फ आंसू और स्तब्धता थी। नगर के लोगों के लिए यह एक ऐसा क्षण था जब आस्था और जीवन की नश्वरता आमने-सामने खड़ी हो गईं। भागवत कथा, जो जीवन के सत्य और मोक्ष की व्याख्या करती है, उसी के समापन पर इस प्रकार की घटना ने सभी को भीतर तक झकझोर दिया। श्रद्धालु यह सोचने पर विवश हो गए कि कुदरत का यह कैसा क्रूर व्यंग्य था। घटना की सूचना मिलते ही नगर पंचायत अध्यक्ष आलोक तिवारी, पूर्व सभासद ओम प्रकाश सिंह चौहान, पवन सिंह और अन्य सम्मानित जन तुरंत राम किशोर सिंह के घर पहुंचे और शोक संतप्त परिवार को सांत्वना दी। पूरे नगर में शोक की लहर दौड़ गई है और लोगों ने मृत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की। इस हृदयविदारक घटना ने यह संदेश दिया कि जीवन अत्यंत क्षणभंगुर है, और कभी भी कोई भी मोड़ ऐसा आ सकता है जो सारी खुशियों को एक पल में निगल जाए। श्रद्धा, भक्ति और वेदना का यह अनोखा संगम नगरवासियों के मन में लंबे समय तक अपनी छाप छोड़ जाएगा।

परिजनों का बुरा हाल नगरवासी स्तब्ध

दवा विक्रेता ने की आशा से अभद्रता

निन्दूरा बाराबंकी। घुंघटेर कोतवाली क्षेत्र के सोहीपुर मजरे दीनपनाह गांव निवासी आशा बहू शबनम मंगलवार को एक महिला मरीज को लेकर सामुदायिक स्वस्थ्य केंद्र दवा लेने गई थी डॉ को दिखाकर घर लौटते समय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के बाहर राज मेडिकल स्टोर द्वारा जबरन दवा खरीदने का दबाव बनाया गया जिसका आशा बहू ने विरोध किया। नाराज मेडिकल स्टोर संचालक के भाई अंकित यादव पुत्र संतोष यादव ने बद्दी बद्दी गाली देते हुए आशा बहू के सर पर बैट से हमला कर दिया,जिससे वह बेहोश होकर गिर गई। पीड़ित के मुताबिक साथ में मौजूद मरीज से भी गाली गलौच किया गया। आशा बहू की तहरीर पर आरोपित के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया गया है।

पंचायत सहायकों की मनमानी से ग्रामीण बेहाल, सरकारी योजनाएं हो रही ठप

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सिद्धौर बाराबंकी । सरकार द्वारा गरीबों और ग्रामीणों के कल्याण हेतु चलाई जा रही योजनाएं तभी सफल हो सकती हैं जब उन्हें जमीनी स्तर पर ईमानदारी और तत्परता से लागू किया जाए। लेकिन जब इन योजनाओं की रीढ़ माने जाने वाले पंचायत सहायक ही नदारद हो जाएं, तो सवाल सिर्फ सिस्टम पर नहीं, बल्कि अधिकारियों की कार्यप्रणाली पर भी उठते हैं।

डिघावा पंचायत भवन बना वीरान, ग्रामीणों की उम्मीदें टूटीं

डिघावा गांव का पंचायत भवन दोपहर 1 बजे पूरी तरह सन्नाटा ओढ़े हुए था। पंचायत सहायक शिवानी वर्मा की गैरहाज़िरी से परेशान दर्जनों ग्रामीण वहां मायूस लौटते दिखे। कोई आयुष्मान कार्ड बनवाने आया था, तो कोई विधवा पेंशन के लिए दस्तावेज़ों की जांच कराने।

ग्रामीणों का कहना है कि उन्हें अब जन सेवा केंद्रों का सहारा लेना पड़ता है, जहां

मामूली कामों के लिए भी 200 से 500 रुपये तक वसूले जाते हैं। गांव के ही रामधारी वर्मा बताते हैं, ''सरकार तो सुविधा दे रही है, लेकिन पंचायत सहायक के न होने से ये सुविधाएं हम तक पहुंच ही नहीं रही हैं।''

छतौरा पंचायत में झाड़ियों ने ली खिड़कियों की जगह

छतौरा गांव का हाल और भी बदतर है। पंचायत भवन की खिड़कियों पर झाड़ियां उग आई हैं और परिसर पूरी तरह जर्जर व बंद नजर आया। यह साफ संकेत देता है कि महीनों से यहां कोई गतिविधि नहीं हुई है। पंचायत सहायक हिमांशु वर्मा के बारे में ग्रामीणों ने नाम न छापने की शर्त पर बताया कि वे लंबे समय से जनपद से बाहर रह रहे हैं और पंचायत भवन कभी-कभार ही खुलता है।

प्रशासन की चुप्पी, ग्रामीणों में बढ़ता आक्रोश

ग्रामीणों का कहना है कि बार-बार शिकायत के बावजूद प्रशासन की तरफ से कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। जिससे साफ झलकता है कि पंचायत सहायकों की मनमानी को कहीं न कहीं अधिकारियों का मौन समर्थन प्राप्त है।

अब सवाल यह उठता है क्या सरकारी योजनाएं कागज़ों तक ही सीमित रह जाएंगी? क्या पंचायत सहायक की जिम्मेदारी सिर्फ नियुक्ति तक ही सीमित है?

और सबसे बड़ा सवाल ऽ आखिर इन लापरवाह सहायकों पर कार्रवाई क्यों नहीं होती? ग्रामीणों की मांगः पंचायत सहायकों की उपस्थिति की नियमित निगरानी हो। गैरहाज़िर सहायकों पर सख्त कार्रवाई कर नई नियुक्ति की जाए। पंचायत भवनों की नियमित सफाई और संचालन सुनिश्चित हो। जब तक जमीनी स्तर पर जवाबदेही नहीं तय की जाएगी, तब तक सरकारी योजनाओं की सफलता सिर्फ कागजों में ही सिमटी रहेगी।

अधिकारियों की चुप्पी पर सवाल, आखिर लापरवाह पंचायत सहायकों पर क्यों मेहरबान है प्रशासन?

वन महकमा सुर्खियों में, लापरवाही से मरणासन्न हुआ युवक

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। अपने क्रियाकलाप को लेकर वन विभाग एक बार फिर सुर्खियों में है।जिले के कुर्सी कोतवाली क्षेत्र में शारदा नहर में रेस्क्यू के दौरान वन विभाग की लापरवाही से घड़ियाल ने एक युवक पर हमला कर दिया। घड़ियाल के हमले में युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। हैरान करने की बात ये है कि घायल युवक को वन विभाग की टीम स्थानीय अस्पताल में छोड़कर फरार हो गई। ग्राम प्रधान ने उप जिलधिकारी से शिकायत की ,जिसके बाद वन विभाग सक्रिय हुआ।

आपको बता दें कि कुर्सी कोतवाली क्षेत्र से निकली शारदा नहर स्थित पोखन्नी

रेगुलेटर में कई दिनों से एक घड़ियाल रेगुलेटर के पास रह रहा था और वन विभाग की टीम को कई बार लोगों ने घड़ियाल को पकड़ने को लेकर सूचना दी थी। वन विभाग के पास घड़ियाल को पकड़ने का इंतजाम ना होने के चलते अभी तक घड़ियाल पकड़ा नहीं गया था। मंगलवार को वन विभाग की टीम द्वारा बिना किसी सुरक्षा इंतजाम के स्थानीय लोगों को बुलाकर जाल से घड़ियाल को पकड़ने की कोशिश की जा रही थी कि अचानक घड़ियाल को पकड़ते समय निन्दूरा गांव के इंतियाज़ पुत्र मुन्ना पर घड़ियाल ने हमला कर दिया, जिसमें इंतियाज़ गंभीर रूप से घायल हो गया।

ग्राम प्रधान प्रतिनिधि कमलेश यादव ने बताया कि उन्हें सुबह सूचना मिली कि गांव के एक युवक जिसे वन विभाग की टीम बुलाकर ले गई थी। उसे घड़ियाल ने उसे घायल कर दिया है। तब प्रतिनिधि द्वारा डीएफओ को फोन मिलाया गया, पर फोन नहीं उठा। इसके बाद उन्होंने एसडीम फतेहपुर को स्थित से अवगत कराया और एसडीम ने जब डीएफओ को फोन किया तब जाकर वन विभाग हरकत में आया और युवक को ले जाकर जिला अस्पताल में भर्ती कराया। स्मरणीय है कि इन्हीं वनकर्मियों की लापरवाही से दुर्लभ प्रजाति मछली डॉल्फिन बेमौत मारी गई थी।

तालाब: श्रमिकों को काम, मछली पालकों को रोजगार, वरदान बनी मनरेगा योजना

कैनविज टाइम्स संवाददाता

निंदूरा बाराबंकी। विकास खंड निंदूरा के सालेहपुर गांव में मनरेगा योजना के तहत तालाब खुदाई कार्य से श्रमिकों को रोजगार मुहैया हो रहा है। मंगलवार को करीब छः दर्जन से अधिक मजदूरों को तालाब खोदाई में लगाया गया,जिसमें अधिकांश श्रमिक महिलाएं थी। तालाब की खुदाई हो जाने से जल संरक्षण तो होगा ही साथ ही मछली पालन को भी बढ़ावा मिलेगा जो कि आमदनी का जरिया बनेगा। क्षेत्र में पहले से ही कई ग्राम पंचायतों में मत्स्य पालन का कार्य चल रहा है और मत्स्य विक्रय द्वारा आमदनी भी हुई है। खंड विकास अधिकारी आलोक कुमार वर्मा ने ग्राम

पंचायत सचिव पूजा सिंह के साथ पहुंचकर तालाब खुदाई का कार्य देखा और आवश्यक दिशा निर्देश भी दिए।

तराई क्षेत्र में पहुंची एसडीएम प्रीति सिंह बाढ़ पूर्व तैयारी का लिया जायज़ा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सिरौलीगौसपुर, बाराबंकी। आगामी मानसून और संभावित बाढ़ के खतरे को ध्यान में रखते हुए उपजिलाधिकारी प्रीति सिंह ने मंगलवार को सिरौलीगौसपुर तहसील के तराई क्षेत्रों का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने लोढेमऊ, कोठरी, गौरिया और तेलवारी जैसे बाढ़ संभावित गांवों में चल रहे अनुरक्षण और बचाव कार्यों का स्थलीय निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान एसडीएम के साथ तहसीलदार शरद सिंह, लेखपाल आनंद कुमार शर्मा और राम आशीष समेत अन्य राजस्व विभाग के अधिकारी भी उपस्थित रहे। टीम ने सबसे पहले लोढेमऊ घाट का दौरा किया, जहां सरयू नदी की स्थिति और उसके जलस्तर पर निगरानी की जा रही है।

इसके बाद एसडीएम ने कोठरी और गौरिया गांव का निरीक्षण किया, जहाँ उन्होंने बाढ़ प्रभावित होने की आशंका वाले स्थानों पर चल रहे कार्यों की प्रगति का जायज़ा लिया। ग्रामीणों से भी बातचीत कर उन्हें सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों के बारे में जानकारी दी और उनकी समस्याएं सुनीं।

अधिकारियों ने ग्रामीणों को आश्वासन

दिया कि इस बार समय से पहले सभी जरूरी इंतज़ाम पूरे किए जा रहे हैं ताकि किसी भी आपात स्थिति में राहत और बचाव कार्य प्रभावी ढंग से किए जा सकें।

एसडीएम प्रीति सिंह ने बाढ़ खंड के अधिशासी अभियंता से कार्यों की विस्तृत प्रगति रिपोर्ट ली और निर्देश दिए कि सभी आवश्यक अनुरक्षण कार्य और तटबंधों की मरम्मत का कार्य 15 जून तक हर हाल में पूरा कर लिया जाए। उन्होंने यह भी कहा कि किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी और समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण कार्य सुनिश्चित किया जाना चाहिए।अंत में, एसडीएम ने संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि ग्रामीणों के बीच जागरूकता कार्यक्रम चलाकर उन्हें बाढ़ से पूर्व एहतियाती उपायों के बारे में भी अवगत कराया जाए।

जेठ माह का चौथा बड़ा मंगल, आयोजनों की धूम भोजन प्रसाद वितरण, पवन सुत का गुणगान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। ज्येष्ठ मास के चौथे बड़े मंगल के पावन अवसर पर हनुमान जी महाराज के भक्तों में भारी उत्साह दिखा। हनुमान मंदिरों में प्रातः काल से ही बजरंगबलीके भक्त दर्शन अर्चन के लिए कतारबद्ध हुए थे। शहर से गांव तक जगह-जगह भंडारा आयोजन और प्रसाद वितरण किया जा रहा था। तो कोई ठंडा शरबत और जल वितरित कर रहा था। आवास विकास कालोनी में भारी उत्साह दिखा। शिवयोग पीठम आश्रम पर परंपरागत हनुमान चालीसा का पाठ और सुंदर कांड पाठ में बजरंगबली के भक्तों की भारी भीड़ रही। स्वामी चेतनानंद जी परमहंस के सानिध्य में सुंदरकांड पाठ कर लोग पुण्य के भागी बन रहे हैं। वहीं कालोनी में हर्ष मिश्रा समाजसेवी चमन सिंह वर्मा पत्र कार द्वारा भंडारा एवं प्रसाद वितरण किया गया। श्री मिश्रा जी द्वारा आयोजित परम्परागत आयोजन में शहर के गणमान्य सम्मिलित हुए। श्री मिश्रा के तीन पुत्र व पुत्रवधुओं ने भोजन प्रसाद वितरण का दायित्व सम्भाला। मुख्य मार्ग से आने जाने

जगह-जगह हुआ प्रसाद, जल शर्बत वितरण

वाले लोगों को रोक कर भोजन प्रसाद प्रदान किया जा रहा था। सुप्रसिद्ध कवित्री कविता तिवारी प्रसाद वितरण में अग्रणी दिखी।

हैदरगढ़ : विकास खंड परिवार द्वारा ब्लाक गेट पर भव्य भंडारे का आयोजन किया गया जिसमें ब्लाक प्रमुख प्रतिनिधि राम देव सिंह खंड विकास अधिकारी संजीव गुप्ता द्वारा प्रसाद वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया । इस दौरान सचिव पवन कुमार , हर्षित श्रीवास्तव , अजय यादव , दीपक राजपूत , ज्ञान प्रकाश सिन्हा , अखिलेश मिश्रा , नवीन कुमार सिंह , दिनेश प्रसाद , चंद्र भानू पांडेय , सत्य प्रकाश वर्मा , विंधराज यादव , चंद्रेश कुमार , आदि मौजूद रहे ।

सिद्धौर : कस्बा सिद्धौर समेत ग्रामीण क्षेत्र में जगह जगह समाज सेवियों द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया। आयोजित भंडारे में हनुमत प्रसाद स्वरुप कहीं पूड़ी, सब्जी, बूंदी ,छोला चावल, शर्वत,आदि का प्रसाद वितरित किया गया।इस दौरान बीर हनुमान जी के जयकारे वातावरण में गुंजायमान रहे। जिससे वातावरण भक्तिमय हुआ।

जैदपुरः ज्येष्ठ मास के चौथे बड़े मंगलवार को उमड़ा आस्था का विशाल जन सैलाब । जैदपुर : कस्बा जैदपुर के मंगाताल स्थान पर सिद्ध विनायक युवा वाहिनी कार्यकर्ताओं द्वारा सुंदर काण्ड पाठ एवं कीर्तन भजन के साथ साथ विशाल भंडारे का भी आयोजन किया गया जिसमे स्वादिष्ट तहरी , शीतल शरबत एवं हलवा प्रसाद ग्रहण करने वाले भक्तों की अपार भीड़ दिखाई दी। इसके अतिरिक्त जैदपुर के बाईपास मोड़ पर दिनेश कुमार सोनी (हर्ष दोना पत्तल भंडार) के नेतृत्व विशाल भंडारे का आयोजन किया गया! वही थाना चौराहा पर मुन्ना निगम के द्वारा भी भंडारे का आयोजन किया गया। नगर पंचायत द्वारा साफ सफाई सुंदर व्यवस्था की गई। सिरौलीगौसपुर संवाददाता ने बताया कि ज्येष्ठ मास के चौथे बड़े मंगलवार को विभिन्न स्थानों पर धार्मिक आयोजन हुए। भवानीगंज में सहित कस्बा रसूलपुर बदोसराय सहित क्षेत्र में आयोजित भंडारे की शुरुआत सुबह 10 बजे सुंदरकांड पाठ से हुई। पाठ के बाद हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया। कस्बा बदोसराय मुख्य चौराहे पर भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित भंडारे में पूर्व विधायक शरद कुमार अवस्थी मुख्य अतिथि रहे। कार्यक्रम में अमित भैया राम जी, प्रहलाद कुमार विमल, नीरज वर्मा संतोष पांडे आलोक कनौजिया, मनोज सोनी, बलवंत प्रजापति, शैलेंद्र विश्वकर्मा, मुकेश यादव, राजेश अवस्थी, रोहित मिश्रा, आशीष जायसवाल, रवि शर्मा राजेश द्विवेदी, राकेश वर्मा, पिंटू कनौजिया जयशंकर पांडे, अंकित गुप्ता, श्यामू सेठ, हर्षित गुप्ता मेत कई गणमान्य लोग शामिल हुए।वही धरमू यादव के द्वारा आयोजित भण्डारे का शुभारंभ पूर्व मंत्री अरविंद सिंह गोप ने किया इस मौके पर सपा नेता विनोद यादव, आदिल काजमी सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे। सिरौली गौसपुर में अस्पताल के सामने आयोजित भंडारे का शुभारंभ सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की अधीक्षक डॉ. संतोष सिंह ने किया। इस अवसर पर संदीप पटेल, सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।ग्राम पंचायत बरौलिया में इंद्रेश वर्मा द्वारा आयोजित भंडारे का शुभारंभ ग्राम प्रधान जयप्रकाश वर्मा ने किया। मोनू वर्मा और चंद्रेश वर्मा भी मौजूद रहे। सभी कार्यक्रमों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी।

थाईलैंड के खिलाफ पिछली दो जीत से प्रेरणा लेकर मैदान पर उतरेगा भारत

एजेंसी

पथुम थानी (थाईलैंड)। भारत बुधवार को यहां जब अंतरराष्ट्रीय मैत्री फुटबॉल मैच में अपने एशियाई प्रतिद्वंद्वी थाईलैंड का सामना करेगा तो उसकी नजरें पिछली दो जीत और करिश्माई सुनील छेत्री की अच्छी फॉर्म से प्रेरणा लेने पर टिकी होंगी। भारत और थाईलैंड अक्सर एक दूसरे का सामना करते रहे हैं। एशियाई खेलों से लेकर एशियाई कप तक, किंग्स कप से लेकर नेहरू कप तक, पुरुष फुटबॉल में भारत बनाम थाईलैंड मुकाबलों का इतिहास काफी पुराना है। जकार्ता में 1962 के एशियाई खेलों में पहली बार इन दोनों टीम के बीच मुकाबला हुआ था। भारत ने उसमें 4-1 से जीत हासिल की थी। तब से लेकर अब तक दोनों टीमें 26 बार एक-दूसरे से भिड़ चुकी हैं। भारत ने सात जबकि थाईलैंड ने 12 मैच जीते हैं। बाकी सात मैच ड्रॉ रहे हैं। इन दोनों टीम के बीच 2019 में जो पिछले दो मैच खेले गए थे उन दोनों में भारत ने जीत हासिल की थी। भारत बुधवार को होने वाले मैच में इन जीत से प्रेरणा लेने की कोशिश करेगा। भारत ने थाईलैंड के खिलाफ अबू धाबी में 2019 एएफसी एशियाई कप में 4-1 की शानदार जीत हासिल की थी। इसके बाद उसने थाईलैंड को उसकी धरती पर किंग्स कप में 1-0 से हराकर कांस्य पदक जीता था। एशियाई कप जीत में पहले दो गोल करने वाले छेत्री ने उस प्रदर्शन को याद किया, जिसने महाद्वीपीय प्रतियोगिता में भारत की जीत के 55 साल के इंतजार को खत्म किया था। छेत्री ने अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ (एआईएफएफ) द्वारा जारी विज्ञप्ति में कहा, ''वह काफी समय पहले की बात है। मुझे उस मैच के बारे में जो याद है, वह यह है कि टीम ने उस मैच में शानदार प्रदर्शन किया था। वह मैच विशेष था क्योंकि उसमें हमारे युवा खिलाड़ियों ने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया था। इसलिए, हम इस मैच से प्रेरणा ले रहे हैं। भारत को अब थाईलैंड के खिलाफ जीत की हैट्रिक बनाने के लिए इस 40 वर्षीय करिश्माई स्ट्राइकर की गोल स्कोरिंग क्षमता और उनके प्रेरणादायक नेतृत्व की आवश्यकता होगी। भारत अभी फीफा रैंकिंग में 127वें जबकि थाईलैंड 99वें स्थान पर है।

डी. गुकेश ने नॉर्वे शतरंज के 7वें राउंड में अर्जुन एरिगैसी को हराकर दूसरी जीत दर्ज की

एजेंसी

स्टावेंगर। नॉर्वे शतरंज 2025 के सातवें राउंड में सभी बोर्ड्स पर रोमांचक मुकाबले देखने को मिले। इस दौर की सबसे चर्चित भिड़ंत मौजूदा विश्व चैम्पियन डी गुकेश और भारत के ही ग्रैंडमास्टर अर्जुन एरिगैसी के बीच हुई। दोनों खिलाड़ियों के बीच तेज़ मुकाबला हुआ, जहां गुकेश ने धैर्य बनाए रखते हुए कड़ी मेहनत के बाद इस टूर्नामेंट में दूसरी जीत हासिल की। इससे पहले छठे राउंड में डी गुकेश ने और वर्ल्ड नंबर 1 मैग्नस कार्लसन के बीच मुकाबले में शानदार जीत दर्ज की थी। अर्जुन ने ओपनिंग में शानदार शुरुआत करते हुए तेज आक्रामक चालों से गुकेश पर दबाव बनाया, लेकिन गुकेश ने जबरदस्त डिफेंसिव कौशल दिखाते हुए खेल को जटिल एंडगेम तक पहुंचाया। समय की कमी में दोनों खिलाड़ियों के बीच तेज़ मुकाबला हुआ, जहां गुकेश ने धैर्य बनाए रखते हुए कड़ी मेहनत के बाद जीत हासिल की। अमेरिकी ग्रैंडमास्टर फबियानो कारुआना ने चीनी ग्रैंडमास्टर और बर्थडे बॉय वे यी के खिलाफ शुरुआती बढ़त बनाई और लंबे एंडगेम में शानदार जीत दर्ज की। दिन का आखिरी मुकाबला विश्व नंबर 1 मैग्नस कार्लसन और हिकारु नाकामुरा के बीच खेला गया, जो क्लासिकल गेम में जल्दी ड्रॉ हो गया। हालांकि, अर्मागेडन गेम में कार्लसन ने जीत दर्ज कर अतिरिक्त अंक हासिल किए। विश्व महिला शतरंज चैम्पियन जु वेनजुन ने सारा खादेम के खिलाफ क्लासिकल गेम में शानदार एंडगेम खेलते हुए जीत दर्ज की। दिन की दूसरी क्लासिकल जीत चीन की तिंगजी लेई को मिली, जिन्होंने वाइट पीसेज़ से भारत की वैशाली रमेशबाबू को मात दी। भारत की हम्पी कोनेरू और अन्ना मुझिचुक के बीच मुकाबला शांति से ड्रॉ रहा, जिसमें काफी पीस एक्सचेंज हुए। हालांकि, अर्मागेडन गेम में मुझिचुक ने बाज़ी मार ली और अतिरिक्त अंक अर्जित किए।

संक्षिप्त समाचार

बेंगलुरु में पांच जुलाई को होगी नीरज चोपड़ा क्लासिक प्रतियोगिता

बेंगलुरु। भारत और पाकिस्तान के बीच सैन्य संघर्ष के कारण पिछले महीने स्थगित की गई नीरज चोपड़ा क्लासिक अंतरराष्ट्रीय भाला फेंक प्रतियोगिता अब पांच जुलाई को यहां आयोजित की जाएगी। आयोजकों ने मंगलवार को यह घोषणा की। भारत में पहली बार किसी अंतरराष्ट्रीय भाला फेंक प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। पहले यह प्रतियोगिता 24 मई को आयोजित की जानी थी। इस प्रतियोगिता का आयोजन ओलंपिक में दो पदक जीतने वाले चोपड़ा द्वारा जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के सहयोग से किया जा रहा है और इसे भारतीय एथलेटिक्स महासंघ (एएफआई) से मंजूरी मिली हुई है। श्री कांतीरवा स्टेडियम में आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में 12 खिलाड़ी भाग लेंगे। इनमें दुनिया के सात सर्वश्रेष्ठ भाला फेंक खिलाड़ी और चोपड़ा सहित पांच भारतीय खिलाड़ी शामिल हैं। चोपड़ा के अलावा इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अन्य भारतीय खिलाड़ी एशियाई चैंपियनशिप के रजत पदक विजेता सचिन यादव, किशोर जेना, रोहित यादव और साहिल सिलवाल हैं। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले विदेशी खिलाड़ियों में दो बार के विश्व चैंपियन ग्रेनेडा के एंडरसन पीटर्स (व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 93.07 मीटर), जर्मनी के 2016 ओलंपिक स्वर्ण विजेता थॉमस रोहलर (93.90 मीटर), कीनिया के 2015 के विश्व चैंपियन जूलियस येगो (92.72 मीटर), अमेरिका के कर्टिस थॉम्पसन (87.76 मीटर), जापान के एशियाई खेलों के कांस्य पदक विजेता जेनकी डीन (84.28 मीटर), श्रीलंका के रुमेश पथिरेज (85.45 मीटर) और ब्राजील के लुईज मौरिसियो दा सिल्वा (86.34 मीटर) शामिल हैं। जेएसडब्ल्यू स्पोर्ट्स के मुख्य वाणिज्यिक अधिकारी करण यादव ने कहा, ''नीरज चोपड़ा क्लासिक को फिर से आयोजित करने के लिए बहुत बड़े सामूहिक प्रयास की जरूरत थी और हमें पांच जुलाई को इसके आयोजन की पुष्टि करते हुए खुशी हो रही है। विश्व एथलेटिक्स से श्रेणी ए का दर्ज़ा प्राप्त इस प्रतियोगिता का आयोजन पहले पंचकुला में होना था लेकिन सीधे प्रसारण के लिए पर्याप्त प्रकाश व्यवस्था नहीं होने के कारण इसकी मेजबानी बेंगलुरु को सौंपी गई। आयोजकों के अनुसार इस प्रतियोगिता के लिए टिकट की कीमत 199 रुपये से लेकर 9,999 रुपये तक होगी। इसके अलावा 15 व्यक्तियों के लिए पांच कॉर्पोरेट बॉक्स 44,999 रुपये में उपलब्ध हैं। थ्रोअर रनवे के पास एक विशेष स्टैंड की कीमत 9,999 रुपये है, जबकि रनवे के ठीक पीछे स्थित नॉर्थ अपर स्टैंड में एक और विशेष स्टैंड 2,999 रुपये में उपलब्ध है।

केन विलियमसन ने फिर न्यूजीलैंड क्रिकेट का केंद्रीय अनुबंध ठुकराया

वेलिंगटन। पूर्व कप्तान केन विलियमसन ने न्यूजीलैंड क्रिकेट के साथ केंद्रीय अनुबंध को फिर से अस्वीकार कर दिया है और उनका अगले महीने जिंबॉब्वे के खिलाफ दो टेस्ट मैच की श्रृंखला में खेलना संदिग्ध है। विलियमसन ने पिछले साल भी केंद्रीय अनुबंध को स्वीकार नहीं किया था ताकि वह टी20 और दुनिया भर की अन्य लीगों में खेलने के लिए स्वतंत्र हो सकें। इसके बजाय उन्होंने पिछले साल एक अनौपचारिक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए और 2024 में न्यूज़ीलैंड ने जो 13 टेस्ट मैच खेले उनमें से नौ मैच में हिस्सा लिया और 1,000 से अधिक रन बनाए। न्यूजीलैंड क्रिकेट ने मंगलवार को जिन 20 अनुबंधित खिलाड़ियों की सूची जारी की उसमें विलियमसन का नाम शामिल नहीं है। उनके अलावा डेवॉन कॉनवे, फिन एलन, टिम सीफर्ट और लॉकी फर्ग्यूसन भी इस सूची में शामिल नहीं है। यह सभी खिलाड़ी विदेशों में टी20 लीग में खेल रहे हैं। संभावना है कि विलियमसन फिर से अनौपचारिक अनुबंध पर हस्ताक्षर करेंगे। ऑलराउंडर मुहम्मद अब्बास और जैक फाउल्केस, विकेटकीपर मिच हे और स्पिनर आदि अशोक को पहली बार अनुबंध दिया गया है। विलियमसन अभी इंग्लिश काउंटी चैंपियनशिप और टी20 ब्लास्ट में मिडिलसेक्स के लिए और द हंड्रेड में लंदन स्पिरिट के लिए खेल रहे हैं।

अमेरिका व्यापक स्तर पर स्थिरता एवं पारदर्शिता की वजह से आकर्षक निवेश गंतव्य: बिड़ला

मुंबई। भारतीय समूह आदित्य बिड़ला समूह के चेयरमैन कुमार मंगलम बिड़ला ने कहा कि अमेरिका में व्यापक स्तर पर स्थिरता एवं पारदर्शिता उसे समूह के लिए एक आकर्षक निवेश गंतव्य बनाती है। बिड़ला ने कहा कि उनके समूह ने पिछले 17 वर्ष में अमेरिका में 15 अरब अमेरिकी डॉलर का निवेश किया है, जिससे वह उस देश में सबसे बड़ा भारतीय निवेशक बन गया है। करीब 65 अरब अमेरिकी डॉलर वाले समूह के चेयरमैन ने कहा, '' मुझे लगता है कि उद्योग में हमारे जैसे लोग स्थिरता चाहते हैं। हम पारदर्शिता चाहते हैं। मुझे लगता है कि यह सब व्यापक स्तर पर हमें अमेरिका में मिलता है जो निवेश के वास्ते इसे हमारे लिए एक बेहद आकर्षक गंतव्य बनाता है। बिड़ला ने वॉशिंगटन डीसी में सोमवार को आयोजित एक समारोह में यह बात कही। कार्यक्रम में उन्हें अमेरिका-भारत सामरिक भागीदारी मंच (यूएसआईएसपीएफ) द्वारा वैश्विक नेतृत्व पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्होंने कहा कि समूह अमेरिका में 5,400 से अधिक लोगों को रोजगार देता है, जिनमें से मुख्य रूप से एल्युमीनियम विनिर्माता नोवेलिस में कार्यरत हैं जिसका राजस्व में 18 अरब अमेरिकी डॉलर का योगदान है। बिड़ला ने अमेरिका को अवसरों की भूमि करार देते हुए कहा कि समूह का सबसे बड़ा ग्रीनफील्ड निवेश अलबामा के 'बे मिनेट' में 3,000 एकड़ में फैली 4.1 अरब अमेरिकी डॉलर की एकीकृत एल्युमीनियम रोलिंग मिल है। उन्होंने कहा, '' हमने अमेरिका को इसलिए चुना क्योंकि हम इस राष्ट्र की शक्ति, स्थिरता और संभावनाओं में विश्वास करते हैं। बिड़ला ने कहा कि वर्तमान में 1,000 से अधिक ठेकेदार उक्त परियोजना पर काम कर रहे हैं और वर्ष के अंत तक यह संख्या दोगुनी हो जाएगी। उन्होंने कहा कि इस संयंत्र से 1,000 स्थायी नौकरियां उत्पन्न होंगी। बिड़ला ने कहा कि भारत तेजी से अनौपचारिक से औपचारिक अर्थव्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि इस बदलाव से समूह को पेंट्स कारोबार में निवेश करने में मदद मिली है, जहां उसने छह संयंत्र स्थापित किए हैं।

ट्रांसरेल को 534 करोड़ रुपये के टीएंडडी ठेके मिले

नयी दिल्ली। इंजीनियरिंग, खरीद एवं निर्माण (ईपीसी) कंपनी ट्रांसरेल लाइटिंग को घरेलू और अंतरराष्ट्रीय बाजारों में 534 करोड़ रुपये के नए ठेके मिले हैं। ट्रांसरेल ने बयान में कहा, कंपनी के पारेषण एवं वितरण (टीएंडडी) खंड को ये ठेके मिले हैं। कंपनी के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) रणदीप नारंग ने कहा, वित्त वर्ष 2025-26 में पहले ही ठेकों की कीमत 1,600 करोड़ रुपये को पार कर गई है। हम कुशल निष्पादन और समय पर सेवा प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। मुंबई स्थित ट्रांसरेल, सिविल, रेलवे, पोल व लाइटिंग के साथ-साथ टीएंडडी क्षेत्र की प्रमुख ईपीसी कंपनी है, जिसकी उपस्थिति 59 देशों में है।

भारत ए और इंग्लैंड लॉयंस के बीच हाई-स्कोरिंग मुकाबला ड्रॉ, बल्लेबाज़ों का चौथे दिन भी जलवा बरकरार

एजेंसी

नई दिल्ली। कैंटरबरी में भारत ए और इंग्लैंड लॉयंस के बीच चार दिवसीय अभ्यास मैच ड्रॉ पर समाप्त हुआ। मुकाबले में लगातार चौथे दिन सोमवार को भी बल्लेबाज़ों का बोलबाला रहा, जिसमें दोनों टीमों के टॉप ऑर्डर ने रनों की बारिश कर दी। मैच के चौथे दिन की शुरुआत इंग्लैंड लॉयंस की पहली पारी से हुई, जिसमें टीम ने भारत ए के 557 रन के जवाब में 587 रन बनाए। अंतिम विकेट के लिए 49 रन की साझेदारी हुई जिसने टीम के स्कोर को 30 रन की बढ़त दिला दी। दूसरी पारी में भारत ए की ओपनिंग जोड़ी ने तेज़ शुरुआत की। यशस्वी जायसवाल और अभिमन्यु ईश्वरन दोनों ने पहले इनिंग की असफलता को पीछे छोड़ते हुए अर्धशतक जमाए। जायसवाल ने केवल 60 गेंदों में 64 रन बनाए, जिनमें 80% रन बाउंड्री से आए। दोनों ने मिलकर 123 रन की ओपनिंग साझेदारी की, वो भी रन-रेट से तेज़ गति से। जायसवाल के आउट होने के बाद ईश्वरन ने थोड़ी सावधानी बरती, लेकिन ध्रुव जुरेल के क्रीज़ पर आते ही फिर से रनगति तेज़ हो गई। जुरेल ने पहली पारी में 94 रन बनाने के बाद दूसरी पारी में भी 51 गेंदों पर अर्धशतक ठोका। इसके बाद नितीश रेड्डी ने भी आक्रामक बल्लेबाज़ी की। पहली पारी में केवल 7 रन पर आउट होने वाले रेड्डी ने दूसरी पारी में 43 गेंदों में 51 रन जड़ दिए, जिसमें एक ओवर में डैन मौसली से 18 रन लिए। मैच की खास बात यह रही कि भारत ए के सभी टॉप-6 बल्लेबाज़ों ने दोनों पारियों में मिलाकर कम से कम एक अर्धशतक जरूर जमाया। इससे टीम का बल्लेबाज़ी क्रम पूरी तरह से संतुलित और मजबूत नज़र आया। भारत एः 557 (करुण नायर 204, ध्रुव जुरेल 94, सरफराज़ खान 92; जोश हुल 3/72, ज़मान अख्तर 3/73) और 241/2 (अभिमन्यु ईश्वरन 68, यशस्वी जायसवाल 64, ध्रुव जुरेल 54*, नितीश रेड्डी 52*) इंग्लैंड लॉयंसः 587 (टॉम हैन्स 175, डैन मौसली 113, मैक्स होल्डन 101; मुकेश कुमार 3/92)

इंडोनेशिया ओपन में सिंधु ने रोमांचक मुकाबले में दर्ज की जीत, लक्ष्य सेन बाहर

नई दिल्ली। दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु ने मंगलवार को इंडोनेशिया ओपन के पहले दौर (राउंड ऑफ 32) में जापान की नोजोमी ओकुहारा को हराते हुए तीन गेमों के रोमांचक मुकाबले में जीत हासिल की और लक्ष्य सेन को पहले ही राउंड में हार का सामना करना पड़ा। सिंधु ने यह मुकाबला 22-20, 21-23, 21-15 से अपने नाम किया, जो कुल 1 घंटा 19 मिनट तक चला। पहला गेम जीतने के बाद लग रहा था कि सिंधु मुकाबला सीधे गेमों में निपटा लेंगी, लेकिन ओकुहारा ने जोरदार वापसी करते हुए मैच को तीसरे गेम तक खींच लिया। तीसरे गेम में सिंधु ने लगातार बढ़त बनाए रखी और ओकुहारा को वापसी का कोई मौका नहीं दिया। इसके साथ ही सिंधु बीडब्ल्यूएफ सुपर 1000 टूर्नामेंट के दूसरे दौर में पहुंच गई हैं। पुरुष सिंगल्स में लक्ष्य सेन को सीजन की यह पांचवीं बार पहले राउंड में हार मिली।

पीयूष गोयल ने सिंगापुर के साथ भारतीय शिपिंग क्षेत्र में अवसरों पर चर्चा की

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गायल ने मंगलवार को सिंगापुर के उप-प्रधानमंत्री गान किम योंग के साथ मुलाकात की। उन्होंने आर्थिक संबंधों को बढ़ावा देने तथा भारतीय शिपिंग क्षेत्र में व्यापक अवसरों पर चर्चा की। इस दौरान द्विपक्षीय व्यापार और निवेश संबंधों को बढ़ाने पर चर्चा की गई। इसके साथ ही उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों, विशेष रूप से शिपिंग क्षेत्र में भारत की ओर से प्रदान किए जाने वाले जबरदस्त अवसरों पर प्रकाश डाला। इससे पहले गोयल ने तीन दिवसीय फ्रांस की आधिकारिक यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश को बढ़ावा देने के लिए फ्रांसीसी नेताओं और कारोबारियों से मुलाकात की थी। वाणिज्य मंत्री ने देर रात पेरिस में शीर्ष फ्रांसीसी मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) के साथ कई उच्च स्तरीय बैठकें कीं। इसके अलावा गोयल ने अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) के कार्यकारी निदेशक के डॉ. फतिह बिरोल से भी मुलाकात की। वाणिज्य मंत्री ने अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के ईडी फतिह बिरोल, नाइजीरिया के व्यापार मंत्री जुमोके ओडुवोले, फ्रांस के अर्थव्यवस्था और वित्त मंत्री एरिक लोम्बार्ड, ऑटोमोटिव आपूर्तिकर्ता कंपनी वेलियो ग्रुप के सीईओ क्रिस्टोफ पेरिलाट और लोरियल ग्रुप के सीईओ निकोलस हिरोनिमस सहित शीर्ष सीईओ और मंत्रियों के साथ कई बैठकें की हैं और भारत में निवेश के विशाल अवसरों पर प्रकाश डाला है। पेरिस में हुई बैठक में अक्षय ऊर्जा, ऑटोमोबाइल विनिर्माण, इलेक्ट्रिक वाहन (ईवी) और उपभोक्ता उत्पादों जैसे प्रमुख क्षेत्रों में भारत के विकास के लिए नए अवसरों का पता लगाया गया। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) के कार्यकारी निदेशक के डॉ. फतिह बिरोल से भी मुलाकात की। उन्होंने बताया कि बिरोल से मिलकर खुशी हुई। इस दौरान समग्र वैश्विक ऊर्जा परिदृश्य और भारत और आईईए के बीच गहरी होती साझेदारी पर अच्छी चर्चा हुई। गोयल ने कहा कि अपने कार्यक्रमों के एक भाग के रूप में ईडीएफ एनर्जी के अध्यक्ष और सीईओ बर्नार्ड फोंटाना से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में भारत के बढ़ते नेतृत्व और हमारे विकास रोडमैप में सतत ऊर्जा समाधानों को और एकीकृत करने के तरीकों पर चर्चा की। इसके अलावा उन्होंने ऑटोमोटिव विनिर्माण और ईवी पारिस्थितिकी तंत्र में भारत की क्षमता पर प्रकाश डालने के लिए रेनॉल्ट समूह के सीईओ लुका डी मेओ से भी मुलाकात की।

सर्राफा बाजार में सोने में जोरदार तेजी, चांदी की भी बढ़ी चमक

एजेंसी

नई दिल्ली। घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने के भाव में जोरदार तेजी दर्ज की गई है। सोना आज 1,200 रुपये से लेकर 1,270 रुपये प्रति 10 ग्राम तक महंगा हो गया है। भाव में उछाल आने के कारण आज देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना 98,910 रुपये से लेकर 99,060 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना आज 90,700 रुपये से लेकर 90,850 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बिक रहा है। चांदी के भाव में आज मामूली तेजी आई है। इस तेजी के कारण ये चमकीली धातु दिल्ली सर्राफा बाजार में 1,00,100 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर पहुंच गई है। दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 99,060 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 90,850 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 98,910 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,700 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 98,960 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 90,750 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 98,910 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 90,700 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 98,910 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,700 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 99,060 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 90,850 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 98,960 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर है, जबकि 22 कैरेट सोना 90,750 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। जयपुर में 24 कैरेट सोना 99,060 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 90,850 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

भारत में कर व्यवस्था को और भरोसेमंद बनाने की जरूरत: आईएटीए

एजेंसी

नयी दिल्ली। वैश्विक विमानन कंपनियों के समूह आईएटीए ने मंगलवार को कहा कि भारत की कर प्रणाली जटिल है तथा इसे और भरोसेमंद बनाने की जरूरत है। भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते नागर विमानन बाजारों में से एक है और बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए एयरलाइन कंपनियां अपने बेड़े और नेटवर्क का विस्तार कर रही है। अंतरराष्ट्रीय हवाई परिवहन संघ (आईएटीए) के महानिदेशक विली वॉल्श ने कहा कि भारत के विमानन बाजार में वृद्धि दर चीन से अधिक होगी। हाल के दिनों में विदेशी विमानन कंपनियों को मिले कर नोटिस के संदर्भ में, वॉल्श ने कहा कि भारत में कर प्रणाली जटिल है और इसे अधिक भरोसेमंद बनाने की आवश्यकता है। आईएटीए वैश्विक स्तर पर 350 से अधिक विमानन कंपनियों का प्रतिनिधित्व करता है।

मादक पदार्थ का नेटवर्क खत्म करने के लिए एआई संचालित तरीका अपनाए डीआरआई: सीतारमण

एजेंसी

नई दिल्ली। केंद्रीय वित्त एवं कॉर्पोरेट मामलों की मंत्री निर्मला सीतारमण ने मंगलवार को राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई) से तस्करी, मादक पदार्थों और अवैध व्यापार से निपटने के लिए एक समग्र और प्रौद्योगिकी-संचालित दृष्टिकोण अपनाने की अपील की। सीतारमण ने कहा कि एजेंसियों को वैश्विक व्यापार और सुरक्षा खतरों की बढ़ती जटिलता के अनुरूप विकसित होना चाहिए। सीतारमण ने राष्ट्रीय राजधानी नई दिल्ली के वसंत कुंज क्षेत्र स्थित केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड (सीबीआईसी) के तहत डीआरआई के नए मुख्यालय भवन के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए यह बात कही। वित?त मंत्री ने कहा कि प्रवर्तन एजेंसियों को वैश्विक व्यापार और सुरक्षा खतरों की बढ़ती जटिलता के अनुरूप विकसित होना चाहिए। इसके दृश्यमान और अंतिम परिणाम सामने आने चाहिए। उन्होंने कहा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शब्दों को दोहराते हुए कहा कि 'सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन' -यही वह भावना है जिसके साथ हमें आगे बढ़ते रहना है। वित्त मंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि डीआरआई उन चुनिंदा भारतीय एजेंसियों में से एक है जो भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा तंत्र की रक्षा करती है। हम सोना के बारे में जितना बोलते हैं, नारकोटिक्स सबसे बड़ा खतरा है जो हर राज्य और यहां तक कि छोटे शहरों में भी घुसपैठ कर चुका है। स्कूल और कॉलेज इसके पहले शिकार हैं। डीआरआई को इसे रोकना होगा और फिर राज्य पुलिस के साथ समन्वय करना होगा। हमें खतरे के आकार और दायरे के बारे में बेहतर समन्वय और बेहतर समझ की आवश्यकता है। उन्होंने प्रवर्तन अधिकारियों से कहा, ''बड़ी तस्वीर को ध्यान में रखते हुए समग्र रूप से जांच करें। आपको गहरे प्रणालीगत जोखिमों और खतरों को उजागर करने के लिए अव्यक्त बिंदुओं को जोड़ना होगा।'' उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तस्करी के पूरे नेटवर्क को खत्म करना ही किसी भी जांच का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने कहा कि केवल छोटी-छोटी जब्तियों या गिरफ्तारियों तक ही सीमित न रहें। वित्त मंत्री ने कहा, ''अगर आप छोटी मछलियों को पकड़ते हैं तो यह अच्छा नहीं है। बड़ी तस्करी श्रृंखला का पता लगाना होगा और उस पर कार्रवाई करनी होगी। ठोस नतीजे सामने आएं और उन्हें तार्किक निष्कर्ष पर पहुंचाया जाए। इससे पहले निर्मला सीतारमण ने वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी के साथ डीआरआई मुख्यालय के नए भवन का उद्घाटन किया। इस अवसर पर राजस्व सचिव अरविंद श्रीवास्तव, सीबीआईसी के अध्यक्ष संजय अग्रवाल और वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

ट्रंप का कॉल और नरेंद्र सरेंडर...

भोपाल में राहुल गांधी का पीएम मोदी पर तीखा हमला

एजेंसी

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद और लोकसभा में नेता विपक्ष राहुल गांधी ने भोपाल में एक जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बीजेपी-आरएसएस पर जमकर निशाना साधा। राहुल ने सीजफायर को लेकर पीएम मोदी पर तंज कसा। उन्होंने कहा कि उधर से ट्रंप का एक कॉल आया और नरेंद्र, सरेंडर। राहुल ने कहा कि बीजेपी-आरएसएस वालों पर थोड़ा सा भी दबाव डालो, डरकर भाग जाते हैं। राहुल गांधी ने देश में विचारधारा की लड़ाई पर जोर देते हुए बीजेपी पर संविधान को कमजोर करने और सामाजिक न्याय के खिलाफ काम करने का आरोप लगाया।

राहुल गांधी ने अपने भाषण में कहा, 'डोनाल्ड ट्रंप ने उधर से फोन किया और कहा- नरेंद्र, सरेंडर ! और इधर नरेंद्र मोदी ने 'जी हुजूर' कहकर तुरंत उनके इशारे का पालन किया।' राहुल ने बीजेपी-आरएसएस की मानसिकता पर सवाल

उठाते हुए कहा कि इनका इतिहास 'सरेंडर की चिट्ठी' लिखने का रहा है। राहुल ने 1971 के भारत-पाक युद्ध का जिक्र करते हुए इंदिरा गांधी की दृढ़ता को याद किया। उन्होंने कहा, ''जब अमेरिका का सातवां बेड़ा भारत को धमकाने आया था, तब इंदिरा जी ने कहा था- मुझे जो करना है, वो करूंगी। लेकिन बीजेपी-आरएसएस का कैरेक्टर ऐसा है कि ये दबाव में तुरंत झुक जाते हैं।'' राहुल ने कहा, ''1971 में कांग्रेस ने सुपरपावर की धमकी के बावजूद पाकिस्तान को तोड़ा था। हमारे बब्बर शेर और शेरनियां कभी झुकते नहीं, बल्कि लड़ते हैं। राहुल ने कांग्रेस की प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि उनकी पार्टी सामाजिक न्याय की लड़ाई को मजबूत करेगी। उन्होंने वादा किया, ''हम लोकसभा में जातिगत जनगणना पास करवाएंगे।'' उन्होंने बीजेपी पर तंज कसते हुए कहा कि दबाव पड़ते ही बीजेपी-आरएसएस के नेता जातिगत जनगणना की बात तो करते हैं, लेकिन इसे लागू करने की उनकी कोई मंशा नहीं है। राहुल ने बीजेपी पर कॉरपोरेट्स को बढ़ावा देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, 'बीजेपी-आरएसएस देश में न्याय नहीं चाहते। ये अडानी अंबानी वाला देश चाहते हैं, सामाजिक न्याय वाला भारत नहीं।' उन्होंने कांग्रेस के नेताओं- गांधी, नेहरू, और सरदार पटेल का जिक्र करते हुए कहा कि ये लोग सुपरपावर से लड़ने वाले थे, न कि झुकने वाले। राहुल ने बीजेपी-आरएसएस पर कटाक्ष करते हुए कहा, ''इन पर थोड़ा सा दबाव डालो, ये डरकर भाग जाते हैं।'' उन्होंने नरेंद्र मोदी, मोहन भागवत और नितिन गडकरी का नाम लेते हुए कहा कि ये लोग दबाव में आकर बड़े-बड़े दावे तो करते हैं, लेकिन असल में सामाजिक न्याय के खिलाफ काम करते हैं।

मोदी छह जून को कटरा-श्रीनगर रेल लिंक का उद्घाटन करेंगे

एजेंसी

जम्मू। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आगामी छह जून को बहुप्रतीक्षित कटरा-श्रीनगर रेल लिंक का उद्घाटन करेंगे।

इससे पहले गत 19 अप्रैल को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा इस रेल लिंक का उद्घाटन कार्यक्रम खराब मौसम के पूर्वानुमान के कारण स्थगित कर दिया गया था। गत 22 अप्रैल को पहलगाम में आतंकवादी हमले और इसके बाद भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर के पश्चात प्रधानमंत्री का केन्द्रशासित प्रदेश में पहला दौरा होगा। प्रधानमंत्री कार्यालय में केंद्रीय मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने एक्स पर अपने पोस्ट में कहा, ल्लइतिहास रचा जा रहा है, बस तीन दिन बाकी हैं। दुनिया का सबसे ऊंचा रेलवे पुल, शक्तिशाली चिनाब ब्रिज, जम्मू कश्मीर में खड़ा है। उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेलवे लिंक (यूएसबीआरएल) का हिस्सा। प्रकृति की सबसे कठिन परीक्षाओं को झेलने के लिए बनाया गया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी छह जून को चिनाब ब्रिज का उद्घाटन करेंगे। नए भारत की ताकत और दूरदर्शिता का गौरवपूर्ण प्रतीक। आधिकारिक सूत्रों के मुताबिक प्रधानमंत्री छह जून को दुनिया के सबसे ऊंचे चिनाब रेल पुल और अंजी खाद रेल पुल का उद्घाटन करेंगे और श्री माता वैष्णो देवी कटरा रेलवे स्टेशन से श्रीनगर के लिए वंदे भारत एक्सप्रेस के विशेष कश्मीर संस्करण को हरी झंडी दिखायेंगे।

इसके साथ ही वह कटरा के खेल मैदान पर सार्वजनिक कार्यक्रम को भी संबोधित करेंगे। श्री मोदी के दौरे के मद्देनजर जम्मू-कश्मीर में, विशेष रूप से रेलवे लाइनों, रेलवे स्टेशनों और प्लेटफार्मों पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की गयी है। उन्होंने बताया कि कुल 272 किलोमीटर लंबी उधमपुर-श्रीनगर-बारामूला रेल लिंक (यूएसबीआरएल) परियोजना में से 209 किलोमीटर को चालू किया गया था, जिसमें पहला चरण (118 किलोमीटर काजीगुंड-बारामुल्ला खंड) अक्टूबर 2009 में चालू हुआ था, उसके बाद जून 2013 में (18 किलोमीटर) बनिहाल-काजीगुंड, जुलाई 2014 में (25 किलोमीटर) उधमपुर-कटरा और पिछले साल फरवरी में (48.1 किलोमीटर) बनिहाल-सांगलदान खंड चालू हुआ। पिछले वर्ष जून में 46 किलोमीटर लंबे सांगलदान-रियासी खंड पर भी काम पूरा हो गया था। रियासी और कटरा के बीच कुल 17 किलोमीटर का हिस्सा बच गया, जिसे गत फरवरी-मार्च में पूरा कर लिया गया और वंदे भारत सहित अन्य ट्रेनों का ट्रायल रन शुरू हुआ। उन्होंने बताया कि कटरा-श्रीनगर वंदे भारत ट्रेन रियासी जिले में चिनाब नदी पर बने दुनिया के सबसे ऊंचे रेलवे आर्च ब्रिज और अंजी ब्रिज पर चलेगी। इस ट्रेन में हीटिंग सिस्टम, एंटी-स्पॉल लेयर और स्वचालित दरवाजे जैसी सुविधाएं होंगी। ट्रेन को ठंड के मौसम में शून्य से 20 डिग्री सेल्सियस नीचे तापमान में भी सुचारू रूप से चलाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

भारत यात्रा हमारे जीवन की अविस्मरणीय यात्रा रही : उषा वेंस

एजेंसी

वाशिंगटन/नयी दिल्ली। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे डी वेंस की भारतीय मूल की पत्नी उषा वेंस ने अप्रैल में अपनी भारत यात्रा को 'जीवन की सबसे अविस्मरणीय यात्रा' बताते हुए कहा है कि इस दौरान उनके बच्चे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ काफी 'नजदीकी' रिश्ते में बंध गए और उन्हें अपना 'दादा' ही मानने लगे ।

अमेरिका में वाशिंगटन में सोमवार को यूएसआईएसपीएफ प्रमुख जान चैम्बर्स के साथ बातचीत में उन्होंने यह बात उस समय कही जब उनसे उनकी भारत यात्रा और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से भेंट के बारे में पूछा गया। वह अमेरिका - भारत सामरिक साझेदारी फोरम 2025 में भाग ले रही थी। उन्होंने कहा ल्ल यह हम सभी के लिए जीवन की सबसे अविस्मरणीय यात्रा रही। हमारे बच्चे महामारी और मेरे पति के राजनीति में आने के कारण पहले कभी भी भारत नहीं गए थे। वे भारत के बारे में काफी कुछ जानते हुए बड़े हुए हैं जैसे कि वहां का भोजन, कहानियां, नाना नानी और दोस्तों के साथ रिश्तों के बारे में। वेंस दंपति के तीन बच्चे हैं - दो पुत्र विवेक और इवान। साथ ही पुत्री मीराबेल। श्रीमती वेंस ने कहा कि बच्चों ने वास्तविक तौर पर ये सब नहीं देखा था तो उनके दृष्टिकोण से ये सब बेहद चौंका देने वाला था। लेकिन मेरे और जेडी के लिए शायद ये इससे ज्यादा 'खास' और कुछ नहीं हो सकता था। उन्होंने ताजमहल और राजस्थान की अपनी यात्रा के बारे में बताया ' हमे उत्तरी भारत की कुछ महानतम जगहों को देखने का अवसर मिला। हम अपने अगले भारत दौरे में दक्षिण भारत विशेषतौर पर आंध्र प्रदेश भी जांएगे जहां मेरे परिवार की जड़े जुड़ी हुई हैं। श्रीमती वेंस ने भारतीय भोजन और स्थलों को 'बेहद अकल्पनीय' बताया । उन्होंने कहा ' हर एक जगह दूसरी जगह से अलग और खूबसूरत थी। अकल्पनीय भोजन, मोर और फिर हमने सुबह सुबह चढ़ते सूरज की पहली किरणों में खूबसूरत ताजमहल देखा। फिर हमने प्रधानमंत्री के साथ मुलाकात की जो बेहद, बेहद खास रही। उन्होंने बताया कि हम सभी प्रधानमंत्री मोदी से पहले भी मिल चुके थे। ये मुलाकात फरवरी में पेरिस में हुई थी और उस दौरान श्री मोदी ने उनके सभी बच्चों को उपहार दिए थे विशेषतौर पर विवेक को क्योंकि उस समय उसका जन्मदिन था। श्री मोदी और उनके बच्चों की पेरिस में हुई मुलाकात का जिक्र करते हुए श्रीमती वेंस ने कहा ' यह बेहद अजीब बात थी कि मेरे बच्चों ने जब उन्हें देखा तो वे कुछ उनींदे से थे।

नकली उर्वरक और कीटनाशक पर कार्रवाई करने के लिए सख्त कानून की तैयारी : शिवराज

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि सरकार नकली उर्वरक और कीटनाशक बनाने वालों पर कार्रवाई करने के लिए सख्त कानून की तैयारी कर रही है।

श्री चौहान ने मंगलवार को 'विकसित कृषि संकल्प अभियान' के छठे दिन महाराष्ट्र में पुणे जिले के नारायणगांव में किसानों से बातचीत करते हुए कहा कि नकली खाद या कीटनाशक बनाने वाली और किसानों को आपूर्ति करने वाली किसी भी कंपनी या व्यक्ति के खिलाफ कार्रवाई के लिए सरकार सख्त कानून बनाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा,ल्ल कीटनाशकों और उर्वरकों के सही और संतुलित प्रयोग होना चाहिए। सरकार एक सख्त कानून बनाने पर विचार कर रही है, जिसके अंतर्गत जो भी कंपनी या व्यक्ति नकली उर्वरक या कीटनाशक बनाकर किसानों को आपूर्ति करते हुए पकड़ा जाएगा, उसके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाएगी। श्री चौहान ने कहा कि क्षेत्रवार कृषि विकास योजना तैयार की जाएगी। केंद्र और राज्य सरकार दोनों मिलकर कृषि और किसानों की प्रगति के लिए काम करेंगे। बातचीत के दौरान, किसानों ने केंद्रीय मंत्री को अपनी चिंता से अवगत कराया और न्यूनतम समर्थन मूल्य , बेमौसम बारिश के कारण कृषि उपज को होने वाले नुकसान, खेती पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, समय पर कृषि उपकरण और बीज नहीं मिलने, बेहतर प्रशीतन भंडारण सुविधाओं, कृषि प्रसंस्करण केंद्रों की उपलब्धता और अन्य महत्वपूर्ण मामलों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। इससे पहले दिन में केंद्रीय मंत्री ने कृषि वैज्ञानिकों के साथ नारायणगांव कृषि उपज मंडी समिति (एपीएमसी) और टमाटर मंडी, स्थानीय खेतों और कोल्ड स्टोरेज सुविधा का दौरा किया, जहां उन्होंने टमाटर और अन्य फसल उगाने वाले स्थानीय किसानों से बातचीत की। श्री चौहान ने स्थानीय कृषि विकास केंद्र (केवीके) में कृषि उद्यमियों को सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि कृषि वैज्ञानिकों से खेतों में जाकर किसानों से बातचीत कर उनकी समस्याओं को समझने का आग्रह किया है। देश में 16 हजार कृषि वैज्ञानिक हैं जो इस क्षेत्र के विकास के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक केवल प्रयोगशालाओं में काम नहीं कर सकते। उन्हें किसानों को बातचीत करनी होगी। श्री चौहान ने टॉप फसलों (टमाटर, प्याज, आलू) के लिए नयी बाजार हस्तक्षेप योजना (एमआईएस) के बारे में भी जानकारी दी। उन्होंने कहा कि अगर आलू, प्याज और टमाटर उत्पादक किसान किसी दूसरे राज्य में जाते हैं और उन्हें अपने क्षेत्र की तुलना में अपनी उपज का अधिक मूल्य मिल रहा है, तो ऐसी स्थिति में केंद्र सरकार परिवहन की परिचालन लागत वहन करेगी। किसानों को लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने और बाजार में उपभोक्ताओं के लिए टॉप फसलों की कीमतों को कम करने के लिए राज्य या केंद्र शासित प्रदेश सरकारों के अनुरोध पर एमआईएस शुरू किया जाता है। श्री चौहान ने कहा कि कृषि क्षेत्र में बहुत काम हो रहा है और किसानों ने कई नवाचार किए हैं। उत्पादकता बढ़ी है और कृषि उत्पादों की विभिन्न किस्में विकसित हुई हैं तथा निर्यात भी बढ़ रहा है। श्री चौहान ने कहा कि महाराष्ट्र के किसान प्रगतिशील हैं और उन्होंने अपने स्तर पर शोध किया है।

भारत ध्रुवीय अनुसंधान पोत बनाएगा, नॉर्वे के साथ समझौता

नयी दिल्ली। भारत पहली बार नार्वे के सहयोग से अपना पहला पहला ध्रुवीय अनुसंधान पोत (पीआरवी) बनाने जा रहा है तथा नार्वे की कंपनियों को भारत के पोतनिर्माण और पुराने पोतों को तोड़ने के कारोबार में निवेश बढ़ाने का निमंत्रण दिया है। नार्वे की यात्रा पर गए बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्री सर्बानंद सोनोवाल की उपस्थिति में भारत के स्थित गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) ने नार्वे के कोंग्सबर्ग समूह के साथ सहयोग के करार पर हस्ताक्षर किए गए। जीआरएसई का मुख्यालय कोलकाता में है तथा ओस्लो स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध कोंग्सबर्ग रक्षा, ऊर्ज़ा, समुद्री, मत्स्य पालन और एयरोस्पेस उद्योगों को प्रौद्योगिकी समाधान प्रस्तुत करने का कारोबार करती है। बंदरगाह, नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय की एक विज्ञप्ति के मुताबिक इस समझौते के तहत बनाया जाने वाला पोत स्वदेशी रूप से विकसित भारत का अपना पहला पीआरवी पोत होगा। श्री सोनोवाल ने कहा, ल्लइस समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर आशा और प्रगति की किरण तथा वैज्ञानिक उन्नति और सतत विकास के लिए भारत की अटूट प्रतिबद्धता का एक और उदाहरण है। श्री सोनोवाल ने नॉर्वे के तोप स्वामियों के संघ के साथ समुद्री निवेश के अवसरों पर चर्चा की है। उन्होंने इस यात्रा में वहां 'जहाजरानी और महासागर व्यवसाय' पर मंत्रिस्तरीय चर्चा में भाग लिया और 'सभी के लिए विकास' सुनिश्चित करने वाले महासागर के भारत के दृष्टिकोण को दोहराया। श्री सोनोवाल नॉर-शिपिंग कार्यक्रम में भाग लेने के लिए नॉर्वे की पांच दिवसीय आधिकारिक यात्रा पर हैं और वह डेनमार्क की भी यात्रा करेंगे। उनकी इस यात्रा का मुख्य उद्देश्य वैश्विक समुद्री क्षेत्र के नेताओं के साथ समुद्री संबंधों को और मजबूत करना है।

देश में कोरोना संक्रमण से पांच और मरीजों की मौत, सक्रिय मामलों की संख्या 4026 पहुंची

नयी दिल्ली। देशभर में कोराना संक्रमण के कुल सक्रिय मामलों की संख्या मंगलवार सुबह बढ़कर 4026 तक पहुंच गयी। पिछले 24 घंटों में इसके संक्रमण से पांच और मरीजों की मौत होने से मृतकों की संख्या 37 पहुंच गयी है। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से आज सुबह आठ बजे तक जारी आंकड़ों के अनुसार देश में कोरोना के सक्रिय मामलों की संख्या बढ़कर 4026 पहुंच गयी। अभी तक 2700 मरीजों को स्वस्थ्य होने पर अस्पताल से छुट्टी मिल चुकी है और एक जनवरी से अब तक 37 लोगों की मौत हुयी है। पिछले 24 घंटों में कोरोना संक्रमण के 65 सक्रिय मामले सामने आये हैं और 512 मरीजों के स्वस्थ्य होने पर उन्हें अस्पताल से छुट्टी दे दी गयी है लेकिन इस अवधि के दौरान पांच और मरीजों की जान चली गयी। जिन पांच मरीजों की मौत हुई उनमें केरल, तमिलनाडु और पश्चिम बंगाल के एक-एक, महाराष्ट्र के दो मरीज हैं। स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा है कि कोविड की स्थिति पर निरंतर नजर रखी जा रही है।

'समग्र स्वास्थ्य देखभाल' मोदी सरकार की स्वास्थ्य नीति का मूल: नड्डा

नयी दिल्ली। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा ने कहा है कि पूरे देश में 'समग्र स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली' मोदी सरकार की स्वास्थ्य नीति का मूल है और नये चिकित्सकों समेत सभी स्वास्थ्य कर्मियों को इसे समझना चाहिए। श्री नड्डा ने मंगलवार को कर्नाटक के बेलगावी में केएलई अकादमी ऑफ हायर एजुकेशन एंड रिसर्च के 15 वें दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत की राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति का केंद्र एक 'समग्र स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली' विकसित करना है, जो न केवल स्वास्थ्य देखभाल में उपचारात्मक भाग पर ध्यान केंद्रित करती है, बल्कि निवारक, उपचार, पुनर्वास, वृद्धावस्था और संवर्धनात्मक स्वास्थ्य देखभाल पर भी जोर देती है। दीक्षांत समारोह में केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण तथा नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्ज़ा मंत्री प्रहलाद जोशी भी उपस्थित रहे। समारोह में मुंबई के टाटा मेमोरियल अस्पताल के उप निदेशक डॉ. शैलेश वी. श्रीखंडे को चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में उनके अनुकरणीय योगदान के लिए डॉक्टर ऑफ साइंस की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।
श्री नड्डा ने युवा चिकित्सकों को समाज की जरूरतों के प्रति संवेदनशील होने और देश की स्वास्थ्य नीतियों की समझ विकसित करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

पेज एक का शेष

भारत को 48 घंटे में...

सीमित नहीं है, बल्कि यह विभिन्न कूटनीतिक, सूचनात्मक, सैन्य और आर्थिक उपकरणों के माध्यम से राजनीतिक उद्देश्यों को हासिल करने की की भी एक प्रक्रिया है। सीडीएस अनिल चौहान ने कहा कि मानव स्वभाव के एक हिस्से के रूप में समानार्थी शब्द, मुझे लगता है कि किसी भी तरह के युद्ध में दो अहम तत्व होते हैं। वह है हिंसा और हिंसा के साथ-साथ हिंसा के पीछे की राजनीति। इसलिए राजनीतिक उद्देश्य हासिल करने के लिए हिंसा की जरूरत होती है और जहां आप सारी जिम्मेदारी अपने दुश्मन पर डाल देते हैं, जो मुझे लगता है कि अहम है और राजनीति अन्य तरीकों से होती है। सिंगापुर में ऑपरेशन सिंदूर के दौरान पाकिस्तान की तरफ से हुए नुकसान के बारे में पूछे जाने पर सीडीएस ने कहा कि जब मुझसे हमारी तरफ से हुए नुकसान के बारे में पूछा गया, तो मैंने कहा कि ये महत्वपूर्ण नहीं है। परिणाम और आप कैसे कार्य करते हैं, ये महत्वपूर्ण है। नुकसान के बारे में बात करना बहुत सही नहीं होगा। मान लीजिए आप क्रिकेट टेस्ट मैच खेलने जाते हैं और आप किसी तरह से जीत जाते हैं, तो कितने विकेट, कितनी गेंदें और कितने खिलाड़ी हैं, इसका सवाल नहीं रह जाता है। तकनीकी मापदंडों के आधार पर हम यह विशेष डेटा निकालेंगे और आपके साथ साझा करेंगे। हम आपको बताएंगे कि हमने कितने विमान नष्ट किए और कितने रडार नष्ट किए। हम इसका एक मोटा आकलन करेंगे और जल्द ही इसके बारे में बताएंगे। सीडीएस जनरल अनिल चौहान ने कहा कि 10 मई को रात करीब 1 बजे उनका (पाकिस्तान का) लक्ष्य भारत को 48 घंटे में घुटने टेकने पर मजबूर करना था। उनकी ओर से कई हमले किए गए और किसी तरह से उन्होंने इस संघर्ष को बढ़ा दिया, जबकि हमने वास्तव में केवल उनके आतंकी ठिकानों पर ही हमला किया था। उन्होंने सोचा था कि ऑपरेशन 48 घंटे तक चलेगा, जो करीब 8 घंटे में ही खत्म हो गया और फिर उन्होंने फोन उठाया और कहा कि वे बात करना चाहते हैं। उन्होंने कहा कि जहां तक हवाई युद्ध का सवाल है तो ऑपरेशन सिंदूर ने इतिहास रच दिया। विरोधी के खिलाफ सफल ऑपरेशन किए गए, जिससे सटीकता और आक्रामक इरादे के साथ अंदर तक लगातार ऑपरेशन करने में भारत की क्षमता साबित हुई है। यह एक बड़ी उपलब्धि थी कि हम विरोधी के हवाई रक्षा नेटवर्क को भेदने में सक्षम थे। सीडीएस ने कहा कि ऑपरेशन सिंदूर अभी खत्म नहीं हुआ है। यह जारी है। यह शत्रुता की अस्थायी समाप्ति है। हमें अपनी चौकसी बनाए रखने की जरूरत है। उन्होंने यह भी कहा कि हम लंबे समय तक संघर्ष में नहीं पड़ना चाहते थे। हमने ऑपरेशन पराक्रम में अपना अनुभव देखा है। हम लगभग नौ महीने तक वहां रहे। इसमें बहुत अधिक खर्च होता है, सब कुछ बाधित होता है। सीडीएस ने कहा कि जहां तक पाकिस्तानी पक्ष का सवाल है तो मैं दो अनुमान लगा सकता हूं। पहला, वे बहुत लंबी दूरी पर तेजी से चीजें खो रहे थे और उन्होंने सोचा कि अगर यह कुछ और समय तक जारी रहा तो और अधिक नुकसान होने की संभावना है और इसलिए उन्होंने टेलीफोन करके सीजफायर का प्रस्ताव रखा।

पूर्व अग्निवीरों ...

और अनुदान की भी व्यवस्था की गई है ताकि राज्य के निवासियों को प्रोत्साहित किया जा सके कि वे अपने घरों को पर्यटन हित में उपयोग करें। इस नीति के लागू होने से न केवल पर्यटकों को सस्ते और सुविधाजनक ठहरने का विकल्प मिलेगा, बल्कि स्थानीय लोगों के लिए रोजगार और आय के नए अवसर भी सृजित होंगे। यह नीति प्रदेश की अर्थव्यवस्था और पर्यटन अवसंरचना को मजबूत करने में सहायक सिद्ध होगी। सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत होगा अन्नपूर्णा भवनों का निर्माणसार्वजनिक वितरण प्रणाली को सुदृढ़ करने एवं राशन कार्डधारकों को खाद्यान्न सुचारू रूप से उपलब्ध कराने के लिए मॉडल उचित दर दुकानों व अन्नपूर्णा भवनों का निर्माण कराया जा रहा है। इन भवनों के निर्माण में गति लाने के लिए राजकोषीय बचत से भी अन्नपूर्णा भवनों के निर्माण का निर्णय लिया गया है। अब मनरेगा के अतिरिक्त राज्य वित्त आयोग, सांसद निधि, विधायक निधि, पूर्वांचल विकास निधि, बुन्देलखण्ड विकास निधि या अन्य किसी राज्य या केन्द्र सरकार की योजना, जिसमें इनका निर्माण अनुमन्य है, अन्नपूर्णा भवनों का निर्माण कराया जा सकेगा। जहां इन योजनाओं के माध्यम से धनराशि की उपलब्धता नहीं हो सकेगी, वहां खाद्य एवं रसद विभाग द्वारा बचत से धनराशि की व्यवस्था की जाएगी। इस प्रकार प्रति जनपद 75-100 अन्नपूर्णा भवनों का निर्माण प्रति वर्ष कराया जा सकेगा। इसके अतिरिक्त इस भवनों के अनुरक्षण इत्यादि की व्यवस्था का भी प्राविधान किया गया है। 5 मेगा श्रेणी की इकाइयों को प्रोत्साहन धनराशि की स्वीकृतियोगी कैबिनेट ने उत्तर प्रदेश औद्योपगिक निवेश एवं रोजगार प्रोत्साहन नीति-2017' के तहत मेगा श्रेणी के औद्योगिक उपक्रमों के द्वारा 5 इकाईयों को प्रोत्साहन धनराशि दिए जाने का निर्णय लिया गया। इसके तहत, एसएलएमजी बेवरेज प्रा0 लि0, बाराबंकी को अनुमन्य वितीय प्रोत्साहन / सुविधाओं की प्रथम किस्त के रूप में 38,73,01,888 रुपये, सिल्वरटन पल्प एंड पेपर्स प्रा. लि. मुजफ्फरनगर को 1,88,99,905 रुपये, एसीसी लि., अमेठी को 17,28,07,828 वंडर सीमेन्ट लि. अलीगढ़ को 38,32,30,659 और मून वेबरेजेज हापुड़ को अनुमन्य वित्तीय प्रोत्साहन/सुविधाओं की प्रथम किस्त की धनराशि 8,68,31,672 रुपये की वित्तीय स्वीकृति दी गई।

विपक्ष के 16...

हमले तथा भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष के दौरान, सभी विपक्षी दल हमारे सशस्त्र बलों और भारत सरकार के समर्थन में खड़े थे। उन्होंने कहा, ''जब अमेरिका ने संघर्षविराम की घोषणा की, तो हमने मांग की कि संसद का एक विशेष सत्र बुलाया जाए ताकि सभी दल हमारे सशस्त्र बलों को धन्यवाद दे सकें तथा सरकार बिंदुवार अपनी बात रखे। हुड्डा ने कहा कि पहलगाम आतंकी हमले से लेकर 'ऑपरेशन सिंदूर' और अमेरिका द्वारा संघर्ष विराम का ऐलान किए जाने तक पर संसद में चर्चा होनी चाहिए। उनका कहना था, ''हमें आतंकवाद को कैसे खत्म किया जाए और अपनी आगे की रणनीति पर भी संसद में चर्चा करनी चाहिए। अब जब भारत सरकार दुनिया के सामने अपने विचार रख रही है तो मुझे लगता है कि सरकार को संसद में भी ऐसा ही करना चाहिए। सरकार संसद के प्रति जवाबदेह है और संसद जनता के प्रति जवाबदेह है।

पीठासीन अधिकारियों...

है। आयोग के एक अधिकारी ने कहा, अभी तक पीठासीन अधिकारी अपने-अपने मतदान केंद्र पर हुए मतदान का पूरा विवरण निर्धारित प्रारूप में प्रत्याशियों के एजेंटों को बाकायदा उपलब्ध कराने के बाद इलेक्ट्रानिक वोटिंग मशीनों (ईवीएम) जमा कराने की जगह पर मशीन जमा करने के बाद अंतिम आंकड़े अपडेट करते हैं। अब उन्हें मतदान समाप्त होने के तुरंत बाद, मतदान केंद्र छोड़ने से पहले डाटा ईसीआईएनईटी ऐप पर अपडेट करना होगा। आयोग ने एक विज्ञप्ति में कहा कि यह नयी प्रक्रिया बिहार विधान सभा चुनाव के साथ लागू होगी। बिहार में अक्टूबर में चुनाव कराये जाने हैं। आयोग की विज्ञप्ति में कहा गया है, मतदान प्रतिशत के रुझान अक्सर घंटों बाद अपडेट किए जाते थे, जो देर रात या अगले दिन आने वाले भौतिक रिकॉर्ड पर आधारित होते थे, जिससे 4-5 घंटे या उससे अधिक की देरी होती थी, जिससे कुछ लोगों में गलतफहमी पैदा हो जाती थी। इस नयी पहल के तहत, प्रत्येक मतदान केंद्र के पीठासीन अधिकारी (पीआरओ) अब मतदान के दिन हर दो घंटे में नये ईसीआईएनईटी ऐप पर सीधे मतदाता मतदान दर्ज करेंगे, ताकि अनुमानित मतदान रुझानों के अपडेट में समय अंतराल को कम किया जा सके। इसे निर्वाचन क्षेत्र स्तर पर स्वचालित रूप से एकत्रित किया जायेगा। अनुमानित मतदान प्रतिशत रुझान पहले की तरह हर दो घंटे में प्रकाशित होते रहेंगे। आयोग ने कहा है, मतदान के बाद मोबाइल डाटा नेटवर्क कनेक्टिविटी के अधीन अपडेट किए गए मतदान के आंकड़े 'वीटीआर ऐप' पर मतदान का अनुमानित प्रतिशत निर्वाचन क्षेत्रवार उपलब्ध होगा ... यह अपडेटेड वीटीआर ऐप बिहार चुनाव से पहले ईसीआईनेट का अभिन्न अंग बन जायेगा। जहाँ मोबाइल नेटवर्क उपलब्ध नहीं है, वहां प्रविष्टियां ऑफ़लाइन की जा सकती हैं और कनेक्टिविटी बहाल होने के बाद सिंक की जा सकती हैं। चुनाव नियम, 1961 के नियम 49 एस के वैधानिक ढांचे के तहत, पीठासीन अधिकारियों (पीआरओ) को मतदान एजेंटों को दर्ज किये गये वोटों का विवरण देते हुए फॉर्म 17 सी प्रस्तुत करना आवश्यक है। आयोग ने कहा है कि यह व्यवस्था पहले की तरह बनी रहेगी। महाराष्ट्र विधान सभा के पिछले चुनाव में विपक्ष ने आखिरी घंटे के आंकड़ों को लेकर आयोग से शिकायत की थी। आयोग ने उसका विस्तृत जवाब देते हुए उसे खारिज कर दिया था। पहले, मतदाता मतदान डेटा सेक्टर अधिकारियों द्वारा मैन्युअल रूप से एकत्र किया जाता था और फोन कॉल, एसएमएस या मैसेजिंग ऐप के माध्यम से रिटर्निंग ऑफिसर (आरओ) को रिले किया जाता था। यह जानकारी हर दो घंटे में एकत्र की जाती थी और वोटर टर्नआउट (वीटीआर) ऐप पर अपलोड की जाती थी। आयोग ने पिछले महीने के शुरू में कहा था कि ईसीआई शीघ्र ही हितधारकों के लिए एकल-बिंदु ऐप लॉन्च करेगा। इसमें उन्नत यूआई/यूएक्स के साथ आयोग द्वारा परिचालित मौजूदा 40 से अधिक सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) ऐप्स को इसमें शामिल किया जाएगा

आर्मी अफसरों की...

अन्य गैर-संचालन संबंधी जानकारी सहित व्यक्तिगत विवरणों के प्रकाशन या प्रसारण से बचें जो सार्वजनिक हित में नहीं हैं। रक्षा मंत्रालय ने सलाह दी कि मीडियाकर्मी सशस्त्र बलों की गतिविधियों और नेतृत्व के पेशेवर और परिचालन पहलुओं पर मीडिया कवरेज को केंद्रित करें, और निजी जीवन पर अटकलें लगाने वाली या दखल देने वाली रिपोर्टिंग से बचें। गोपनीयता और परिचालन गोपनीयता की सीमाओं का सम्मान करें, विशेष रूप से सक्रिय सैन्य अभियान या बढ़ी हुई राष्ट्रीय सुरक्षा की अवधि के दौरान। बयान में कहा गया कि रक्षा मंत्रालय मीडिया के साथ पारदर्शी और रचनात्मक जुड़ाव के लिए अपनी प्रतिबद्धता दोहराता है। साथ ही, यह सभी मीडिया हितधारकों से अपील करता है कि वे जिम्मेदार पत्रकारिता के मानकों को बनाए रखें, राष्ट्र की सेवा करने वालों और उनके परिवारों की व्यक्तिगत जगह और गरिमा का सम्मान करें।

11 साल में भारत...

भ्रष्टाचार से मुक्त कर प्रगति की राह पर लाकर खड़ा कर दिया है। भाजपा के राष्ट्रीय महामंत्री दुष्यंत गौतम ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में देश बदल रहा है। आंतरिक सुरक्षा से लेकर राष्ट्रीय सुरक्षा तक में भारत ने दुनिया के लिए उदाहरण बना है। उन्होंने कहा कि सभी कार्यकर्ताओं को मोदी सरकार की उपलब्धियों को लेकर समाज के हर वर्ग के साथ जुड़ने की जरूरत है। पहलगाम की घटना के बाद भारत ने कैसे पाकिस्तान पेषित आतंकवाद को सबक सिखाया उससे हर व्यक्ति को जानने की जरूरत है। प्रदेश महामंत्री संगठन धर्मपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में 11 साल में भारत ने ऐतिहासिक उपल्धियां हासिल किया है। आज हम दुनिया की चौथी बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुके हैं। उपमुख्यमंत्री केशव मौर्य ने कहा कि सभी कार्यकर्ताओं को मोदी सरकार की शुरू की गई गरीब कल्याण की योजनाओं और प्रगति के बारे में बताना जरूरी है। उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने मोदी सरकार के 11 साल की हर उपलब्धियों का जिक्र किया। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कि प्रधानमंत्री मोदी की वजह से आज भारत की चर्चा पूरी दुनिया में हो रही है।

धामी सरकार ने हरिद्वार में 54 करोड़ के जमीन घोटाले में बड़ी कार्रवाई

10 अधिकारी निलंबित विजिलेंस करेगी जांच

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। प्रदेश की धामी सरकार ने हरिद्वार में 54 करोड़ के जमीन घोटाले में बड़ी कार्रवाई की है। मामले में मंगलवार को दो आईएएस, एक पीसीएस अफसर समेत सात अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया है। इस मामले में तीन अधिकारी पूर्व में निलंबित हो चुके हैं, जबकि दो की पूर्व में सेवा समाप्त की जा चुकी है। इस तरह इस प्रकरण में अब तक 10 अधिकारियों को निलंबित कर दिया गया है। इसी के साथ विजिलेंस को जमीन घोटाले की जांच सौंप दी गई है। हरिद्वार नगर निगम द्वारा ग्राम सराय में कूड़े के ढेर के पास स्थित अनुपयुक्त 2.3070 हेक्टेयर भूमि

को करोड़ों रुपये में खरीदने पर सवाल उठने के बाद मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने इस प्रकरण की जांच के आदेश दिए थे। इसके बाद सचिव रणवीर सिंह चौहान ने मामले की प्रारंभिक जांच कर, रिपोर्ट 29 मई को ही शासन को सौंपी थी। इसी जांच रिपोर्ट के आधार पर मुख्यमंत्री ने कार्मिक विभाग को दोषी अधिकारियों के खिलाफ

पूर्व में इन्हें किया निलंबित

रविंद्र कुमार दयाल- प्रभारी सहायक नगर आयुक्त (सेवा समाप्त) आनंद सिंह मिश्रवाण- प्रभारी अधिशासी अभियंता (निलंबित) लक्ष्मी कांत भट्ट्- कर एवं राजस्व अधीक्षक (निलंबित) दिनेश चंद्र कांडपाल- अवर अभियंता (निलंबित) वेदपाल- सम्पत्ति लिपिक (सेवा विस्तार समाप्त)

कार्रवाई के निर्देश दिए थे। कार्मिक एवं सतर्कता विभाग ने मंगलवार को सात अधिकारियों को निलंबित करने के आदेश जारी कर दिए। इस मामले में तीन अधिकारी पूर्व में निलंबित किए जा चुके हैं, जबकि दो की पूर्व में सेवा समाप्त की जा चुकी है। इस तरह इस प्रकरण में अब तक 10 अधिकारी निलंबित किए जा चुके हैं। मुख्यमंत्री के निर्देश के बाद कार्मिक विभाग ने जिन सात अधिकारियों को निलंबित किया है कि उनमें हरिद्वार नगर निगम के तत्कालीन प्रशासक और मौजूदा डीएम कर्मेंद्र सिंह, तत्कालीन नगर आयुक्त वरुण चौधरी, हरिद्वार के तत्कालीन एसडीएम अजयवीर सिंह, वरिष्ठ वित्त अधिकारी निकिता बिष्ट, वरिष्ठ वैयक्तिक सहायक विक्की, रजिस्ट्रार कानूनगो राजेश कुमार, हरिद्वार तहसील के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी कमलदास शामिल हैं। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने जारी बयान में कहा कि हमारी सरकार ने पहले ही दिन से स्पष्ट किया है कि लोकसेवा में 'पद' नहीं बल्कि 'कर्तव्य' और 'जवाबदेही' महत्वपूर्ण है।

बिहार के सीवान में आंधी-तूफान से तबाही सात लोगों की मौत, अनुग्रह राशि की घोषणा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पटना। बिहार में आंधी-तूफान और मूसलाधार बारिश से चौतरफा तबाही हुई है। सोमवार देरशाम राज्य के सीवान जिले में इस प्राकृति आपदा में सात लोगों की जान चली गई। मृतकों में दो महिलाएं और एक बुजुर्ग शामिल हैं। आंधी-तूफान के बीच हुई तेज बरसात के बीच बड़ी संख्या में पेड़ गिर गए हैं। घरों की दीवारें और छतें भरभरा कर ढह गईं। सीवान के बरहड़िया थाना के बहादुर गांव में 30 वर्षीय मजदूर शाहिद अख्तर की मौत तेज आंधी-तूफान में छत पर काम करते हुए संतुलन बिगड़ने से गिरकर हो गई। बसंतपुर थाना क्षेत्र के बसांव गांव के 55 वर्षीय नंदकिशोर सिंह पर एक नीम का पेड़ गिर गया। उनकी मौके पर मौत हो गई। बसंतपुर थाना क्षेत्र विशुनपुरा गांव में 40 वर्षीय अलीमुन बेगम पर महुआ का पेड़ गिर गया। वह मौके पर जान गंवा बैठे। लकड़ी नवीगंज थाना क्षेत्र बाजितपुर गांव के 35 वर्षीय व्यवसायी यूसुफ अली के कार पर बरगद का पेड़ गिर गया। इस हादसे में उनकी मौत हो गई। लखनौरा गांव में 52 वर्षीय कलपती देवी घर की दीवार गिरने से मलबे में दब गईं और उनकी जान चली गई। माधोपुर गांव में विजय प्रसाद की पत्नी चंद्रवंती देवी आंगन में थीं। तभी आम का पेड़ उन पर गिर गया। उन्हें अस्पताल ले जाया गया, जहां उनकी मौत हो गई। जीबी नगर थाना क्षेत्र के सतवार गांव में 75 वर्षीय श्रीराम प्रसाद की झोपड़ी ढह गई।

संक्षिप्त समाचार

सरकार ने स्पेशल ऑक्जिलरी पुलिस के 1717 जवानों को दिया सेवा विस्तार

पटना। बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि प्रदेश की आंतरिक सुरक्षा और विधि-व्यवस्था को सुदृढ बनाए रखने के लिए स्पेशल ऑक्जिलरी पुलिस (सैप) में कार्यरत जवानों की सेवा अवधि बढ़ाने का निर्णय लिया गया है। बिहार पुलिस के अंतर्गत कार्यरत 1717 सैप कर्मियों में-1698 जवान, 10 जेसीओ और 9 रसोइया शामिल हैं । उन्होंने मंगलवार को यहां जानकारी देते हुए कहा कि सैप जवानों को सेवा विस्तार मिलने से बिहार में उग्रवाद, हिंसा और कानून-व्यवस्था से जुड़ी चुनौतियों का प्रभावी समाधान संभव हो सकेगा। सैप जवानों-कर्मियों की अनुबंध अवधि वित्तीय वर्ष 2025-26 तक बढ़ा दी गई है । राज्य सरकार ने इसके लिए कुल 43.66 करोड (तैंतालीस करोड़ छियासठ लाख इक्यावन हजार छह सौ) रुपये की वित्तीय स्वीकृति दी है। उन्होंने बताया कि बिहार में पहली एनडीए सरकार बनने पर कानून-व्यवस्था की स्थिति में तेजी सुधार करने के लिए सैप का गठन 2006 में किया गया था। इसमें भारतीय सेना से सेवानिवृत्त जवानों को अनुबंध पर बहाल किया गया था। राज्य सरकार समय-समय पर सैप की संख्या और अनुबंध अवधि में विस्तार करती रही है। वर्तमान स्वीकृति भी उसी कड़ी में है। उपमुख्यमंत्री चौधरी ने कहा कि सैप व्यवस्था से जहाँ बिहार के पुलिस बल को सहयोगी शक्ति मिली, वहीं सेना से सेवानिवृत्त अनुभवी और प्रशिक्षित जवानों को अपनी सेवाएँ जारी रखने का अवसर मिला।

भारत-चीन सीमा से सटे उत्तरकाशी के जादुंग गांव में रा.स्व.संघ ने लगायी शाखा

उत्तरकाशी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ(रा.स्व.संघ),उत्तरकाशी ने भारत-चीन सीमा से सटे जिले के प्रथम गांव जादुंग में मंगलवार को संघ की शाखा लगायी। इसका उद्देश्य केंद्र सरकार की योजना के अनुरूप सीमा से सटे राज्य के गांवों को पुनः बसाने के तहत सामाजिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ाना है।इसमें संघ के 8 स्वयंसेवकों उपस्थित रहे। स्वयंसेवकों ने जादुंग गांव में संघ की शाखा लगाकर प्रार्थना की। इसमें स्वयंसेवक अर्जुन गोसाई (प्रधानाचार्य), बद्री सिंह चौहान (नगर बौद्धिक प्रमुख), राजवीर सिंह राणा (आचार्य सरस्वती विद्या मंदिर लक्षेश्वर), बलवीर सिंह नेगी (छात्रावास प्रमुख), मनवीर सिंह, डॉ. जगदीश सिंह चौहान (जिला विद्यार्थी प्रमुख) और जिले के जिला प्रचार प्रमुख अनूप भंडारी उपस्थित रहे। गौरतलब है कि उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिला मुख्यालय से लगभग 132 किलोमीटर की दूर स्थित जादुंग गांव को वर्ष 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान खाली कराया गया था। अब बीते वर्षों से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने चीन सीमा से सटे उत्तरकाशी जिले के जादुंग गांव को फिर से बसाने कवायद तेज की है। राज्य सरकार ने इसका जिम्मा जीएमवीएन (गढ़वाल मंडल विकास निगम) को दिया है। यहां पर प्रथम चरण में 6 होमस्टे बनाए जा रहे हैं। इस गांव में पर्यटन और सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए 10 करोड़ रुपये की लागत से मेला स्थल का निर्माण प्रस्तावित है। इस परियोजना से जाड़ समुदाय को अपने पारंपरिक रीति-रिवाज और सांस्कृतिक उत्सवों के लिए एक स्थायी मंच मिलेगा।

उत्तराखंड में सुबह से बारिश का सिलसिला जारी, पर्वतीय जिलों में ठंडक बढ़ी

देहरादून। उत्तराखंड में सुबह से बारिश का सिलसिला जारी है। प्रदेश की राजधानी देहरादून में दोपहर बाद बारिश और तेज हवाओं से जन-जीवन पर असर नजर आया। पर्वतीय क्षेत्रों में बारिश से ठंडक बढ़ गई है। मौसम विभाग ने चमोली, देहरादून, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, चंपावत हरिद्वार व उधमसिंहनगर में हल्की से मध्यम बारिश की संभावना जताई है जबकि देहरादनू, पौड़ी, टिहरी, रुद्रप्रयाग व बागेश्वर जनपदों में कहीं-कहीं भारी से भारी बारिश संभावना व्यक्त की है। राज्य के कई जिलों में 50 से 60 किलोमीटर प्रतिघंटा की तेजी से हवाओं के चलने की संभावना भी जताई गई है। मौसम विभाग के निदेशक विक्रम सिंह ने लोगों को सर्तक रहने की सलाह दी है।

आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को नियुक्ति पत्र वितरित

देहरादून। महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास मंत्री रेखा आर्या ने मंगलवार को वीर माधो सिंह भंडारी तकनीकी विश्वविद्यालय स्थित सभागार में देहरादून जनपद में चयनित की गई 212 आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को नियुक्ति पत्र वितरित किए। जल्द ही अन्य जनपदों में भी कार्यक्रम आयोजित करके नियुक्ति पत्र वितरित किए जाएंगे। इस अवसर पर मंत्री रेखा आर्या ने कहा कि आंगनबाड़ी कार्यकर्ता का पद सिर्फ रोजगार का माध्यम नहीं बल्कि यह सेवा का एक बड़ा अवसर है। भाजपा सरकार ने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के मानदेय में सर्वाधिक बढ़ोतरी की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश में पहली बार आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं की भर्ती ऑनलाइन मोड में आयोजित की गई और इस पूरी प्रक्रिया को सिर्फ तीन महीने के समय में पूरा कर लिया गया। मंत्री ने कहा कि अब विभाग में आंगनबाड़ी कार्यकर्ता व सहायिका के रूप में उच्च शिक्षित लड़कियां और महिलाएं आ रही हैं, जिससे निश्चित रूप से विभाग की कार्य क्षमता और कुशलता में बढ़ोतरी होगी। महिला सशक्तिकरण एवं बाल विकास विभाग ने हाल ही में पूरे प्रदेश में 6330 आंगनबाड़ी सहायिकाओं और 722 आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं यानी कुल मिलाकर 7052 पदों पर भर्ती की है। इनमें से सबसे पहले देहरादून जनपद में 17 कार्यकर्ताओं और 195 सहायिकाओं को नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए। अन्य 12 जनपदों में भी नियुक्ति पत्र वितरित के कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इस अवसर पर उपनिदेशक मोहित चौधरी, डीपीओ जितेंद्र कुमार, डीपीओ एसके त्रिपाठी, सीडीपीओ नीतू फुलेरा आदि उपस्थित रहे।

शांतिकुंज में तीन दिवसीय गायत्री जयंती महापर्व का शुभारंभ

हरिद्वार। गायत्री तीर्थ शांतिकुंज में तीन दिवसीय गायत्री जयंती महापर्व का आज उल्लासपूर्ण वातावरण में शुभारंभ हुआ। पर्व की शुरुआत विशाल शोभायात्रा से हुई, जिसे शांतिकुंज के वरिष्ठ प्रतिनिधि डॉ चिन्मय पण्ड्या ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। यात्रा में शांतिकुंज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता, विभिन्न राज्यों से आये प्रशिक्षणार्थी, गायत्री परिवार के परिजनों के साथ ही बड़ी संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए। शोभायात्रा में घर-घर अलख जगाएंगे का गगनभेदी उद्घोष किया गया। ज्योतिकलश यात्रा की सुंदर झांकी, प्रज्ञा बैंड की मधुर धुनों और शांतिकुंज के बालकों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक झलकियों ने जनमानस को आकर्षित किया। गायत्री परिवार प्रमुखद्वय डॉ. प्रणव पण्ड्या एवं शैलदीदी ने अपने संदेश में कहा कि यह पर्व आत्मिक चेतना के जागरण और राष्ट्र के नव निर्माण का आधार बनेगा।

पूर्वोत्तर में पहला क्षेत्रीय परिसर स्थापित करेगा आईआईसीए कॉर्पोरेट प्रशासन और विकास को आगे बढ़ाएगा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नई दिल्ली। समावेशी राष्ट्रीय विकास और क्षेत्रीय क्षमता निर्माण की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाते हुए पूर्वोत्तर में कॉर्पोरेट प्रशासन उत्कृष्टता और सतत विकास को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारतीय कॉर्पोरेट मामले संस्थान (आईआईसीए) ने क्षेत्र में अपना पहला क्षेत्रीय परिसर स्थापित करने की घोषणा की है। कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय ने मंगलवार को जारी बयान में बताया कि कॉर्पोरेट प्रबंधन और विकास को बढ़ावा देते हुए आईआईसीए पूर्वोत्तर में पहला क्षेत्रीय परिसर खोलेगा। आईआईसीए शिलांग परिसर प्रमुख क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण, अनुसंधान और नीति सलाह के लिए क्षेत्रीय केंद्र के रूप में काम करेगा। इसमें प्रधानमंत्री पूर्वोत्तर विकास पहल (पीएम-डेवआईएनई) के तहत निवेश होगा। मंत्रालय के मुताबिक प्रधानमंत्री की पूर्वोत्तर विकास पहल (पीएम-डेविने) के तहत 100.95 करोड़ रुपये के निवेश से समर्थित, शिलांग परिसर प्रमुख क्षेत्रों में विशेष प्रशिक्षण, अनुसंधान और नीति सलाह के लिए एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में काम करेगा। आईआईसीए ने अपने पहले क्षेत्रीय परिसर के लिए मेघालय के न्यू शिलांग टाउनशिप में पांच एकड़ भूमि का औपचारिक अधिग्रहण किया है। भूमि हस्तांतरण और अधिग्रहण का कार्य मेघालय सरकार की ओर से योजना विभाग के संयुक्त सचिव के. हिनीवता और भारत सरकार की ओर से उप-सचिव शेखर श्रीवास्तव ने किया। कॉरपोरेट कार्य मंत्रालय ने बताया कि भूमि हस्तांतरण समारोह की अध्यक्षता मेघालय सरकार के मुख्य सचिव डोनाल्ड फिलिप्स वाहलांग और कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय की सचिव दीप्ति गौर मुखर्जी ने की। इस अवसर पर आईआईसीए के महानिदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) ज्ञानेश्वर कुमार सिंह, कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय के संयुक्त सचिव इंद्रदीप सिंह धारीवाल, योजना विभाग के आयुक्त और सचिव सीवीडी डिएंगदोह, आईआईसीए के (कर्नल) अमनदीप सिंह पुरी और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद थे।

महेंद्र भट्ट ने कांग्रेस पर जयहिंद सभा के नाम पर राजनीति करने का लगाया आरोप

देहरादून। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के प्रदेश अध्यक्ष और राज्य सभा सांसद महेंद्र भट्ट ने जयहिंद सभा के नाम पर राजनीति सजाने का आरोप लगाते हुए कंग्रेस पार्टी पर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि हमे यात्रा से गुरेज नहीं, लेकिन देशभक्ति के नाम पर ऐसी राजनीति को, देवभूमि की जनता किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं करेगी। प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र भट्ट ने जारी एक बयान में हल्द्वानी में हुई जयहिंद सभा का जिक्र करते हुए कहा कि कंग्रेस वक्ताओं ने वहां पूरे समय अपने भाषणों को सिर्फ और सिर्फ देश की सैन्य रणनीति, कार्रवाई और विदेश नीति को असफल साबित करने पर फोकस किया। देवभूमि के जवान भी ऑपरेशन सिंदूर में देश के लिए खप रहे हैं, लेकिन बेहद अफसोसजनक और शर्मनाक है कि स्थानीय कंग्रेस नेताओं में अपने आलाकमान को खुश करने के लिए बढ़चढ़ कर ऐसे बयान देने की होड़ लगी है।

विश्व साइकिल दिवस पर मतदाता जागरूकता साइकिल रैली का आयोजन

कैनविज टाइमस संवाददाता

पूर्वी चंपारण। विश्व साइकिल दिवस पर मंगलवार को मतदाता जागरूकता अभियान के तहत साइकिल रैली निकाली गई। रैली को समाहरणालय परिसर से जिला पदाधिकारी सौरभ जोरवाल, नगर आयुक्त सौरभ सुमन यादव, डीडीसी और एसडीओ ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया,जो चरखा पार्क तक पहुंची।साइकिल रैली में स्कूली छात्र-छात्राएं और जिला साइक्लिंग क्लब के सदस्यो ने हिस्सा लिया। जो लोगो को वोटिंग और फिटनेस के प्रति जागरूक बनाने वाली तख्तियो के साथ नगर भ्रमण किया। मौके पर जिलाधिकारी ने बताया कि रैली का उद्देश्य आगामी बिहार विधानसभा चुनाव के लिए मतदाताओं को जागरूक करने के साथ ही, स्वास्थ्य के फिटनेस और पर्यावरण के प्रति प्रेम को बढ़ाना था।उन्होने आम जनता खासकर युवाओं को मतदाता सूची में नाम जुड़वाने का भी आह्रान किया।

बिहार में एटीएफ पर वैट 4% करने से एयरप्लेन की संख्या दुगनी हो जाएगी: सम्राट चौधरी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पटना। बिहार के उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि राज्य सरकार ने एक बड़ा फैसला लेते हुए विमान ईंधन-एभिएशन टरबाइन फ्यूल यानी एटीएफ (एटीएफ) पर मूल्य वर्धित कर (वैट) की दर 29 फीसदी से घटाकर 4 फीसदी कर दी है। यह कदम बिहार में हवाई सेवाओं को प्रोत्साहन देने और निवेश के माहौल को बेहतर बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

सम्राट चौधरी ने कहा कि राज्य सरकार का यह निर्णय बिहार को उन अग्रणी राज्यों की श्रेणी में लाएगी जिन्होंने पहले ही एटीएफ पर वैट घटाकर हवाई यातायात को विस्तार देने में सफलता प्राप्त की है।

उन्होंने कहा कि इसके पहले केवल रीजनल कनेक्टिविटी स्कीम (अरसीएस) के तहत एक प्रतिशत और गया एयरपोर्ट के लिए 4 प्रतिशत वैट दर लागू थी। अब यह सुविधा दूसरे सभी हवाई अड्डों को भी मिलेगी। उन्होंने बताया कि बिहार में एटीएफ पर 29 प्रतिशत कर दर उत्तर प्रदेश, झारखंड, दिल्ली, गुजरात, महाराष्ट्र आदि राज्यों की तुलना में ज्यादा थी। इस वजह से वायुयान कंपनियों द्वारा उन्हीं राज्यों में इइंधका क्रय कर लिया जाता था जहां वैट की दर कम है। वाणिज्य कर विभाग के आंकड़ों के अनुसार, वित्तीय वर्ष 2023-24 में एटीएफ से कुल वैट संग्रह 62.28 करोड़ रुपये था, जो विभाग के कुल राजस्व का मात्र 0.16 फीसदी था। वर्ष 2024-25 में यह 71.67 करोड़ रुपये रहा, जो मात्र 0.17 फीसदी के करीब है। उपमुख्यमंत्री चौधरी ने कहा कि यह निर्णय बिहार को निवेश और पर्यटन की दृष्टि से एक नई ऊंचाई तक ले जाएगा। हवाई सेवाओं के विस्तार से जहां राज्य के नागरिकों को यात्रा अनुभव बढ़ेगा वहीं औद्योगिक गतिविधियों को भी प्रोत्साहन मिलेगा और पर्यटन तथा उद्योग के विभिन्न क्षेत्रों में रोजगार के अवसर मिलेंगे।

गंगा घाट पर हुआ हरित योग कार्यक्रम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। 11 वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की श्रृंखला में मंगलवार को खड़खड़ी के श्रीकृष्णहरि धाम घाट में भारत सरकार के आयुष मंत्रालय और हरिद्वार के आयुर्वेदिक एवं यूनानी विभाग की ओर से संयुक्त रूप से हरित योग कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसका उद्देश्य योग के माध्यम से प्रकृति और मानव स्वास्थ्य के बीच संतुलन स्थापित करना रहा। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री कृष्ण कृपा धाम आश्रम के महंत प्रेमानंद शास्त्री मौजूद रहे। कार्यक्रम में प्रतिभागियों ने नियमित योगाभ्यास और स्वच्छता के प्रति संकल्प लिया। हरित योग कार्यक्रम के अंतर्गत घाट परिसर में पौधरोपण स्वच्छता अभियान भी चलाया गया। साथ ही जनपद के विभिन्न विद्यालयों में कला, निबंध एवं भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। कार्यक्रम के दौरान इन प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र और मेडल देकर सम्मानित किया गया। योग सत्र का संचालन योगाचार्य आशु भर्तृवाल (वेलनेस कोच), अशोक गिरी (श्रवण शोध संस्थान) एवं विक्रम शर्मा (स्वदेशी प्रचारक) की ओर से किया गया। इस अवसर पर आयुष मिशन के नोडल अधिकारी डॉ.अवनीश उपाध्याय, कार्यक्रम का संयोजन अमित भट्ट, डॉ.घनेंद्र वशिष्ठ (नोडल अधिकारी, अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2025), डॉ.नवीन दास,डॉ. रेनू सिंह, नवीन चंद्र थपलियाल, प्रकाश उनियाल, सुप्रिया बिष्ट, निशा भट्ट (योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा विशेषज्ञ), प्रतिभा सैनी, शालू, निकुंज, राकेश डंगवाल, रघुवीर सिंह और विनय (बहुउद्देशीय कर्मी) सहित लगभग 100 से अधिक प्रतिभागियों ने योग सत्र में भाग लिया।

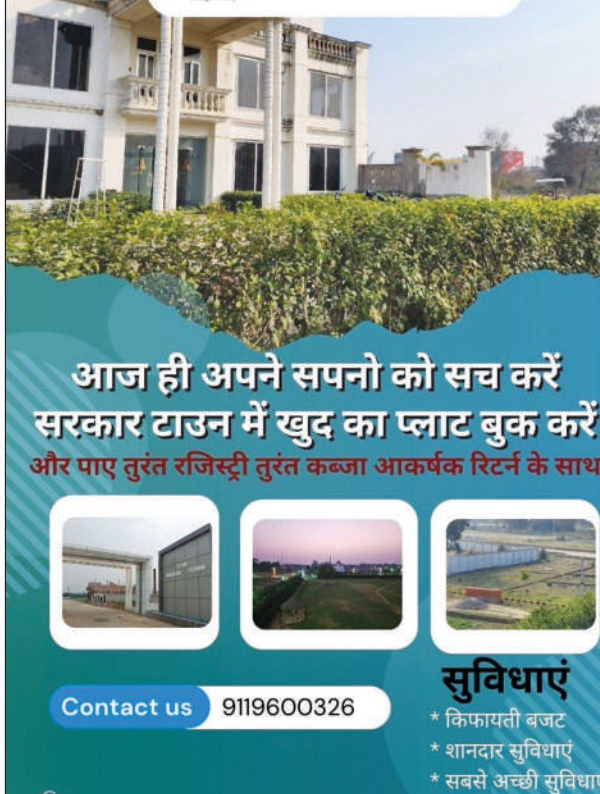

चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक - राकेश कुमार पाण्डेय कार्यकारी सम्पादक* - अरशद सईद खान स्टेट हेड - संदीप मिश्रा

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा सरस्वती प्रिंटर्स वाटर वर्क्स रोड ऐशबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-46, कृष टॉवर, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, पिन-226010 से प्रकाशित। * इस अंक में प्रकाशित सभी समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी।

समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय क्षेत्र के ही अधीन होंगे। फोन नं। 0522-4249333 फैक्स नं.- 4249333 e-mail : info@kanwhizztimes.com RNI NO - UPHIN/2012/42063